

ग्रहमन्त्र

१।८।२४

२।६।१५।२५।३४

११।२८।३२।

४।१०।२०।२३।३१।३३

५।२६

१२।१३।१४।२४।३९

३।५।१५।२६।१७।१८

संकरणा

७।२१।३०

नोट

हमने स्वदेशानुसार दिया है, विद्वान् लोग
साधा विचार करके मंडल वेदी आदि
नुसार बना लेंगे-

निवेद .

पं० दयालुचंद्र शर्मा काष्ठयाल

बैया जिला मुजफ्फरगढ़

बुन्कार प्रसताहैर

भीमदानन्दकन्द प्रमोद श्रीकृष्णचन्द्र जीके चरणकमलों में नमस्कार के अनंतर कोटिशः उनका धन्यवाद किया जाता है कि जिनकी असीम कृपासे मेरासंकल्पित मनोरथ बहुत दिनोंके अनंतर आज पूराहुआ मेराजो मनोरथ था, कि एक ऐसा पुस्तक लिखा जावे जिससे अपनी योग्यताके अनुसार विद्वान्भी कार्यकरासके साधारण भी अतः भाषामें रीति लिखी गई है यद्यपि बहुतसो पद्धतियें छपी हैं तथापि उनमें हमारे देशके अनुसारिणी रीति न होने से उनका साधारण ब्राह्मण नही लेते थे और जहां कहीं पूछते थे तो यही कि हमारे देश की रीतीवाली कोई पद्धति छपनाय तो अच्छा है कि जैसे तैसे करके पुस्तक छपवाद तो अच्छा होगा जिससे लेने वालों का मूल्य थोडा लगे और उपकार बहुत हो विशेषता इस पुस्तक में यह है कि शास्त्रीय पद्धति विधान को नही छोड़ा गया बल्कि उनको सुगम रीति से लिखागया है शेष रहा ग्रह पूजन उसको साधारण लिखा गया है क्योंकि १ पूजन पर श्रद्धा लोगों की नहीं रही दूसरा जो करते हैं तां भी संचेपको पसंद करते हैं इसलिये ग्रह पूजन साधारण लिखा गया है साधारण ब्राह्मण देवताओं से माथेना है कि विद्वान् तो अपनी बुद्धि से कार्य करा देंगे परंतु आप लोगों क बास्ते ही भाषा रीति लिखी गई है आप सावधानी से यजमानों क ग्रहमें सस्कार करावें ताकि यजमान का कन्याण हो और आपका यश हो यदि आप लोगोंने प्रेम दिखाया तो ऐसे स्वदेशानुसारि सर्वकामे कांष्ट की पद्धति प्रकाशित कराऊंगा सब से विशेष सूचना यह है कि इसपुस्तक में वैदिक मंत्रों पर स्वरांक नही लगाए गये और अनुस्वार के वर्गांतर पर होने से वर्गांत बणें नहीं किया गया क्योंकि साधारण पुरुषों को भ्रम हो जाता इस लिये मैं बिद्व जनों से क्षमा माथी हू कि इसचर्चितपर दृष्टि न दते हुए इस पुस्तक को सादर लेकर मेरे प्रयत्न का सफल करेंगे और साथ ही यह मार्थना करता हूँ कि जो भी इस पुस्तकमें भ्रष्टि रह गई होतो उनको सुधार कर सुझे सूचित करेंगे जिससे दूसरे संस्करण में उनका संशोधन किया जायेगा और उनका नाम धन्यवाद सहित प्रकाशित किया जावेगा अपनी तर्फसे तो शुद्धिपत्र भी लिख दिया है फिर भी कहीं यंत्र, वा, लेख की भ्रष्टुष्टि रह गई होतो क्षमा करना अलमनन्य लेखेन प्रीयत्सु आपका शुभचिंतक लेखक

पं० दयालु चंद्रशर्मा काष्ठपाल ज्योतिषी

मुकाम लैया, निष्ठा मुकामर गढ़ पंजाब

अथ विवाह पद्धति सामग्री

गुड़, आटा, चावल, केसर मुवा, सत रंश हंबीर, कुँगु चिमकणा, सावारंग पीठा, नीला रंग पीठा, रंग पीठा वा हलदी, पीठो, सिंदूर, गोरी सरसों, चंदन चिटे दा भूरा, धूपज्वाला, मौली, मुपारियां २५, ५ लाचियां निकायां, पेंसिलना, नरेल, फुल, घृत कपाह, तेल मिठा वा घृत दीपक वास्ते, मांहा, दधि, माखो, डिब्बड़े, दीकाठी, पत्र अथ, पत्र बट, पत्र पिप्पल, पत्र आंबला, पत्र तुलसी, शमीपत्र जंदो, कुशा, ब्रह्म, मौ, तिल, २ कलश २ बड़े १ छोटा, पूरणे पात्र ६ वा ४ वा २ वा १, वस्त्र पूर्णपात्रां दे, मलमल १२ हाथ, च्छाये द्विपाई पीली १, अन्न सत्ताना, गोहा, २ चौकियां, चौकी भद्रां वास्ते, सूहा, काने वा दांगां ८, रेत नदो दी, दीपक, राम कटोरियां १०, शमी काष्ठ, अंर काष्ठ, छजली कागज वा रुसली ही, सुदा, फुलियां, चावलें चान्प्यां, शंख, सीइणी दा धागा, चावल पूर्ण पात्रा वास्ते, मेवा, खट, टकै मेल २ पै गुथली, सुवर्ण शलाका १। मा., कटोरे कुटदे ५ वा ४ वा २, हल, पंजाली, ज्वार, बोशा ४ सेर, पूजा और नांदी मुख वास्ते, गंगा जल, सीन्पादा गोडा, (माचिस),

वस्तु चुंग वास्ते

गुड़, आटा, चावल, फुल, हलदी दा गंदा, गुड़, मौली, गोरी सरों, पोन्पां, छले लोहं दे ६, दक्षिणा, दाणे पूजदे, स्वकुला नुसार, रतीजु कार,

कूली अट्टा

याली पूजा वाली, गोहा, पोन्पां, दीपक ४ मुख, रती लुकार, रसा, दक्षिणा ॥ नवगृही ॥ याली पूजनकी, फुल, दीपक, धूप, दक्षिणा— ॥ पही नवग्रही नांदीमुख के स्थान में हैं ॥ देनां धामणी की वस्तु अपने २ कुला नुसार जाननी ॥ तेल नंदी ॥ पूजा की वाली लसी १ गुड़ फुल तीर्प्या ७, वस्त्र माता दे वरदे समतां वाले भादेमिही दे कुंभारदे तेल भुंआला

जन्मदोक वेले तथा अंदिरदे शकुनांदी सामग्री

लौंग, लाचर्या, सेजदामेवा, १। शीशा, शाखदा, कजल, मुसाग, एलसी, लाख, कनारी, कंधी, गाहणे, सगनादे, तलबन्ने, (लूण, तिल) त्रिपट, कपटे, सगनादे, वरकन्यादे, -



सामित्री द्वितीय विवाहदी

कुनाली, छुणी, १०८दियाकचा, १०८वटी, तेलमिठा, ॥ = विबिल, हुन्नीवि वचढावे, ॥ = चावललुहादेविचउवाले, खंड, खोर, पहाजडीचांदीदी, नेवर, त्रिमतांवा, चागामौलीदा, कही, शृंगारदीपद्धी, उगांइणे, बालिपां, कंऊण, नय, अणवट, मुद्रो, जले, कनारी, मुसाण, एलती, कंधो, छुरमेदाणी, छुरमव, शीशा, दरली, माघदी, कज्जल ।

अथ गज दंत (चूडा) संकल्पः

ओमद्येत्यादि० अमुकगोत्राममुकनाम्नी मिमां कन्या मलंकर्तुं कामःकुलाचार रीतिज्ञातिवर्णलाक्षितानिइमानिगजदंत विनिर्मितवलयानिबिश्वकर्मदैवतानि अमुकनाम्न्यै कन्यायै श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतयेदातुमहमुत्सृजे

दक्षिणा

ओमद्यकृतैतद्गजदंत विनिर्मितवलयदान प्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यं श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतयेअमुकनाम्न्यैकन्यायै दातुमहमुत्सृजे कृतैतत्कर्मणा श्रीलक्ष्मीनारायणयोः प्रीतिरस्तु

हर वधू के वस्त्रों की प्रतिष्ठा कर के सनकोवस्त्र पहिनाकर दोनों के सजे पलों में पुष्प अन्न फल दक्षिणा रख कर प्रतिष्ठा करावे पलो पत्नी बांधे देखो पृष्ठ ३७ पर संकल्प है ।

चौकियों के नीचे दक्षिणा धारण करे

अथासन प्रतिष्ठा

ओमद्येत्यादि० अमुकशर्मणो विवाहादौ चरवध्वोरा सनप्रतिष्ठा शुभाभवतु ।

वर उपानत (जोडा) उतारे ॥ मंत्र ॥

ओं अग्नौहवो देवाघृतकुंभ प्रदेशायां चक्रुस्ततोवराहः
संवभ्रुवतस्मा दराहोगावःसंजानते तत्पशुनामेवैतद्रिशे प्रति-
ष्ठति तस्मादराह्या उपानहा उपमुंचते ।

वर वधू कुलगुरु का स्मरण करके दक्षिण पाद क्रम से चौकी पर बैठे ।

यदि विवाह से पूर्व नांदीमुखश्राद्ध न किया हो तो गणेशपूजन के
अनंतर पश्चात् दक्षिणा संपुक्त १२ वा ४ भोजन संकल्प करे—

ब्राह्मण भोजन

३ वा १ ब्राह्मण भोजन वर पिता संकल्प करे

ओमद्येत्यादि० अमुकशर्मणो विवाह कर्मणि विवाहाद्यं
गत्वेनकर्तव्यनांदीमुखाभ्युदयिकश्राद्धे अमुकगोत्राणां मातृपि-
तामही प्रपितामहीनाम मुकदेवीनां अमुकगोत्राणां पितृपिता-
मह प्रपितामहानाममुकशर्मणां अमुकगोत्राणां सप्तलीक
मानामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानाम मुकशर्मणां आभ्युद-
यिकश्राद्ध संबंधिनो विश्वेदेवा एतत्पक्वान्नंसदक्षिणंवेनमः

पुनः ९ वा ३ ब्राह्मण भोजन संकल्प करे

ओमद्येत्यादि० अमुकशर्मणो विवाह कर्मणि विवा-
हाद्यंगत्वेनकर्तव्यनांदीमुखाभ्युदयिकश्राद्धे मातृपितामही प्रपि-
तामहीनाम मुकदेवीनां तथा च पितृपितामह प्रपितामहानां
अमुकशर्मणां तथाच सप्तलीक मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमा-
तामहानाम मुकशर्मणां प्रीत्यर्थं मिदंपक्वान्नं सदक्षिणं यथा
संभवं वः स्वधा—इति—

श्री गणेशायनमः

अथ विवाह पद्धतिः

घृत वा तिल तेल से रचा दीपक जगावे पुष्पाक्षत
दक्षिणा पलोंमें रखें स्वकुलगुरु का ध्यान करें ॥ पढ़ें ॥

ओं चिन्तासन्तानहंतारो यत्पादांबुजरेणवः॥
स्वीयानांतान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥१॥
यदनुग्रहतोजन्तुः सर्वदुःखातिगोभवेत् ॥ तमहं-
सर्वदावन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम् ॥२॥ यदुक्तं तात-
चरणैः श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ तत एवास्ति मच्चित्त-
मैहिके पारलौकिके ॥३॥ मम चित्तस्य विश्वासः श्री-
गोपीजनवल्लभे ॥ यदा तदा कृतार्थो हं शोचनीयो न-
कर्हि चित् ॥ ४ ॥ श्रीलाल जी को जगज्जीवो भक्ति-
मार्गप्रदर्शकः ॥ जीवोद्धाराय लोकेऽस्मिन्नाविरासी-
त्स्वयं हरिः ॥५॥ श्री लालकृपाल जगतविषे भूत
की सदा सहाय कष्ट पडे सावधान जो सुमरे तत्
क्षण आय ॥६॥ देश विदेश जल थल विषे जो नर
हितचित्त ध्याय ॥ मथुरा पति गुसाई श्री लाल
जी मनवांच्छित फल पाय ॥७॥ सेवकतारे सिंधु
में लीने राख जहाज ॥ दूल्ह श्री गोपीनाथ जी

करो अर्चित के काज ॥ केवल अपने दास की
तऊं महाराजको लाज ॥८॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां
कुतस्तेषां पराजयः ॥ येषामिंदी वरश्यामो हृदयस्थो
जनार्दनः ॥९॥ मंगलं भगवान् विष्णुर्मंगलं गरुड-
ध्वजः ॥ मंगलं पुंडरीकाक्षो मंगलाय तनो हरिः ॥१०॥

ब्राह्मणों का पूजन करके प्रार्थना करे

ओं ब्राह्मणाः संतु मेशस्ताः पापात्पांतु समा-
हिताः ॥ देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम्
॥ १ ॥ जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः ॥
तुष्टास्तृप्तिं प्रयच्छन्ति पितरस्त्रिदिवेश्वराः ॥ २ ॥
येषां देहे स्थिता देवाः पावयन्ति जगत्त्रयम् ॥ तेषां
रक्षंतु सततं विवाहेऽस्मिन् व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥
समस्तसंपत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूम्र-
केतवः ॥ अपार संसार समुद्र सेतवः पुनंतु मां
ब्राह्मण पादपांसवः ॥४॥ आपद्घनध्वांत सहस्र-
भानवः समीहितार्थार्पण कामधेनवः ॥ समस्त-
तीर्थांबु पवित्रमूर्तयोरक्षंतु मां ब्राह्मणपादपांसवः
॥ ५ ॥ विप्रौघदर्शनात्क्षिप्रं क्षीयं तेषां पराशयः ॥ वंद-
नान्मंगलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम् ॥६॥ आधि-
व्याधिहरन्नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम् ॥ श्रीपुष्टि-
कीर्तिदं वंदे विप्र श्री पादपंकजम् ॥७॥

अथ संपूजिता ब्राह्मणाः

गौरसर्पपं सर्वतो विकीर्य अक्षतानादयः

स्वस्ति वाचनं मधुर स्वरेण कुर्युः ॥

अथ स्वस्ति वाचनम्

वर और कन्या का पिता वर पिता और ब्राह्मण अक्षत
(चावल) हाथ में लें ब्राह्मण स्वस्ति वाचन करें

हरिः ओं स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति
नः पूषा विश्वेवेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेभिः
स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥ ओं पयः पृथिव्यां
पयउषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षेपयोधाः ॥ पय-
स्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥२॥ ओं विष्णोर
राटमसि विष्णोः श्रप्त्रस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥३॥ ओं
अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता
वसवोदेवता रुद्रादेवताऽऽदित्यादेवता मरुतो-
देवता विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता
वरुणोदेवता ॥४॥ ओं द्यौः शान्ति रन्तरिक्षं च
शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः
शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वं च शान्तिः शान्ति रेवशान्तिः
सामाशान्ति रेधिसुशान्तिर्भवतु ॥५॥ ओं विश्वा-

निदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रंतन्न-
 आसुव ॥ ६ ॥ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय
 प्रभरामहेमतीः यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं
 पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ ७ ॥ एतन्ते देव
 सवितुर्यज्ञंप्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे ॥ तेनयज्ञमवतेन
 यज्ञपतितेनमामव ॥ ८ ॥ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य
 वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वारिष्टं यज्ञ ७ समिमं-
 दधातु विश्वेदेवास इह मादयंतामों प्रतिष्ठ
 एषैवप्रतिष्ठानामयज्ञो यत्रैतेनयज्ञेन यजन्तेसर्वमेव
 प्रतिष्ठितंभवति ॥ ९ ॥

कन्या पिता सङ्कल्पङ्कर्यात्

कन्या का पिता गन्धाक्षत पुष्प जल लेकर प्रतिज्ञा
 सङ्कल्प करे ।

ओं तत्सदुब्रह्मणोन्निहिद्वितीयपराङ्गे श्री श्वेत-
 वाराहकल्पे जम्बुद्वीपे भारतखण्डे आर्य्यावर्ते
 कदेशान्तरगत कुमारिका नाम क्षेत्रे कलियुगे
 कलियुग प्रथमचरणे*ऽमुकसंवत्सरे, ऽमुकमासे,
 ऽमुकपक्षे, ऽमुकतिथौ, ऽमुकवासेरे, यथायोग-
 करण मुहूर्ते प्रवर्तमानेऽद्यतनदिने श्रुतिस्मृति-
 पुराणोक्तफलं प्राप्स्यै धर्मार्थ काममोक्ष वर्गचतुष्ट-

मर्त्य अमुक के स्थान पर वर्तमान संवत् मास आदि का नाम केना ।

यसिध्यर्थं यथाचित्तर्हर्षं कन्यादानं सांगता
सिध्यर्थे च यथासंभवं श्रीगणेशादि पूजनं अमुक
शर्माहं करिष्ये ॥

अथ वर कर्तृकः प्रतिज्ञा सं०

यदि वर स्वयं पूजन करना हो तो संकल्प करे

ओं मद्येत्यादिऽमुकसम्बत्सरेऽमुकपक्षेऽमुक-
तिथौऽमुकवासरेऽमुकगोत्रस्याऽमुकशर्मणो मम
विवाह कालीनलग्नतो निष्टस्थानस्थित सूर्यादि
ग्रह दोषजन्य जनितजनिष्यमाणात्मक दोषत्रय-
भिरास पूर्वक स्वकीय सुख सन्तान धनधान्या-
द्यमिवृद्धि हेतवे श्रीगणेशादीनां यथा संभवपूजन
ममुकगोत्रोऽमुकशर्माहं करिष्ये ॥

वर पितृकर्तृक प्रतिज्ञा सं०

यदि वर के पिताने पूजन करना हो तो पिता संकल्प
करे यदि वर का पिता न हो तो ज्येष्ठ भ्राता चाचा आदि
अपना सम्बन्धी पूजन करे

ओं अद्येत्यादि० अमुकशर्मणो मत् पुत्रस्य
विवाह विधौ निखिलविघ्न दोषनिरासपूर्वक सुख
सन्तान धनधान्याद्यमिवृद्धि हेतुक श्रीगणेशादि
पूजनममुकगोत्रोऽमुकप्रवरोऽमुकशर्माहं करिष्ये

अथ श्रीगणपति पूजनम्

पूजक चावल हाथ में लेकर श्रीगणेश का ध्यान करे ।

विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेव नमस्कृतम् ॥

अविघ्नं सर्वकार्येषु विनायकमाह्वयाम्यहम् ॥ १ ॥

अथातःसंप्रवक्ष्यामि गणेशयागमुत्तमम् ॥ आर्द्रो-

गणपतिःपूज्यः सर्वकामफलप्रदः ॥२॥ येन पूजित

मात्रेण सर्वविघ्नः प्रणश्यति ॥ एक दंतोत्कटोदेवो

गजवक्त्रस्त्रि लोचनः ॥३॥ नागयज्ञोपवीत स्तुतस्मै

गणपतयेनमः ॥ प्रणम्याशिरसा देवंगौरीपुत्रं विना-

यकम् ॥४॥ भक्त्याच संस्तुवेन्नित्यमात्म कामा-

र्थसिद्धये ॥ ओं गणानांत्वा गणपतिं हवामहे ।

प्रियाणांत्वा प्रियपतिं हवामहे । निधीनांत्वा

निधिपतिं हवामहे वसोमम । आहमजानिगर्भ-

धमा त्वमजासिगर्भधम् ॥ ५ ॥ ओं नमो गणेभ्यो

गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्य

श्चवो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमो

नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमः ॥ ६ ॥

गणेश्वरं विघ्न विनाशनं च लम्बोदरं मोदकवल्लभं च

॥ सुरासुरैर्वदितपूजितं च गणेश्वरं शरणमहं प्रप-

द्ये ॥ ७ ॥ ओं सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गज-

कर्णकः ॥ लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः

॥८॥ धूम्र केतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ॥
 द्वादशैतानिनामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।। ९ ॥
 विद्यारंभे विवाहेच प्रवेशेनिर्गमेतथा ॥ संग्रामे संक-
 टेचैव विघ्नस्तस्यनजायते ॥ १० ॥ श्रीमन्महा-
 गणाधिपतयेनमः भगवन् गणाधिपते इहागच्छ
 इहातिष्ठ यावत् पूजां करोमि तावत् सन्निहि-
 तोभव पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं स्नानं समर्पयामि
 पुनराचनीयं समर्पयामि वस्त्रं (मांगलिकसूत्रं) सम-
 र्पयामि गंध मालेपयामि । पुष्पाणि समर्पयामि ।
 अक्षतान् समर्पयामि । धूप माघ्रापयामि । दीपं
 दर्शयामि । नैवेद्यं निवेदयामि । पुनराचमनीयं
 समर्पयामि । मुखशुद्ध्यर्थं पूगीफलं एलापत्रं सम-
 र्पयामि । पूजासाफल्यार्थं दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।
 नमस्कारं करोमि प्रार्थयामि ॥ *

ओं वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ ।
 अविघ्नं कुरुमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ १ ॥ देहिमे

* सर्वत्र षोडशोपचार पूजाक्रमः १ पाद्य २ अर्घ्य ३ आचमन ४ स्नान
 ५ पुनराचमनीय ६ वस्त्र ७ गन्ध ८ पुष्प ९ अक्षत १० धूप ११ दीप
 १२ नैवेद्य १३ पुनराचमनीय १४ पूगीफल १५ दक्षिणा १६ नमस्कार
 इस तरह सर्व ग्रहों में १६ उपचार पूजन जानना और अन्त में नमस्कार
 करना जल्दी करना होतो पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं स्नानं पुनराच० वस्त्रं गंधं
 अक्षतान् पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं पूगीफलं दक्षिणां समर्पयामि नमस्कारं करोमि

८
ऋद्धिसौभाग्यं देहिमे धनसंपदाम् । इच्छासिद्धिं
कुरुमेदेव दयादीनं गणेश्वर ॥ २ ॥ भगवन् गण-
पते अनयायथा संभवया पूजया पूजितस्त्वं ममो-
परिकृपांकुरुरक्षांकुरुतेनमः इति गणपतिपूजनम् ॥

यदि नांदी मुखीयान्न संकल्प करना होतो करे—

अथग्रहाणा मावाहनम्

कन्या का पिता और वर पक्षीय पूजन करने वाला वाम
हाथ पर चावल लेकर अपने आगे चौकोण में वा ग्रह मण्डल
में एक एक चावल प्रति श्लोकसे ग्रहों का आवाहन करें ।

विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् । अविघ्नं
सर्वकार्येषु विनायक माह्वयाम्यहम् ॥ १ ॥ आवा-
हयेद्भुतं नागं फणिशत समन्वितम् ॥ आगच्छो
रगराजत्वक्षेत्रे स्मिन्सन्निधौ भव ॥ २ ॥ आवाह-
याम्यहं देवी मातृश्र लोकमातृकाः ॥ गौर्यादिकाः
पोडशकाः कुलदेवी समन्विताः ॥ ३ ॥ दिवाकरं
सहस्राक्षं ब्रह्माद्यैरमरैः स्तुतम् ॥ लोकनाथं जगच्च-
क्षुः सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥ ४ ॥ हिमरश्मिन्निशा-
नाथं तारापत्य मृतोद्भवम् ॥ ओषधीनां च राजा
नंसोममावाह ॥ ५ ॥ धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः
समप्रभम् ॥ कुमारं शक्तिहस्तं च भौम
मावा ॥ ६ ॥ बुधं बुद्धि प्रदातारं सोमव-

शविवर्धनम् ॥ यजमान हितार्थाय बुध मावा०
 ॥७॥ बुद्धिश्रेष्ठांगिरःपुत्रं देवानां च पुरोहितम् ॥
 शक्रस्य मन्त्रिणन्नित्यं गुरुमावा० ॥८॥ प्रविष्टं
 जठरेशम्भोर्निष्क्रान्तं पुनरक्षतम् ॥ पुरोहितं च
 दैत्यानां शुक्रमावा० ॥ १० ॥ प्रदीप्तवन्निवर्णाभं
 भिन्नाञ्जनसमप्रभम् ॥ छायामार्तदसम्भूतं शनि
 मावा० ॥ ११ ॥ चक्रेण छिन्नमूर्धानं विष्णुना भिन्नि-
 रीक्षितम् ॥ मैहिकेयं महाकायं राहुमावा० ॥ १२ ॥
 ब्रह्मणः कुलसंभूतं दृष्टं लोकभयावहम् ॥ शिखिनं-
 तु महात्मानं - केतुमावा० ॥ १३ ॥ ब्रह्माणं शिरसा-
 नित्यमष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ॥ गायत्री सहितं देवं ब्रह्म
 आवा० ॥ १४ ॥ केशवं पुंडरीकाक्षं माधवं मधुसूद-
 नम् ॥ रुक्मिणी सहितं देवं विष्णुमावा० ॥ १५ ॥
 शिवं शङ्करमीशानं द्वादशार्धार्धलोचनम् ॥ उमया
 सहितं देवं शम्भुमावा० ॥ १६ ॥ रत्नसागरसम्भू-
 तां शरीरे विष्णुनाश्रिताम् ॥ यजमान हितार्थाय
 लक्ष्मीमावा० ॥ १७ ॥ सर्वसौख्यप्रदां नित्यं वीणा
 पुस्तकधारिणीम् ॥ मातरं सर्वलोकानां वाणी
 मावा० ॥ १८ ॥ हिमपर्वत सम्भूतां शरीरे शम्भु-
 नाश्रिताम् ॥ यजमान हितार्थाय उमा मावा० ॥
 १९ ॥ ऐरावतसमारूढं वज्रहस्तं महाबलम् ॥ प्रा-

ऋद्धिसौभाग्यं देहिमे धनसंपदाम् । ईच्छासिद्धिं
 कुरुमेदेव दयादीनं गणेश्वर ॥ २ ॥ भगवन् गण-
 पते अनयायथा संभवया पूजया पूजितस्त्वं ममो-
 परिकृपांकुरुरक्षां कुरुतेनमः इति गणपतिपूजनम् ॥

यदि नांदी मुखीयात्र संकल्प करना होतो करे—

अथग्रहाणा मावाहनम्

कन्या का पिता और वर पत्नीय पूजन करने वाला वाम
 हाथ पर चावल लेकर अपने आगे चौकोण में वा ग्रह मण्डल
 में एक एक चावल प्रति श्लोकरखे ग्रहों का आवाहन करें।

विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनमस्कृतम् । अविघ्नं
 सर्वकार्येषु विनायक माह्वयाम्यहम् ॥ १ ॥ आवा-
 हयेद्भुतं नागंफणिशत समन्वितम् ॥ आगच्छो
 रगराजत्वंक्षेत्रे स्मिन्सन्निधौभव ॥ २ ॥ आवाह-
 याम्यहं देवी मातृंश्च लोकमातृकाः ॥ गौर्यादिकाः
 षोडशकाः कुलदेवी समन्विताः ॥ ३ ॥ दिवाकरं
 सहस्राक्षं ब्रह्माद्यैरमरैःस्तुतम् ॥ लोकनाथं जगच्च-
 क्षुः सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥ ४ ॥ हिमरश्मिन्निशा-
 नाथं तारापत्य मृतोद्भवम् ॥ ओषधीनां च राजा
 नंसोममावाह ॥ ५ ॥ धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजः
 समप्रमम् ॥ कुमारं शक्तिहस्तं च भौम
 मावा ॥ ६ ॥ बुधं बुद्धि प्रदातारं सोमवं-

शविवर्धनम् ॥ यजमान हितार्थाय बुध मावा०
 ॥७॥ बुद्धिश्रेष्ठांगिरःपुत्रं देवानां च पुरोहितम् ॥
 शक्रस्य मन्त्रिणन्नित्यं गुरुमावा० ॥८॥ प्रविष्टं
 जठरेशम्भोर्निष्क्रान्तं पुनरक्षतम् ॥ पुरोहितं च
 दैत्यानां शुक्रमावा० ॥ १० ॥ प्रदीप्तवन्निवर्णामं
 भिन्नाञ्जनसमप्रभम् ॥ छाया मार्तण्डसम्भूतं शनि
 मावा० ॥ ११ ॥ चक्रेण छिन्नमूर्धानं विष्णुना भिन्नि-
 रीक्षितम् ॥ सैहिकेयं महाकायं राहुमावा० ॥ १२ ॥
 ब्रह्मणः कुलसंभूतं दृष्टं लोकमया वहम् ॥ शिखिनं
 तु महात्मानं - केतुमावा० ॥ १३ ॥ ब्रह्माणं शिरसा-
 नित्यमष्टनेत्रं चतुर्मुखम् ॥ गायत्री सहितं देवं ब्रह्म-
 आवा० ॥ १४ ॥ केशवं पुंडरीकाक्षं माधवं मधुसूद-
 नम् ॥ रुक्मिणी सहितं देवं विष्णुमावा० ॥ १५ ॥
 शिवं शङ्करमीशानं द्वादशार्धार्धलोचनम् ॥ उमया
 सहितं देवं शम्भुमावा० ॥ १६ ॥ रत्नसागरसम्भू-
 तां शरीरे विष्णुना श्रिताम् ॥ यजमान हितार्थाय
 लक्ष्मीमावा० ॥ १७ ॥ सर्वसौख्यप्रदां नित्यं वीणा-
 पुस्तकधारिणीम् ॥ मातरं सर्वलोकानां वाणी-
 मावा० ॥ १८ ॥ हिमपर्वत सम्भूतां शरीरे शम्भु-
 नाश्रिताम् ॥ यजमान हितार्थाय उमा मावा० ॥
 १९ ॥ ऐरावतसमारूढं वज्रहस्तं महाबलम् ॥ प्रा-

च्यांदिशिसमाश्रित्य इंद्रमावा० ॥२०॥ छागपृष्ठ
 समारूढं शक्तिहस्तंमहावलम् ॥ आग्नेय्यांदिशि
 ह्याश्रित्य अग्निमावा० ॥ २१ ॥ महिपेसुसमा-
 रूढं दंडहस्तंमहावलम् ॥ याम्यांदिशिसमा-
 श्रित्ययम मावाहयाम्यहम् ॥ २२ ॥ महाप्रेत
 समारूढं खड्गहस्तंमहावलम् ॥ नैर्ऋत्यां-
 दिशिह्याश्रित्य निर्ऋति माह्वयाम्यहम् ॥२३॥
 प्रेतपृष्ठसमारूढं पाशहस्तं महावलम् ॥ वारुण्यां-
 दिशि ह्याश्रित्य वरुणमाह्व० ॥२४॥ मृग पृष्ठ
 समारूढं ध्वजा हस्तंमहावलम् ॥ वायव्यां दिशि-
 ह्याश्रित्य वायुमावा० ॥२५॥ महायक्षसमारूढं
 गदाहस्तंमहावलम् ॥ उदीच्यां दिशिह्याश्रित्य
 कुबेरमाह्व० ॥२६॥ वृषपृष्ठसमारूढं शूलहस्तंमहा-
 वलम् ॥ ऐशान्यां दिशिह्याश्रित्य शिवमावा०
 ॥२७॥ आवाहयाम्यहं देवीं दिव्याभरणभूषिताम्
 ॥ स्त्रीरूपा पृथिवीं शान्तां ब्रह्मस्थाने सुपूजिताम्
 ॥२८॥ आवाहयेतमाकाशं विष्णोः पदमनन्तकम्
 ॥ यत्र देवास्तथायक्षाग्रहाः सर्वे प्रतिष्ठिताः ॥२९॥
 अत्र्यादीन् मुनिश्रेष्ठान् नरुंधती युतांस्तथा ॥
 विवाहयज्ञशान्त्यर्थं सप्तर्षीनाह्व० ॥३०॥ ब्रह्मज्ञ-
 मृषिराजं च परात्मानं परंपदम् ॥ आदित्यादि

ग्रहाधीशंध्रुवमावा० ॥३१॥ ब्रह्मांडे ऋष्टिराजं हि-
 दक्षिणस्यां दिशिस्थितम् ॥ महोदरं महाबाहुमग-
 स्तिमाह्व० ॥३२॥ धर्माधर्म विचाराययाम्यांदिशि
 समाश्रितम् ॥ धर्मसिंहासनासनिं धर्ममावा० ॥
 ३३॥ धर्मराज हितंभृत्यं धर्माधर्म विचारकम् ॥
 चित्रगुप्तंमहाबुद्धिं चित्रमावा० ॥३४॥ पक्षाः
 संवत्सरामासाऋतवश्चायनानिच ॥ कलाःकाष्ठा-
 मुहूर्ताश्च सर्वानावा० ॥३५॥ लोकपालाः खगा
 नागा योगिन्योयक्षमातरः ॥ यजमानस्यपुष्ट्यर्थं
 सर्वानावा० ॥ ३६ ॥ सिद्धाश्चकिन्नराश्चैव गंधर्वा
 प्सरसांगणाः ॥ विद्याधराश्चपुष्ट्यर्थं सर्वानावा०
 ॥ ३७॥ दिविभूम्यन्तरिक्षेच येचपातालवासिनः।
 तेसर्वेत्रसमायान्तु स्वास्ति कुर्वन्तुमेष्टुहे ॥ ३८ ॥
 मरुद्भूतास्तथारुद्रा आदित्याद्वादशैवतु ॥ अनो-
 दिताहिंये केचित्सर्वानावा० ॥३९॥ आगच्छन्तु
 सुराःसर्वेयेचान्येप्यंशभागिनः ॥ सर्वेस्वपूजांशु-
 हन्तुदत्त्वा शान्तिमहीतले * ॥ ४० ॥ इति सर्व-
 ग्रहाणामावाहनम् ॥

अथ ऋत्विजांवरणम् । आचार्यं वरणसंभृ-
 तिमादाय संकल्पयेत् । ओ मद्येत्यादि० अमुकस्य

*ऐसे मन्त्र को अवाहन कर के सामान्य तथा पूजन करा देना ।

१ विवाहकर्मणि एभिः पुष्पाक्षतादिभि रार्चयित्वे
 २ नामुकगोत्रममुकशर्माणंत्राह्मणं त्वा महं वृणो वरण
 ३ सामिग्रीं विप्राय दद्यात् *

कंकण बांध कर अंगूठा ब्राह्मण का पकड़ कर प्रार्थना करे।

आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः ॥
 १ तथाहि मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यस्त्वं मे भव प्रभो । १।
 २ अहं भवामि । इति विप्रो वदेत् । वृतोऽस्मीति च
 ३ उक्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥

१ मैं आचार्य हूँ ऐसे कह कर वृतोऽस्मि कह कर ब्राह्मण
 २ मन्त्र पढ़े ।

३ वृतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दाक्षिणाम् ॥

४ दाक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ १ ॥

(ऐसे) ब्राह्मण वरण करे । क्रम एक हैं इस लिये मन्त्र
 १ लिखे जाते हैं शेष सर्वकृत्य पहले की तरह करना ।

२ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा गायत्री सहितः प्रभुः । तथा
 ३ त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् एवं ऋत्विक् भव प्रभो ॥ २ ॥

४ ओं कातराक्षो यजुर्वेदस्रैष्ठ्य भो ब्रह्मा देवतः ॥ भार-
 ५ द्वाज स्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥ ३ ॥

६ सामवेदस्तु पिंगाक्षस्रैष्ठ्य भो विष्णु देवतः ॥ का-
 ७ ण्यपेयस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥ ४ ॥

॥ * वर पक्षीय । वरण सामिग्री, संकल्प करके ब्राह्मण को दे ।

ग्रहाधीशंध्रुवमावा० ॥३१॥ ब्रह्मांडे ऋष्टिराजं हि-
 दक्षिणस्यां दिशि स्थितम् ॥ महोदरं महाबाहुमग-
 स्तिमाह्व० ॥३२॥ धर्माधर्म विचाराय याम्यां दिशि
 समाश्रितम् ॥ धर्मसिंहासनासीनं धर्ममावा० ॥
 ३३॥ धर्मराज हितं भृत्यं धर्माधर्म विचारकम् ॥
 चित्रगुप्तं महाबुद्धिं चित्रमावा० ॥३४॥ पक्षाः
 संवत्सरामासा ऋतवश्चायनानि च ॥ कलाः काष्ठा-
 मुहूर्ताश्च सर्वानावा० ॥३५॥ लोकपालाः स्वगा-
 नागा योगिन्यो यक्षमातरः ॥ यजमानस्य पुष्ट्यर्थं
 सर्वानावा० ॥ ३६॥ सिद्धाश्च किन्नराश्चैव गंधर्वा
 प्सरसांगणाः ॥ विद्याधराश्च पुष्ट्यर्थं सर्वानावा०
 ॥ ३७॥ दिवि भूम्यन्तरिक्षे च ये च पातालवासिनः ।
 ते सर्वे त्रसमायान्तु स्वास्ति कुर्वन्तु मे गृहे ॥ ३८॥
 मरुद्भूतास्तथारुद्रा आदित्या द्वादशैव तु ॥ अनो-
 दिता हि ये केचित् सर्वानावा० ॥३९॥ आगच्छन्तु
 सुराः सर्वे ये चान्येऽप्यंशभागिनः ॥ सर्वे स्वपूजां गृ-
 ह्णन्तु दत्त्वा शान्तिं महीतले * ॥ ४० ॥ इति सर्व-
 ग्रहाणामावाहनम् ॥

अथ ऋत्विजां वरणम् । आचार्य वरणसंभृ-
 तिमादाय संकल्पयेत् । ओ मद्येत्यादि० अमुकस्य

* ऐसे सब को अवाहन कर के सामान्य तथा पूजन कर देना ।

विवाहकर्मणि एभिः पुष्पाक्षतादिभि र्वाचार्यत्वे
नामुक्तगोत्रममुक्तशर्माणं ब्राह्मणं त्वा महं वृणो वरण
सामिग्रीं विप्राय दद्यात् *

कंकण बांध कर अंगूठा ब्राह्मण का पकड़ कर प्रार्थना करे।
आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ॥
तथा हि मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यस्त्वं मे भव प्रभो ॥ १ ॥
अहं भवामि । इति विप्रो वदेत् । वृतोऽस्मीति च
उक्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥

मैं आचार्य हूँ ऐसे कह कर वृतोऽस्मि कह कर ब्राह्मण
मन्त्र पढ़े ।

वृतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ १ ॥

ऐसे ब्राह्मण वरण करे । क्रम एक हैं इस लिये मन्त्र
लिखे जाते हैं शेष सर्वकृत्य पहले की तरह करना ।

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा गायत्री सहितः प्रभुः । तथा
त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् एवं ऋत्विक् भव प्रभो ॥ २ ॥
ओं कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रेष्ठ भो ब्रह्मदेवतः ॥ भार-
द्वाज स्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥ ३ ॥
सामवेदस्तु पिङ्गाक्षस्त्रेष्ठ भो विष्णुदेवतः ॥ का-
श्यपास्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥ ४ ॥

* ३२ पक्षीय वरणमायिग्री संकल्प करके ब्राह्मण को दे ।

“वृहन्नेत्रोथर्ववेदोऽनुष्टुभोरुद्रदेवतः ॥ वैखान-
सगोत्रविप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वंभेमखेमव ॥ ४ ॥

॥ इति ऋत्विजां वरणम् ॥

ततो ब्राह्मणाः पुष्पाक्षतानि गृहीत्वा आशीर्वाद
दद्युरथ च तद्वत्वा कंकणं वध्नन्ति—

फिर ब्राह्मण हाथ में पुष्पा क्षत लेकर आशीर्वाद के
मन्त्र पढ़ कर वह यजमान को दें और कंकण यजमान
को बाधें ।

ओं ऋग्वेदस्तु यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥
ब्रह्म वाक्यैश्च तैर्नित्यं हन्यन्ते तव शत्रवः ॥ १ ॥
अपुत्राः पुत्रिणः संतु पुत्रिणः संतु पौत्रिणः ॥
अधनाः सधनाः सन्तु सन्तु सर्वार्थ साधकाः ॥ २ ॥
विप्रहस्ताश्च गृहीयाद्यज्ञ पुष्पफलाक्षतान् ॥ च-
त्वार स्तव वर्द्धन्तु आयुः कीर्तिर्यशो वलम् ॥ ३ ॥
आयुर्वृद्धिर्यशो वृद्धिः प्रज्ञा च सुखसंपदः ॥ धन
सन्तान वृद्धिश्च सप्तैताः सन्तु वृद्धयः ॥ ४ ॥

अथ पंचोकारपूजनम्

आवाहयाम्यहं देवमोँकारं परमेश्वरम् ॥ अ-
क्षरं त्रिगुणाकारं सर्वाक्षरमयं शुभम् ॥ १ ॥ त्रिमात्रं-
व्यक्षरं दिव्यं त्रिपदं च त्रिदेवतम् ॥ अणवं प्रणवं
हंसं स्रष्टारं परमेश्वरम् ॥ २ ॥ अनादिनिधनं देवमप्रमे-

यंसनातनम् ॥ परंपरतरं बीजं निर्मलं निष्कलं
 शुभम् ॥ ३ ॥ ओं आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी-
 जायता माराष्ट्रे राजन्यः शूरइपव्योति व्याधीम
 हारथो जायतां दोग्ध्रीधेनुर्वोढानढवानाशुःसप्तिः
 पुरंधिर्योपा जिष्णुरथेष्टाः समेयोयुवास्य यजमा-
 नस्यवीरो जायतां निकामे निकामेनः पर्जन्यो
 वर्षतुफलवत्योन ओषधयः पच्यंतां योगक्षेमोनः
 कल्पताम् ॥ इति पंचोङ्कार पूजनम् ॥

अथा रक्षा विधानम्

पुरोहित वर कन्या के सिर ऊपर हाथ रख लड़े ।

ओम् गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्यपि-
 तामहम् ॥ विष्णुरुद्रं श्रियं देवीं वंदे भक्त्या सरस्व-
 तीम् ॥ १ ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं नि-
 शाकरम् ॥ धरणी गर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्प-
 तिम् ॥ २ ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्
 राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारंभे विशेषतः ॥ ३ ॥
 शक्राद्यादेवताः सर्वे मुनींश्च कथयाम्यहम् ॥
 गर्गमुनिं नमस्कृत्य नारदं ऋषिं मुत्तमम्
 ॥ ४ ॥ वसिष्ठं मुनिं शार्दूलं विश्वामित्रं
 महा मुनिम् ॥ व्यासं कविं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र
 विशारदम् ॥ ५ ॥ विद्याधिकान् मुनींश्चैव आ-

चार्याश्च तपोधनान् ॥ तान्सर्वांश्चप्रणम्यादौ
यज्ञारंभं करोम्यहम् ॥६॥ पूर्वं रक्षतु गोविन्द
आग्नेय्यांगरुडध्वजः ॥ याम्यांरक्षतुवाराहोनोर-
सिंहस्तुनैर्ऋते ॥७॥ केशवो वारुण्यां रक्षेद्वायव्यां-
मधुसूदनः ॥ उत्तरे श्रीधरोरक्षेदीशान्यान्तु
गदाधरः ॥ ८ ॥ एवंदशादिशोरक्षेद्वासुदेवोजना-
र्दनः ॥ ऊर्ध्वं गोवर्धनोरक्षे दधःस्थानेमहीधरः
यज्ञाग्रे रक्षतांशङ्खः पृष्ठेपद्मन्तथोत्तमम् ॥९॥
वामपार्श्वेगदारक्षेदक्षिणेच सुदर्शनः ॥ उपेन्द्रः
पातुब्रह्माणमाचार्यम्पातुवामनः ॥ १० ॥ अ-
च्युतः पातुऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥
कृष्णो रक्षतुसामानं माधवो थर्ववेदकम् ॥ ११ ॥
उग्रहृष्टाश्च विप्रास्ते तेनरुद्रेण रक्षिताः ॥ यजमा-
नःसपत्नीकः पुण्डरीकाक्षरक्षितः ॥ १२ ॥ रक्षा
हीनंतुयतस्थानं तत्सर्वरक्षतां हरिः ॥ वेदमंत्रैस्तु-
कर्तव्या रक्षाशुभ्रैस्तुसर्षपैः ॥ १३ ॥ ओं ' मानः
शशो रोअररुषोधूर्तिः प्राणाङ्मर्त्यस्य । रक्षाणो
ब्रह्मणस्पते ॥ ॐ यदावध्नदाक्षायणा हिरण्यशता
नीकायसुमनस्यमानाः । तन्मआवध्नामि शतशा-
रदायआयुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥१४॥ रक्ष रक्ष

महादेवनीलग्रीवजटाधर ॥ रक्षंतु देवताः सर्वे ब्रह्म-
विष्णुमहेश्वराः ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चरक्षाः कुर्व-
न्तुते सदा ॥१५॥ इति रक्षा विधानम् ॥

अथ षोडश मातृ पूजनम्

उत्ता में षोडश मातृ पूजन करे

गौरी पद्मा शचीमेधा सावित्री विजया ।

जया ॥ देवसेना स्वधा स्वाहा मातरोलोकमा-
तरः ॥ १ ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टि स्तथात्म-
कुलदेवताः ॥ भगवतीभ्यः षोडश मातृभ्यो
नमः ॥ इति ॥

अथ वासुकि पूजनम्

मुत्तर दक्षिण में वसुकि पूजन

अथातः संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं वास्तु पूज-
नम् ॥ येन पूजा विधानेन कर्म सिद्धिस्तुजा-
यते ॥ १ ॥ अनंतं पुडरी काक्षं फणाशत विभू-
षितम् ॥ विधुद्वंद्वक सदृशंकूर्मारूढं प्रपूज-
येत् ॥ २ ॥ ओं नमोस्तु सर्पेभ्यो येकेच पृथिवीमनु ॥
यैस्तारिक्षेये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमो नमः ॥ वासुका
चष्टकुलनाग देवताभ्यो नमः । पाद्यादिभिः समर्च-
येत् ॥ इति वासुकि पूजनम् ॥

अथ योगिनी पूजनम्

पहिले ४ मंत्रों से योगिनी का आवाहन करे

आवाह याम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम् ॥

योगाभ्यासेन संतुष्टां परध्यान समन्विताम् ॥ १ ॥

दिव्यकुण्डल संकाशां दिव्य ज्वलित लोचनाम् ॥

मूर्तिमतीममूर्तीचउग्रांचैवोग्ररूपिणीम् । २। अनेक

भाव संयुक्तां संसारार्णव तारिणीम् ॥ यज्ञं कुर्वन्तु

निर्विघ्नं श्रेयो यच्छन्तु मातरः ॥ ३ ॥ ऋग्वेदो थय

जुर्वेदो योगो योग युयुत्सवः ॥ योगिनी सामवेदस्तु

योजये दप्यथर्वणम् ॥ ४ ॥ एभिर्योगिनीमावाहयेत्

जयाच विजया चैव जयन्तीचाप राजिता ॥ नन्दा

भद्रा तथा भीमा श्री देवी चार्द्ध विन्दुका ॥ १ ॥

हुंकारी भास्करीभीमा धूम्राक्षीकलहप्रिया ॥

ज्वालांगी कालिकादेवी तथा चण्डा पुरांतसी

॥ २ ॥ दिव्ययोगी महायोगी सिद्धियोगी जने-

श्वरी ॥ शाकिनी काल रात्रिश्च ऊर्ध्वकेशीनि

शाकरी ॥ ३ ॥ गंभीरीमाषिणीचैव ज्वालांगी-

नवपन्नगा ॥ राक्षसी घोररक्ताक्षी विश्वरूपी

भयंकरी ॥ ४ ॥ डाकिनी रौद्रवैताली कुब्जाकन्य-

कभोजिनी ॥ कोटराक्षी भीमभद्रा बुद्धिवेगी भयं-

करी ॥ ५ ॥ विरली हंसिनीयक्षी निर्जरातथ्य-

भापिणी ॥ सर्वसिद्धि प्रदातुष्टामनः सिद्धिप्रदायि-
नी ॥ ६ ॥ ब्रह्माणी वैष्णवीरौद्री मांतगी नंदके-
श्वरी ॥ दुर्जयाविकटाचैव तथाचविषलंधिनी
॥ ७ ॥ भैरवीचक्रिणीचैव दुर्मुखी प्रेतवासिनी ॥
कालोग्रा मोहनीचैव तथाच भुवनेश्वरी ॥ ८ ॥
चतुःपष्टिः समाख्याता योगिन्योहि वरप्रदाः ॥
त्रैलोक्ये पूजितानित्यं देवमानुषयोगिभिः ॥ ९ ॥
भगवतीभ्यश्चतुः पष्टियोगिनीभ्योनमः पाद्यादि-
भिः संपूज्य प्रज्वलित दीपसंयुक्त मिष्टान्नमय
बलिं दद्यात् ॥

पाद्यादि से पूजन कर के दीपक जागता और मिष्टान्न
दक्षिणा बलि दान करे मन्त्र ।

ओं ह्रीं ह्रीं महार्वीं हुं हुं प्रचण्ड फेत्कार
शब्दां घ्रां घ्रां घनघोर नंदिनीं हां हां हां हसति
उटटि भीं भीं भीं भयानने हुं हुं हुं डमरुकहस्ते
लां लां लल्हतिजिह्वे मां मांसादनिबलिप्रिये
एहि एहि योगिनि बलिं गृहाण रक्ष रक्षमाम् ॥

पुनः योगी के वास्ते सीधा संकल्प करे ।

ओं मद्येत्यादि० अमुकस्य विवाह नि-
र्विघ्नहेतुकार्यकारितग्रह यज्ञान्तर्गत चतुः पष्टि
योगिनी प्रीत्यार्थकतासंपादक सर्वसुखसौभा-

ग्यादि संप्राप्तिकामना पुरकदास्यमानप्रजापाति
 दैवताकमेतत्परिमित गोधूमान्नं घृतगुड सहितं
 चतुरधिक षष्टिकपर्दिका दक्षिणा संयुक्तमेतदा-
 मान्नभोजनं स्वेच्छासंप्राप्ताय विच्छिन्नकर्णायवा
 ऽविच्छिन्नकर्णाय योगिनेऽहं दास्ये—

अथ प्रताप तिलकम्

पाठक वा पुरोहित यजमान को तिलक लगावें ।

आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवामरुद्रणाः ॥

तिलकं ते प्रयच्छन्तु सर्व कामार्थ सिद्ध्ये ॥१॥

मंडल मध्ये सूर्य पूजनम्

ओं आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न-
 मृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्य येन सवितारथेना देवो
 ऽयाति भुवनानि पश्यन् १ श्री सूर्यायनमः ॥
 पाद्यादिभिः संपूज्यनमस्कुर्यात् ॥

हाथ जोड़े प्रार्थना करे ।

पद्मासनः पद्मकरोद्दिवाहुः पद्मद्युतिः पद्म
 तुरंग वाहः ॥ दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी
 मयिप्रसादं विदधातु सूर्यः १

अग्नि कोणे चन्द्र पूजनम्

ओं इमं देवा असपत्न ७ सुवद्धमहते
 तत्राय महते जैष्ठ्याय महते जान राज्यायेंद्र-

स्योद्रियाय इमममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमस्यै
विशेषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मजानां
राजा २ श्री चन्द्रमसेनमः ॥ प्रार्थना—

स्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दंड-
करोद्विबाहुः ॥ चंद्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी
श्रेयांसि मह्यं विदधातु देवः ॥

दक्षिणे मंगल पूजनम्

ओं अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या
अयमपां रेतांसि जिन्वति ॥ श्रीभौमायनमः

रक्तांबरोरक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेघ-
गतो गदाभृत ॥ धरासुतः शक्तिधरश्चशूली
सदाममस्या हरदः प्रशांतः ॥

ईशान्ये बुध पूजनम्

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते-
सं सृजेथामयं च अस्मिन् सधस्थे अद्युतर-
स्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत श्रीबुधाय-
नमः ॥ प्रार्थना

पीताम्बरः पीत वपुः किरीटी चतुर्भुजो
दंडधरश्चहारी ॥ चर्मांसि धृक्सोमसुतः प्रशांतः
सिंहाधिरुद्धो वरदो बुधश्च ४

उत्तरे बृहस्पति पूजनम्

ओं बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमादिभाति
ऋतुमज्जनेषु ॥ यदीदयच्छवसऋत प्रजात तद-
स्मासु द्रविणंधेहिचित्रम् । श्रीगुरवेनमः ॥

पीतांबरः पीतवपुः किरिटी चतुर्भुजो देवगुरुः
प्रशांतः । विभ्रत्सुदंडं च कमंडलुं च तथाक्षसूत्रं
वरदोस्तुमह्यम् ॥ पूर्वे शुक्रपूजनम् ॥

ओं अन्नात्परि श्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यंपिव-
त्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं
विपानं शुक्रमंधस इन्द्रस्योन्द्रियमिदं प्रयोमृतं मधु
श्रीशुक्राय नमः ॥ ६ ॥ प्रार्थना

श्वेतांबरः स्वेतवपुः किरिटी चतुर्भुजो दैत्य-
गुरुः प्रशांतः ॥ तथाक्षसूत्रं च कमंडलुं च दंडं च
विभ्रद्वरदोस्तुमह्यम् ॥

पश्चिमेशानि पूजनम्

ओं शन्नो देवी रमीष्टय आपोभवन्तु पीतये ।
शंख्यो रभिस्रवन्तु नः ॥ श्री शनैश्वराय नमः ॥

नीलद्युतिः शूलधरः किरिटी गृध्रास्थित
स्त्रासकरो धनुष्मान् ॥ चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशांतः
सदास्तु मह्यं सर्वरप्रदोहि ॥ नैऋत्ये राहु पूजनम्—

ओं कयानश्चित्र आभुव हुतो सदावृधः

सखा । कयाशचिष्ट्यावृता ९ ॥ श्रीराहवे नमः ॥

नीलांवरो नीलवपुःकिरीटी करालवक्रः
करवालशूली ॥ चतुर्भुजश्चर्मधरश्चराहुः सिंहास-
नस्थः सवरप्रदः स्यात् ॥

वायौ केतु पूजनम्

ओं केतुं कृण्वन्न केतवेपेशो मर्याअपेशसे ।
समुपद्भिरजायथा । श्री केतवेनमः ॥ प्रार्थना—
धूम्रोद्विवाहुर्वरदोगदाभृत् गृध्रासनस्थो
विकृतासनश्च ॥ किरीटकेयूर विभूषितांबरः सदा
स्तुमेकेतुगणः प्रशान्तः ॥

अथकेश (ब्र० वि० महा०) पूजनम् :

ओं ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः
सरुचोवेनआवः । सवुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः
सतश्चयोनि मसतश्चाव्विवः ॥ श्रीब्रह्मणेनमः ॥१॥

विष्णु पूजनम्

ओं ण्णोरराटमसि विष्णोः श्रप्त्रेस्थो
विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्ण-
वेत्वा ॥ विष्णवेनमः ॥ रुद्र पूजनम्—

ओं नमःशंभवायचमयोभवायच नमः
शंकरायच मयस्करायच नमः शिवायच शिवत-
रायच ॥ श्री शंकरायनमः॥इति त्रिदेव पूजनम् ॥

स्याभ्युदयं कुरु एषदधि मापाक्षतवल्लिस्तेनमः ३

नेऋत्य कोणमें निऋति पूजाकरे

ओं असुन्वंतमयजमानमिच्छस्ते नस्येत्याह
मन्विहितस्फुरस्य । अन्यमस्म दिच्छसात इत्या-
नमो देवि निऋतेतुभ्यमस्तु ॥ निऋतयेनमः ॥

वलिदानकरे

भो निऋतिदेववलिभक्ष दिशंरक्ष मम यज-
मानस्याभ्युदयं कुरु एषदधि मापाक्षत वलिस्ते
नमः

पश्चिम में वरुण पूजा करे ॥

ओं वरुणास्योत्तं भनमसि वरुणस्यस्कंभ
सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्यऋ-
तसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ श्री
वरुणायनमः भो वरुण देववलिभक्ष दिशंरक्ष
ममयजमानस्या भ्युदयंकुरु । एषदधि मापाक्षत
वलिस्तेनमः ॥ ५ ॥

वायु कोण में वायु देव पूजे ॥

ओं आनोनियुद्भिः शतनीमिरध्वर ७ सह
सिणीभि रुपयाहियज्ञम् ॥ वायो अस्मिन्सवने
मादयस्त्रयात स्वस्तिभिः सदानः श्रीवायवेनमः ।
भो वायो वलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या

भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥

उत्तर में कुवेर पूजन करे ॥

ओं वय ७ सोमव्रते तवमनस्त नूषुविभ्रतः
प्रजावंतः सचेमहि ॥ श्री कुवेरायनमः ॥ ७ ॥

भो कुवेर बलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या
भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥

ईशान में रुद्र पूजा करे ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्यु पस्पतिंधियं जि-
न्वमवसेहूमहे वयम् । पूपानोयथा वेदसामसदृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । श्री रुद्रायनमः ।
भो ईशान बलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या
भ्युदयंकुरु एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥

नेर्ऋत्य पश्चिम के मध्य में आकाश पूजन करे ॥

ॐ यावांकशा मधुमत्यश्विना सूनुतावती
तया यज्ञमिमिक्षताम् ॥ श्री अनन्तायनमः ॥ ९ ॥
भो अनन्त बलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या
भ्युदयंकुरु । एषदधि माषाक्षत बलिस्तेनमः ॥

ईशान पूर्व के मध्य में पृथ्वी पूजा ॥

ॐ स्योनापृथिवीनो भवानृक्षरानिवेशनी
यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ श्री पृथिव्यैनमः ॥ १० ॥
भो पृथिवि बलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या

भ्युदयंकुरु एषदधि मापाक्षत वलिस्तेनमः ॥

उत्तर में कुवेर पूजन करे ॥

ओं वय ७ सोमव्रते तवमनस्त नृषुविभ्रतः
प्रजावंतः सचेमहि ॥ श्री कुवेरायनमः ॥ ७ ॥

भो कुवेर वलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या
भ्युदयंकुरु एषदधि मापाक्षत वलिस्तेनमः ॥

ईशान में रुद्र पूजा करे ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्यु पस्पतिंधियं जि-
न्वमवसेहूमहे वयम् । पूषानोयथा वेदसामसदृधे
रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । श्री रुद्रायनमः ।
भो ईशान वलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या
भ्युदयंकुरु एषदधि मापाक्षत वलिस्तेनमः ॥

नेर्ऋत्य पश्चिम के मध्य में आकाश पूजन करे ॥

ॐ यावांकशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती
तया यज्ञमिमिक्षताम् ॥ श्री अनन्तायनमः ॥ ९ ॥
भो अनन्त वलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या
भ्युदयंकुरु । एषदधि मापाक्षत वलिस्तेनमः ॥

ईशान पूर्व के मध्य में पृथ्वी पूजा ॥

ॐ स्योनापृथिवीनो भवानृक्षरानिवेशनी
यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ श्री पृथिव्यैनमः ॥ १० ॥
भो पृथिवि वलिभक्ष दिशंरक्ष मम यजमानस्या

भ्युदयंकुरु । एषदधि मापाक्षत वलिस्तेनमः॥॥

इति दशदिक्पाल पूजनम्

अथ क्षेत्रपाल वलिः

मांह तेल दक्षिणा वलि तेल में मुख देखे ॥

शांत्यर्थं पूजितोयस्तु देवैर्यज्ञक्रियासुच ॥

त्र्यंबकः स्वचरोनित्यं क्षेत्रपाल माह्वयाम्यहम् ॥

ओं नहिस्यश मविदन्नन्य मस्माद्वैश्वानरा
त्पुर एतारमग्नेः एमेनमवृधन्न मृताअमर्त्य वैश्वा-
नरं क्षेत्रजित्यायदेवाः ॥ भो क्षेत्रपाल एषदधि
मापाक्षत वलिस्तेनमः ॥

अथ सप्तर्षि पूजनम् ।

ॐ सप्तर्षयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षंति
मदमप्रमादं सप्तर्षयः स्वप्तो लोकमीयुस्तत्र जा-
ग्रतो अस्वप्नजो सत्रसदौचदेवो ॥ ॐ अत्रिभृगु
वसिष्ठश्च पुलस्त्यः पुलहःक्रतु ॥ अंगिरेण समा-
युक्ताः सप्तर्षयो बुधैःस्मृताः ॥ अरुंयती सहित
सप्तर्षिभ्योनमः ॥ इति सप्तर्षि पूजनम् ॥

अथाष्ट चिरंजीवि पूजनम्

ॐ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च
विर्भीषणाः ॥ पर्शुरामः कृपाचार्यः सप्तै ते चिर-
जीविनः ॥ मार्कण्डेयोष्टमः प्रोक्तः सर्वे कल्पांत

जीविनः॥ ॐ अश्वत्थाम्नेनमः १ ॐ बलिराजाय-
नमः २ ॐ व्यासायनमः ३ ॐ हनुमतेनमः ४
ॐ विभीषणायनमः ५ ॐ पशुरामायनमः ६
ॐ कृपाचार्यायनमः ७ ॐ मार्कण्डेयायनमः ॥८॥

इत्यष्ट चिरंजीवि पूजनम्

उत्तरे ध्रुव पूजनम्

आवाहयाम्यहं देवं ध्रुवेशं देवमुत्तमं वैष्णवं
विष्णु रूपं च पूर्णं ब्रह्म सनातनम् १ विश्वात्मा
विश्वरूपश्च दयावान् शुभलक्षणः॥ अक्रोधनस्तपः
श्रेष्ठो दृढासनो दृढव्रतः २ ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनि-
र्ध्रुवोसि ध्रुवयोनिमासीद साधुर्या उर्वस्य केतुं
प्रथमं जुषाणाश्चिन्ताध्वर्यूस्तदयतामिहत्वा ३

इति ध्रुव पूजनम्

अथ दक्षिणोऽगस्त्य पूजनम्

ॐ अगस्तिकुम्भो वनिष्टुर्जोनिता शचीभि-
र्यस्मिन्नग्रे योन्या गर्भो अन्तः प्लाशिव्यक्तः
शतधार उत्सो दुहेन कुम्भो स्वधां पितृभ्यः ॥१॥
ब्रह्माडे ऋषिराजोयमगस्त्यो हि महामुनिः॥
महोदरो महाबाहुर्महाज्ञान पराक्रमः ॥२॥
वातापि भक्षकश्चैव तेजवांश्च महातपः ॥ ईदृशः
शिवरूपो हि विष्णु भक्ति परायणः ॥ ३॥ निर्गु-

गो गुण संपन्न उग्रतपोधरस्तथा ॥ उत्तम कुल
संजातो महामुनेनमोस्तुते ॥ ४ ॥

अथैशान्यां कलश पूजनम्

अव्रणमकाल मूलवहिर्भागं दध्यक्षत पवित्र
अश्वत्थादि पत्र संयुक्तं फल वस्त्र पूगीफल पंच-
रत्न संयुक्तं निर्मल जल पूर्णं कलशं ईशान्यां
दिशि धान्यो परिस्थापयेत् ॥

अथ संक्षिप्त पूजन प्रकारः

ईशान्य में न फटे कालिमा रहित दधि अक्षत पवित्र
अश्वत्थादि पत्र सुपारी पंचरत्न वस्त्र श्रीफल निर्मल जलपूर्ण
कलश को धान्य पर रखे ।

अथ भूमिस्पर्शः

ॐ भूरासि भूमिरस्यादितिरासि विश्वधाया
विश्वस्य भुवनस्यधात्री पृथिवीयच्छ पृथिवीदृष्ट
पृथिवीं माहिःसीः ॥ धान्य स्पर्शः

ओं धान्य मग्निधनु हिदेवान् प्राणाय त्वोदा
दानाय त्वाव्यानाय त्वादीर्घा मनुप्रसिति मायुषेधां
देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृह्णात्वछिद्रे
णपाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि ॥

१ विशेष पूजन विधान अन्यत्र देखें ।

कलशं स्पृशेत् ॥ ;

ॐ आजिघ्र कलशं मध्यात्वा विशंतिद्वः
पुनरूर्जानिवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्वो रुधारापय-
स्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥ कलशेजलं क्षिपेत्

ॐ वरुण स्योत्तमनमसि वरुणस्य स्कंभ
सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यासि वरुणस्य ऋत
सदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद वरुणाय नमः
श्वेतवस्त्रं धारयेत्

ॐ मुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमा सदत्स्वः
वासो अग्ने विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो ॥

॥ श्रीफलं धारयेत् ॥

ॐ श्रीश्वते लक्ष्मीश्च पत्न्या बहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपम श्विनौ व्योमम् । इष्णान्निषाणा
मुमइषाण सर्वलोकं मइषाण ॥ इति ॥

रक्त वस्त्रधारणम्

ॐ युवासुवासः परिवीत आगात् स उश्रेयान्भ
वति जायमानः ॥ तंधीरासः कवयः उन्नयन्ति स्वाध्यो
मनसा देवयन्तः ॥ इति ॥ कंकण बंधनम् ॥

ॐ यद्वह्व्य मुदरस्यापवातिय आमस्य क्र
विषगंधो स्तिमुकृता तच्छ मितारः कृण्वन्तु तमेध
७ शतक्रतो ॥ इति ॥

कलशके पूर्वभागमें हाथ रखे ऋग्वेद को स्थापन करे

ओं अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्वि
जंहोतारं रत्नधातमम् ॥ दक्षिणे यजुर्वेदं स्थापयेत् ॥

ओं इषेत्वोर्ज्ज्वा वायवस्थदेवोवः सविता
प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मग्धन्या
इन्द्राय भागं प्रजावती रनमीवा अयक्ष्मामा वस्ते-
न ईशत माघश ७ सोध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात्त
वह्निर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥ इति ॥

॥ पश्चिमे सामवेदं स्थापयेत् ॥

ओं अग्न आयाहि वीतये ऋणानो हव्य दातये
निहोता सत्सु वह्निषि ३

॥ उत्तरे अथर्ववेदं स्थापयेत्

ओं शन्नो देवी रभीष्टय आपो भवंतु पीतये
शंयो रभिस्रवंतुनः * ४

पुनः अक्षतानादाय प्रत्येकं कलशे तिलकं
दत्त्वा नमस्कारं रक्षता दिभिः पूजयेत् ॥

ओं ऋग्वेदाय नमः १ ओं यजुर्वेदाय नमः २
ओं सामवेदाय नमः ३ ओं अथर्ववेदाय नमः ४ ओं
कलगाय नमः ५ ओं रुद्राय नमः ६ ओं गंगायै नमः
७ ओं यमुनायै नमः ८ ओं सरस्वत्यै नमः ९ ओं नर्म-

दायैनेमः १० इत्येकैकं संपूज्यं कलशं पूजयेत् ॥
 ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते
 यजमानो हविर्भिः ॥ अहेङ्मानो वरुणो
 हवोऽयुरुशः समानआयुः प्रमोषीः ॥ अनेन
 पाद्यादिभिः संपूज्यं प्रार्थयेत् ॥ ॐ ब्राह्मणे निर्मि
 तेस्तुं हिमांत्रिकैश्चासृतोपमैः ॥ प्रार्थयामि चत्वां
 कुम्भवांछितार्थं प्रदेहिमे १ देवदानव संवादं मथ्य
 माने महो दधौ ॥ उत्पन्नो सितदा कुम्भविधृतो वि
 ष्णुना स्वयम् २ त्वत्तोये सर्वतथिर्नि देवाः सर्वे
 त्वयि स्थिताः ॥ त्वयिति ष्ठतिभूतानि त्वयि प्राणाः
 प्रतिष्ठिताः ३

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥
 आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृकाः ४
 त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपियतः कामफलप्रदः ॥ त्वत्प्र-
 सादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्निध्यं
 कुरुमे देव प्रसन्नो वरदो भव ५

अथ कलशोत्पत्तिः

अथातः संप्रवक्ष्यामि कलशं प्रसवो यथा ॥
 हेमाद्रे रुतरे पार्श्वे क्षीरोदोत्तम सागरे १ प्रारब्धं
 मथनं तत्र देवैः सर्वैः सवासवैः ॥ दानवैर्वलि

मुख्यैश्च बालिभिर्वलदर्पितैः २ मंथानं मन्दिरं
कृत्वा नेत्रं कृत्वा तु वासुकिम् ॥ मूले कूर्मं तु सं-
स्थाप्य विष्णोर्वाहू च मंदिरे ३ एकत्र देवताः
सर्वे बालिनो दानवास्तथा ॥ मथ्यमाने तदा
तस्मिन् क्षीरोदेदेव दानवैः ४ उदपद्यन्त रत्नानि
लोके स्मिन्प्रथितानिवै ॥ विमानं पुष्करं चैव
उत्पन्नं हंसवाहनम् ५ नागऐरावतश्चैव वीणा
वादित्रकं तथा ॥ स्वर्गस्य भूषणं चैव रंभा सर्व
गुणान्विता ६ कौस्तुभं मणिरत्नं च बालचन्द्रस्त-
स्थैव च ॥ कुंडलानि मखं चैव गावः पुण्याश्च
उर्वशी ७ लक्ष्मीः सुरूपा सुभगा सुशीला च सर-
स्वती ॥ उच्चैः श्रवा हयश्चैव उत्पन्नं चा मृतं विषम्
८ धन्वंतरि धनुःशंखं पांचजन्यं सुदर्शनम् ॥
तत्र संस्थाप्य तं सर्वं विश्वकर्मा व्यचिन्तयत् ९
स्थापयित्वा तु रत्नानि लोके स्मिन्नथो सुरान् ॥
चितयित्वा बहुविधं धनमासाद्य निर्मलम् १०
भूमौ चाश्रम पूर्वाणि वासांसि भाजनानि च ॥
बहुवृक्षाणि रम्पाणि सृज्यन्ते विश्वकर्मणा ११
कलशं कामरूपेण सर्व संपत्ति कारकम् ॥ पठि-
तव्यं च मांगल्ये यज्ञ काले विशेषतः १२ यजमान
हितार्थाय कलशं स्थापयेद्बुधः ॥ सर्व देव मयं

कुम्भंतदेव कथयाम्यहम् १३ कलशस्य मुखे
 ब्रह्मा ललाटे वृषभध्वजः ॥ आदौमूलेस्थितो
 विष्णुर्मध्ये मातृगणांस्तथा १४ कुक्षौवैसागराः
 सप्तचन्द्रभागासरस्वती ॥ कावेरी कृष्णवेणी
 च गंगाचैवमहानदी १५ तापी गोदावरी
 चैव नर्मदाचवहिष्कृता ॥ विंध्यपादे धृतानघः
 श्रीपर्वतवनाश्रिताः १६ वटेश्वरं त्रिमूर्तं च
 गंगासागर संगमे ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि
 कलशेऽस्मिन्नन्यसे हुधः १७ अत्र शान्तिं प्रपुष्ट्यर्थं
 गायत्रीं चैव त्रिजपेत् ॥ ऋग्वेदश्च यजुर्वेदः
 सामवेदस्तथैव च १८ अथर्वसहिताः सर्वे कल-
 शेऽस्मिन् समाश्रिताः ॥ यत्फलं कपिलादाने का-
 र्तिके ज्येष्ठपुष्करे १९ तत्फलं लभ्यते सर्वं कलशो
 त्पत्तिपाठतः ॥ ब्राह्मणो लभते विद्यां पार्थिवो लभ-
 ते महीम् २० वैश्यश्च लभते लाभं शूद्रश्च गतिमुत्त-
 माम् ॥ बंध्याच लभते गर्भं पुत्रार्थी पुत्रमुत्तमम्
 २१ एतेनापि च मंत्रेण यः कुर्यादभिषेचनम् ॥
 लभते वांछितं सर्वं लभेत्कामांश्च पुष्कलान् ॥ राज-
 द्वारे भयं नैव सर्वबंधविमोचनम् ॥ २२ ॥ इति०

पुनः मन से सबको नमस्कार करे ।

ॐ सूर्याद्यधिदेवप्रत्यधिदेवाताभ्योनमः ॥
 ॐ पंच लोकपालेभ्योनमः ॥ ॐ धर्मराज चित्र
 गुप्ताभ्यां नमः ॥ ॐ संवत्सरादिवत्सरपंचके
 भ्यो नमः ॥ ॐ वसन्तादिषट्क्रतुभ्यो नमः ॥
 ॐ चैत्रादि द्वादश मासेभ्यो नमः ॥ ॐ प्रति
 पदादितिथिभ्यो नमः ॥ ॐ रव्यादिसप्तवासरे
 भ्यो नमः ॥ ॐ अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रे
 भ्यो नमः ॥ ॐ विष्कुंभादि अष्टा विंशति योगे
 भ्यो नमः ॥ ॐ ववादि एकादश करणेभ्यो नमः ॥
 ॐ मेपादि द्वादश राशिभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो
 देवेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः ॥ ॐ
 पूर्णाः संतुमनोरथा ममामुकशर्मणो यजमानस्य—
 इति ग्रहपूजनपद्धतिः समाप्ता



अथ विवाह पद्धतिः

*तत्रादौ शुद्धासनो परिस्थितौ कन्यावरौ निरीक्ष्य कन्याप्रदो दक्षिण हस्त तर्जन्यंगुष्ठयोर्मध्ये ताम्रमयीं दक्षिणां धृत्वा तद्धस्तं कन्योपरि धृत्वा वाचा बंधनं करोति ॥

अथवर्णः प्रणीयसे बलमद्रयसे देवग्रहस्य होमशान्तिच कारयेत् तस्मादिति सरतिद्वयं द्विजवर्याय तस्मै यथागौरीमो मधुपतिः ईश्वरोयश्च पतंगानां अश्वादीनां दासीनां प्रवालानां मान्यो भवति नहोराणां तस्य पर्जन्यस्य गौरी सौरिरिति वाचा—ऐसे दाता कहें ।

मुवाच वाचा—वर कहें ।

ऐसे फिर भी दो बार दाता और वर कहें ।

अथ कन्या प्रदआचार्यो वा कन्या मुपदिशति ॥

दाता वा ब्राह्मण कन्या को उपदेश दे ।

अवंध्ये ॥ आनंद वादिनी । जीवत्पुत्रवती ।

सत्यवादिनी । अनुत्तर वादिनी भव । पुरुषेण वाचं

पालय—

• यह रीति हमारे देश की है । कन्या दाता कन्या वर को शुद्धासन पर देख कर दक्षिण हाथ की तर्जनी अंगुष्ठ के मध्य में दक्षिणा धारकर हाथ कन्या पर रख कर वाचा बंधन करे ॥

पुनः वरं प्रत्युपदेशः

फिर वर को उपदेश दें ।

भो पुरुष कन्ययामातात्यज्यते पिता
त्यज्यते कुटुंबस्त्यज्यते कस्यार्थेपत्युरर्थे-
तद्यथा ॥ यथा इंद्रस्य इंद्राणी ॥ यथा गौतमस्य
अहिल्या ॥ यथा दशरथस्य कौशल्या ॥ यथा
रामस्य सीता ॥ यथा रावणस्य मंदोदरी ॥ यथा
नलस्य दमयन्ती ॥ यथा जृनस्य सुभद्रा ॥ यथा
भीमस्य हिडंबा ॥ यथाशंतनोर्गंगा ॥ यथा
सूर्यस्य छाया ॥ यथा चंद्रस्यरोहिणी ॥ यथा
वैश्वानरस्य स्वाहा ॥ यथा वनमालिनो लक्ष्मीः ॥
यथेश्वरस्यपार्वती ॥ एवंकर्मसहवाचा ब्रह्मवाचा
विष्णुवाचा रुद्रवाचा वाचा विचाल्यते येन
सुकृतं तेन हारितम् ॥ इति ॥

पडव्या भवन्ति ॥ आचार्यः १ ऋत्विक् २
वैवाह्यः ३ राजा ४ प्रियः ५ स्नातकः ६ षट्
ऋपयो भवन्ति । पडाचार्याश्च ॥ यथा ॥

प्रथमे ईश्वरेण गौरी विवाहिता ब्रह्मा
आचार्योऽभवत् १ द्वितीये प्रजापतिना सावित्री
विवाहिता गणपतिराचार्योऽभवत् २ तृतीये

१ यह केस भी इस देश में प्रचलित होने से लिख दिया है ।

सूर्य्येण छाया विवाहिता पराशर आचार्योऽभवत्
३ चतुर्थे हिरण्यकाशिपुना महिषी विवाहिता
व्यास आचार्योऽभवत् ४ पंचमे विष्णुना लक्ष्मी
विवाहितावाल्मीक आचार्योऽभवत् ५ षष्ठे श्री
रामेण सीता विवाहिता वाशिष्ठ आचार्योऽभवत् ६
सप्तमे वरेण कन्या विवाह्यते बृहस्पति रूपोऽहं
आचार्यो भवामि ॥

अथ वरवध्वोर्वस्त्र ग्रंथि बंधनम्

वर के वस्त्र में दक्षिणा अक्षत पुष्प कन्या के वस्त्र में
दुर्वाक्षत दक्षिणा फल पुष्प धार कर प्रतिष्ठा करे ।

ओं अद्येत्यादि अमुकस्य विवाह कर्मणि
श्रीगणेशादि पूजनपुरस्सरा वरवध्वोर्वस्त्र ग्रंथि
प्रतिष्ठा शुभाभवतु ॥

गांठ देता हुआ मंत्र पढ़े ।

गणाधिपं नमस्कृत्य उमां लक्ष्मीं सरस्व-
तीम् ॥ दंपत्यो रक्षणार्थाय ग्रंथि बंधं करोम्यहम् १
यंत्रह्रवेदात० इत्यादि मंगल श्लोकानपि पठेत ॥

कन्या का पिता संकल्प करे ।

ओं अद्येति० अमुकस्य मम देवपितृ ऋणा-
पनुत्यर्थं च एतस्याः कन्याया देव्या भर्त्रा
सह धर्मप्रजोत्पादनगृह्य परिग्रहधर्माचरणेष्व-

धिकारसिद्ध्यर्थे श्री लक्ष्मीनारायणप्रीतये विवाह
संस्कारकर्माहं करिष्ये ॥ तदादौ तदंगत्वेन वर
पूजनादिकमहं कुर्वे ॥

अथ वरार्चन विधिः

वर ऊर्ध्वजानु हो बैठे अर्थात् आसन के नीचे पैर रख
कर बैठे कन्या दाता वर के जानु को स्पर्श करके कहे ।

ॐ साधुभवा नास्तां अर्चयिष्यामो भवंतम् ॥

ओं अर्चय ॥ वरकहे ॥ दाता कहे

ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः ॥ ब्राह्मण कहे

ओं विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ॥ दाता कहे

ओं विष्टरं प्रतिगृह्णामि ॥ वर कहे

वर विष्टर हाथ में लेकर मन्त्र पढ़ कर अपने आसन
पर विष्टर मुत्तराग्र रखकर उस पर बैठे ।

ओं ' व ष्मोस्मिसमानानामुद्यता मिव सूर्यः ॥

इमंत मभितिष्ठामि योमांकश्चाभि दासति ॥ १ ॥

ओं ' पाद्यं पाद्यं पाद्यम् ब्राह्मण कहे

दाता विवियोग करे १ ओ३५ साधु भवानास्तापिति प्रजापतिः ऋषिः
ब्रह्मा देवता यजुः छन्दो वरार्चने विनियो०

२ ओं वष्मोस्मी त्पार्ष्वेण ऋषिः विष्टरो देवता अनुष्टुप्छन्दः
उपोशने विनियोगः ।

३ जल पुष्प अक्षत गंध सर्वापि लाजा । विनियोगं विना मन्त्रः पंके
गौरि वसीदति ।

ओं पाद्यं प्रति गृह्यताम् ॥ दाता कहे

वर पाद्य लेकर अपने पादों पर जल डारे दाता धोवे
ब्राह्मण वर होतो दक्षि० वाम चत्रियादि होतो वाम दक्षिण
क्रम से धोवे ।

ओं ' विराजो दोहोसि विराजो दोहम-
शयि मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥२ वरः पठेत
अथ २ विष्टर दानम् ॥

ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः ॥ ब्राह्मण कहे
ओं विष्टरः प्रति गृह्यताम् ॥ दाता कहे
ओं विष्टरं प्रति गृह्णामि ॥ वर कहे

वर विष्टर लेकर मंत्र पढ़ के अपने पादों के नीचे
उतराग्र रखे

ॐ वष्मोस्मिसमानानामुद्यता मिवसूर्यः ॥

इमंतमभितिष्ठामि योमांश्चामि दासति ३

ओं अर्घो अर्घो अर्घः, ब्रह्मण कहे
ओं अर्घः प्रति गृह्यताम् । दाता कहे

वर विनियोग करे

१ ॐ विराजो दोहोसीति प्रजापतिः ऋषिरनुष्टुप्छंद आपो देवता
यजुः पाद प्रक्षालने विनियोगः ।

२ ॐ वष्मोस्मीत्याथर्वण ऋषिः विष्टरो देवता अनुष्टुप्छंदः उपवेशने
विनियोगः ।

३ अर्घपात्र में जल पुष्प अक्षत गंध कुंशों

ओं अर्घ्यं प्रति गृह्णामि । वरकहे

वर अर्घ्यपात्र से पुष्प अक्ष कुशा निकालकर सिरपर धारण करे

ओं आपः स्थ युष्माभिः सर्वान् कामान्
अवाप्नुवानि ४

वर अर्घ्यपात्रके जलको गेरताहुआ पात्रको ईशान्य में छोड़दे

ओं समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभि
गच्छत ॥ अरिष्टा स्माकं वीरामापरा सेचि
मत्पयः ॥ ५ ॥

ओं आचमनीयं आचमनीयं आचामनीयम् ।
ब्राह्मणकहे

ओं आचमनीयं प्रतिगृह्यताम् । दाताकहे

ओं आचमनीयं प्रति गृह्णामि । वरकहे

अथ—मधुपर्क विधानम्

वामंत्रपद कर १ आचमनकरके पुनः २ आचमनतूर्णी करे

ओं आमागन् यशसा मधु मृजवर्च सा तं
मा कुरु प्रियं प्रजाना मधि पतिं पञ्चना मरिष्टिं
तनूनाम् ६ मधुपर्क

वर विनियोग करें

१ हो आमा ग्य इति मंत्र ग्य सितु द्विष प्रथिः अनुष्टुप् छन्दः अर्घ्यो
रत्ना दि धाम्ने विनिः । २ वर विनिः करे हो समुद्रं इत्याधरण क्रयिः
वृत्ती छन्दः वरणा देवता अग्ने ग्य मन्त्रादे विनि यौगः । ३ छुट जल ।
४ वरविनियोग करें हो आमा मधिमि पम्पेष्टी क्रयिः वृत्ती छन्दः आपो
आरोदेवता वरामुग्नेने विनियोगः ।

ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः । ब्राह्मण कहे

ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम् । दाता कहे

ॐ मधुपर्कं प्रति गृह्णामि । वर कहे

वर दाता के हाथ में स्थित मधुपर्क को देखे

१ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ७

वर इस मन्त्रसे मधुपर्क को ले

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहु

भ्या पूष्णो हस्ताभ्यां प्रति गृह्णामि ८

वर इस मन्त्र से ३ बार अनामिकांगुष्ठ से पृथिवी पर गेरे ।

ॐ नमः श्यावास्यान्नश नेयत्त आविद्धं

तत्ते निष्कृतामि ॥ ९ ॥

१ (मधुपर्क दधि मधु घृत) — कां स्य पात्र में हो ऊपर कांस्य पात्र हो
दध्यलाभे पयः कार्यं मध्वलाभे तथागुडः । घृत मतिनिधिं कुर्यात्पयो
वा दधिवा बुधः

२ (दाता विनि० करे) — ॐ मधुपर्क इति मधुच्छन्द ऋषिः बृहती छन्दो
मधुभुक् देवता मधुपर्क दाने विनि०

३ (वरविनि० करे) — मित्रस्य त्वेति मित्रांपतिः ऋषिः पंक्तिः छन्दो
मित्रो देवता मधुपर्क दर्शने विनि०

४ (वरविनि० करे) — ॐ देवस्येति ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः
सविता देवता मधुपर्क ग्रहणे विनियोगः

५ (वर विनि० करे) ॐ नमः श्यावेति प्रजापतिः ऋषिः गायत्री छन्दः
सविता देवता मधुपर्क लोढने विनियोगः ॥

वर मधुपर्क को इस मन्त्र से ३ बार भक्षण करे यदि समग्र न खासके तो शेष अमंत्र देश में गेरे ।

ओं यन्मधुना मधव्यं परमं रूपमन्नाद्यम् ॥ तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोऽसानि ॥ १.० ॥

वरस्त्रिराचभ्य अंगानि स्पृशति

ओं बाङ्गमे आस्येस्तु । मुख स्पर्श करे
ओं नसेमें प्राणोस्तु । नासिका स्पर्श करे
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । नेत्रों को स्पर्श करे
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । २ कानों को स्पर्श करे
ओं बाह्वोर्मे वलमस्तु । २ भुजाओं को स्पर्श करे
ओं ऊर्वोर्मे ओजोस्तु । २ जंघा को स्पर्श करे
ओं अरिष्टानिमे अंगानि तनूस्तन्वासहसन्तु

दाता वर के समीप उदगग्र दर्भ धारकर वर के हाथ में दक्षिणा देकर गौः ३ बार पढ़े । दक्षिणा गोशाला में दे ।

ओं माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्या नाममृतस्य नाभिः प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदिति वधिष्ट मम चामुष्य यजमानस्य पाप्माहत ॥ ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु ॥

१ (वर विनियोग करे) ॐ यन्मधुना इत्यस्य कौत्स रूपिः जगती छन्दः मधुपर्कं देवता मधुपर्कं प्राश्ने विनियोगः ॥

अथाग्नि स्थापनम्

ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करा भस्मादि
रहितां चतुरस्रीं हस्तमिताभूमिं कुशैः परिसमृ-
ह्य तान्कुशां नैशान्यां परित्यज्य गोमंयोदंकेनोप-
लिप्य स्फयेन स्रवेण वा प्रागग्रं प्रादेशमात्रमु-
त्तरोत्तरक्रमेणात्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणाना-
मिकांगुष्ठाभ्यां मृदंमुद्धृत्य तदंशं वारिणाभ्युक्ष्य
तत्र तूर्णीकांस्य पात्रपिहितं बन्दिमानाय्य
प्राङ्मुखः प्रत्यङ्मुखं वह्निमुप समाधाय तद्र-
क्षार्थं कंचत्पुरुषं नियुज्य कौतुका गारात्कन्यामा-
नीय तस्यै वरः वासः परिधापयति ॥

दाता वस्त्र ४ वा मौली वर को दे वर २ कन्या को
पाहिनावे २ आपपहिरे ।

ओं ' जरांगच्छ परिधत्स्व वासोभवा कृष्टी-

अग्नि का स्थण्डिल बनावे उनको कुशों से पोंछ कर कुशाओं को
ईशान्य में फेंके गोमंय से लेपन करे स्फ्या वा स्रव से ३ रेखा उत्तरोत्तर
देकर उनपर से अनामिकांगुष्ठ से मृतिका ऊपर फेंके उस स्थान को जल से
सींचे ऊपर काष्ठ रखकर अग्नि स्थापन करे अग्नि के रसा के लिए किसी को
नियुक्त कर के पुनः कन्या को वर वस्त्र पहिनावे ।

१ वर विनि० करे ओं जरांगच्छेति मन्त्रम्य प्रजापतिः ऋषिः त्रिष्टु-
प्यन्तः वासोदेवता वस्त्र परिधाने विनि० । वर इस मन्त्र से नीचे का वस्त्र
वा मौली कन्या को दे ।

नामामि शस्तिपावा ॥ शतंचजिविशरदः
सुवर्चा रयिंच पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदंपरिध-
त्स्ववासः ११ ॥

वर इस मंत्र से ऊपर का वस्त्र कन्या को दे ।

ओं ' याअकृं तन्नवयन् याअतन्वत याश्च
देव्यस्तं तूनभित स्ततंत्य ॥ तास्त्वा देवीर्जरसे
संव्यय स्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः १२ ॥

वर इस मन्त्र से नीचे का वस्त्र पहिरे ।

ओं ' परिधास्ये यशोधास्ये दीर्घायुष्टाय
जरद्गष्टिरस्मि ॥ शतंच जीवामि शरदः पुरुची
रायस्पोप मभिसंव्ययिष्ये १३ ॥

वर इसमन्त्र से ऊपर का वस्त्र पहिरे ।

ओं ' यशसामाद्यावापृथिवी यशसेन्द्रावृहस्पती ॥
यशो भगश्चमाविदद्यशोमाप्रति पद्यताम् ॥१४॥

फिर वधू वर २ आचमन करें पुनः दाता दोनों को
मंमुक्त करे ।

ततः कन्या प्रदो वधू वरो परस्परं समंजेथा

वर विनि० करे २ ओं याअकृंनन्निति मन्त्रम्य मजापतिः ऋषिः जग-
नीछन्दः विराग्यो देवता वस्त्र परिधाने विनि० ।

वधूविनि० करे ३ ओं परिगारया इति मन्त्रस्याधरणऋषिः स्थिष्टपृष्ठदः
वागो देवता वस्त्र परिधाने विनियोगः ।

१ वर विनि० करे ओं यजमेनि मन्त्रम्य मजापतिः ऋषिः जगनीछन्दः
विनाग्यो देवता वस्त्र परिधाने विनि० ।

मित्यभि मुखीकरोति ॥

ओं' समंजंतु विश्वेदेवाः समापो हृदयानिनौ ॥
समातरिश्वा संधाता समुद्देष्टी दधातुनौ ॥१५॥

अथ हस्त लेपनम्

मं० ओं तत्सदद्येति० श्री लक्ष्मी नाराय-
ण प्रीतये ऽमुक शर्मणो विवाहांग भूतपाणि ग्रहण
प्रतिष्ठा श्री गणेशादि पूजन पूर्विका शुभास्तु ॥

हथलेवा आटे का पेडा कन्या वर के हाथ के मध्य मे रख
कर प्रतिष्ठा करे वर का हाथ नीचे हो शेष शीति देशानुसार करे
वर हथलेवा लेकर मन्त्र पढ़े ।

ओं गृभ्णामिते सौभगत्वाय हस्तं मया
पत्या जरदष्टिर्यथा सः ॥ भगोर्यमा सविता
पुरंधिर्मह्यंत्वादुर्गार्हपत्याय देवाः १ अमोह
मस्मि सात्व ७ सात्व मस्यमो अहं सामा हम
स्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवीत्वम् २ तावेव विवहाव
है सहरेतो दधावहै ॥ प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान्
विद्यावहै बहून् ३ ते संतु जरदष्टयः संप्रियो
रोचिष्णू सुमनस्य मानौ ॥ पश्येम शरदः शतं
जीवेमशरदः शतं ७ शृणुयाम शरदः शतम् ४

१ वर विनि० ओं समंजंतुति मन्त्रस्य अथर्वण रूपिः अनुष्टुप्

विश्वेदेवा देवता परस्परं मैत्री करणे विनियोगः ।

२ हथलेवा अटेका पेडा घृत गुड इल्दी मौली ।

अथ कन्या दान प्रशंसा

अश्वमेधेषु यत्पुण्यं यत्पुण्यं मेपगेरवौ ॥
यत्पुण्यं कार्तिके स्नाने कन्यादाने पितद्भवेत् १
गीयते सर्वशास्त्रेषु वदन्ति मुनयः सदा । दुर्लभं
सर्वधर्मेषु कन्या दानं कलौयुगे ० २

*अष्टवर्षा भवेद्गौरी नव वर्षा च रोहिणी ॥
दशवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला ३
गौरी विवाहिता येनब्रह्मलोकंमजेन्नरः ॥
रोहिण्या प्राप्नुयात्स्वर्गं कन्यया लभते यशः ॥
येनकेनाप्युपायेन नकर्तव्या रजस्वला ॥४॥

अथ यौतक वर्णनम्

पिता अस्यै कन्यायै कुसुम्भ वस्त्र वेष्टितायै
सुभूषितायै दायं दद्यात्
मणि मुक्ताप्रवालानिराजतं हाटकं तथा । कांस्यं
लोहं तथा ताम्रपात्राणि विविधानि च १ अश्वाख्यं
महिषी धेनु गजदंतं महाधनम् ॥ कंठस्य भृषणं

*आज कल प्रायः लोग अष्ट इस श्लोक को नहीं मानते मेरी सम्मति इसके विरुद्ध है जिस दिन से इसके विरुद्ध आचरण हुआ तभी से स्त्रियों में तशन्नज का रोग उदय हुआ क्योंकि यह रोग रजो विकार से होता है ऋतु शुद्धि पुरुष संयोग से बिना नहीं होती इस लिये अधिकावस्था होने से पा तो दुराचार फैलता है या पूर्वोक्त रोग होता है अतः यह प्रमाण निषिद्ध नहीं ।

चापि ताटकं मणि मुद्रिका २ दासिका मेदिनी
चैव मिष्टान्नं बहुधा कृतम् ॥ द्रव्य शक्त्या प्रदा
तव्यं वेदिकायां वरायवै ३ कुरुक्षेत्र समावेदी
कथिता कविभिः पुरा ॥ यत्किञ्चिद्दीयते दानंत
त्सर्वं सफलं भवेत् ॥ ४ ॥

अथ कन्या दानाधिकारी

पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी
तथा । कन्या प्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थः परः परः १

अथ कन्यादान विधानम्

कन्या १ प्रदो यदि सपत्नी को भवेत्तदास्व
पत्नीं दक्षिणतः संस्थाप्य तद्धस्तेन शंखमध्ये
दूर्वा क्षत फल पुष्प जलान्यादाय जामातृ दक्षिण
करो परि कन्या दक्षिण करं निधाय स्ववाम हस्तं
कन्या दक्षिण करोपरि शिरसिवा धृत्वा वर
मभि मुखीकृत्य पठेत् ॥

१ दाता की स्त्री से वस्त्र ग्रंथि गांधे स्त्री दक्षिण बैठे दाता स्त्री के
हाथ से शंख में दूर्वा क्षत फल पुष्प जल लेकर कन्या के हाथको जामाता के
हाथ पर रख कर कन्या के हाथ पर वा सिर पर अपनायाग हाथधर कर
दान करे स्त्री के दक्षिण बैठने में प्रमाण-वर्ग्य दक्षिणे कन्या वन्यायाः
दक्षिणे पिता पितुश्च दक्षिणे माता मातुल्ये मातृ दक्षिणे अन्यत्र गीमंतेर
विवाहेच चतुर्थ्या सह भोजने घृतं दाने मग्ने आदे पत्नी स्तिष्ठति दक्षिणे ।

कन्यादान २ कन्या शीर्षेयता करे दान चन्द्रिका ।

ओं दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्य द्रैव-
तम् ॥ 'विप्रोसौ विष्णु रूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः
एवं समुच्चार्य दाता संकल्पं कुर्यात् ॥

सं० ओं मद्येत्यादि० ऽमुक संवत्सरे ऽमुक
मासे ऽमुक पक्षे ऽमुक तिथौ अमुक वासरे एवं
यथायोग करण मुहूर्ते प्रवर्तमाने ॥

आदौ देवविनायकः सुरगुरु ब्रह्मा शिवः के-
शवः सूर्यश्चन्द्र ग्रहादि तीर्थ ममलंनद्यश्च शैला
वनम् ॥ नागाद्याः कुलदेवता मुनिवरा गंधर्व
यक्षादयः सिद्धा भैरवयोगिनीः प्रतिदिनं कुर्वन्तु
वो मंगलं १

अमुक गोत्रस्या मुक प्रवरस्या मुक शाखा-
ध्यायिनः अमुक शर्मणः प्रपौत्राय ॥ अमुक गो-
त्रस्या मुक प्रवरस्या मुक शाखाध्यायिनः अमुक
शर्मणः पौत्राय । अमुक गोत्रस्या मुक प्रवरस्या
मुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्राय ॥

ओं गौरीश्री कुलदेवता च सुरभि भूमिः
प्रपूर्णा शुभा सावित्री च सरस्वती च सुभगा सत्य

१ सप्तमिपत्र में 'वरो सौ' पठनः ।

२ गोत्रोच्चार में २४, २०, ८, श्लोक चोले जाते हैं यह विद्वानों की
रीति है मर से शुभम रीति ८ श्लोकों वाली हम लिखने हैं, सत्रियादि के
विवाह में ज्ये के स्थान पर पठ उच्चारण करें ।

व्रतारुंधती ॥ स्वाहाजांववती सुरुक्म-भगिनीदुः
स्वप्न विध्वंसिनी वेलाचांबुनिधेःसमीनमकराः
कुर्वन्तुवो मंगलम् २

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखा
ध्यायिनः अमुकशर्मणःप्रपौत्रीम् ॥ अमुकगो-
त्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशाखाध्यायिनः अमुक
शर्मणः पौत्रीम् ॥ अमुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्या-
मुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्रीम् ॥

अश्वत्थोवदरीसचंदनतरुर्मदारकल्पद्रुमाजं-
बुनिंबकदंवचूतसरला वृक्षाश्चये क्षीरिणः ॥ सर्वे
ते वनमाश्रिताःफलयुता विभ्राजिता राजिता
रम्यं चेत्र रथं सुनन्दन वनं कुर्वतु वो मंगलम्॥३॥

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखा
ध्यायिनः अमुकशर्मणःप्रपौत्राय ॥ अमुक
गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाखाध्यायिनः अमुक
शर्मणः पौत्राय ॥ अमुक गोत्रस्यामुक प्रवर-
स्यामुक शाखा ध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्राय ॥
वाल्मीकिश्च सनन्दनन्दनमुनिर्व्यासो वशिष्ठो-
भृगुर्जावालिर्जमदग्निरामजनकागर्गोगिरीगौतमाः॥
माधाता भरतोऽनृपश्चसगरो धन्यो दिलीपो
नलः पुण्यो धर्मसुतो ययाति नहुषौ कुर्वन्तु

बोमंगलम् ॥ ४ ॥

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाखा
ध्यायिनः अमुकशर्मणाः प्रपौत्रीम् ॥ अमुक
गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखाध्यायिनः अमुक
शर्मणः पौत्रीम् ॥ अमुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्या-
मुक शाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्रीम् ॥

ब्रह्मज्ञान रसायनं स्वरधरं वेदास्तथा ज्योतिषं
व्याकरणं च धनुर्धरं जलतरं वीणाचिकित्सा करम् ॥
कोकं वाजितवाहनं नटनृतं सामुद्रिकं लक्षणां विद्या-
नां च चतुर्दशं प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥५॥

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाखाध्या-
यिनः अमुक शर्मणः प्रपौत्राय अमुक गोत्र-
स्यामुकप्रवरस्यामुकशाखाध्यायिनः अमुकशर्मणः
पौत्राय अमुक गोत्रस्या मुकप्रवरस्यामुक शाखा-
ध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्राय ॥

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुराधन्वं तरि-
श्वद्रमा गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजोरंभादिदे-
वांगनाः ॥ अश्वः सप्तमुखस्तथा हरिधनुः शंखो
विपंचामृतं रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु
वो मंगलम् ६

अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शाखा

ध्यायिनः अमुक शर्मणः प्रपौत्रीम् ॥ अमुक
गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशाखाध्यायिनः अमुक
शर्मणः पौत्रीम् ॥ अमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्या
मुकशाखाध्यायिनः अमुक शर्मणः पुत्रीम् ॥

गंगाचैव सरस्वतीच यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयूर्महेंद्रतनया चमणवती वेदिका ॥ क्षि-
प्रावेत्रवती महासुरनदी ख्यातागया गंडकी पूर्णाः
पुरायजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥७॥

अमुक गोत्रायामुक प्रवरायामुक शाखाध्या-
यिनेअमुक शर्मणेवराय ब्राह्मणाय पात्रश्रेष्ठाय
कन्यार्थिने—

ब्रह्मावेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहा-
णांपतिः शक्रोदेवपतिर्यमः पितृ पति स्तारा-
पतिश्चन्द्रमाः ॥ विष्णुर्यज्ञपतिर्हविर्हुतपतिः
स्कंदश्च सेना पतिः सर्वे ते पतयः कुवेर साहिताः
कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥८॥

अमुकगोत्राममुकप्रवराममुक नाम्नीमिमकन्या
सालंकारां परालंकार वर्जिता वस्त्रयुगलाच्छन्नां
प्रजापति देवतां पुराणोक्त शतगुणी कृत-
ज्योतिष्तेमातिरात्रादियज्ञसम फलप्राप्तिकामोज्जे

नवरेणास्यां कन्याया मुत्पादयिष्य माणसंतत्या
द्वादशावरान् द्वादश परान् पुरुषान्पवित्री कर्तुं
मात्मनश्च श्रीलक्ष्मी नारायण प्रीतये भार्यात्वेन
तुभ्यं अमुक गोत्रः अमुक प्रवरः अमुक शर्माहं
संप्रददे ॥

दाता शंख व ला कुशाक्षत जल और कन्या का दक्षिण
हाथ वर को दे वर स्वास्ति ऐसे कहकर द्यौस्त्वा० यह पढ़े ।

ओं द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा मनुगृह्णातु ॥

ॐ अद्यकृतै तत्कन्यादान कर्मणः यथोक्त
फलप्राप्तये कन्यादान प्रतिष्ठार्थ इमां गां
(वादां स्यमानां) सपरि कराम् अमुक गोत्राय
वराय दातुमहमुत्सृजे ॥ इदं सुवर्णमयमंगुलीयकं
अग्निदेवतं । इदं दक्षिणाद्रव्यं चंद्रदैवतम् ॥

ततो वरः पठेत्

ओं कोदात् कस्माअदात् कामोदात् कामा-
यादात् कामोदाता कामःप्रति गृहीता कामैतत्ते ॥

ततो वर आसना दुत्तीर्य पुरोहित पादप्र-
क्षालनं कृत्वा दानं दद्यात् ॥

अथ सावधान गोदान संकल्प

ॐ मद्येत्यादि० श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतये

१ यदि शशियादि हो नो दगायमन् दगापरान् कहे । २ गौ २ मुद्रिका ४ दक्षिणा

लक्ष्मीनारायणे प्रीति द्वाऱाऽमुकशर्मणोमम गृहीत
मानुषीपत्नी दान भारापनु त्यवच्छिन्न निखिल
दुरित दुःस्वप्नदुःशकुनदौर्भाग्यं शांत्युत्तर सुख
सौभाग्यधन सन्तान समृद्धयर्थे इमां गां ॥

वां 'दास्य मानां' गां

सवत्सां 'दोग्ध्रीं' घंटाचामरभूषितांपंच-
रत्न पुच्छां 'सुवर्णशृंगीरौ' प्यखुरीताम्रपृष्ठां कांस्य
पात्रदोहनसंयुक्तां खाद्यवस्तु वातदक्षिणासंयुक्तां
सुपूजितां 'अमुक' गोत्रायामुक प्रवरायामुक शर्मणे
ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥

ओ 'मद्यकृतेतत् लक्ष्मीनारायणप्रीतये गो-
दानं प्रतिष्ठार्य मिदं दक्षिणाद्रव्यममुकदेवतममुक
गोत्रायामुक शर्मणेदातुमहं मुत्सृजे—

गो 'प्रतिनिधिभूतं दक्षिणा' दानम्

ओं 'मद्येत्यादि' 'अमुक शर्मणोममगृहीत
मानुषीपत्नी दानभारापनुत्यर्थं करणीय गोदान
प्रतिनिधि भूतं गोदुग्ध निष्क्रयी भूतम्—

पंचविंशतिपरिमितं राजकीयमुद्राद्रव्यं एवं
२०विंशति—१५पंचदश—१०दश ५) पंच २॥)
सार्द्धं मुद्राद्वयं १॥ सपादरजतं—एतत्परिमितं

दक्षिणा द्रव्यं चंद्र दैवतं सुवर्णं अग्निदैवतं—वा—
श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतयेऽमुक गोत्रायामुक शर्म-
णे ब्राह्मणायदातुमहमुत्सजे—

पूर्ववत्कृतैतत् दक्षिणामपिदद्यात्

नगरवासिभ्योथच विदेशिजनेभ्यश्चदानं
देयमथ च कुरुदोत्र समावेदीतिवाक्याच्चप्रतिगृहं
वाप्रतिजनं दक्षिणा (नांवा) दानसं०

ओं मद्येत्यादि० श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतयेत
त्प्रीतिद्वारा सभार्यस्यामुक शर्मणोमम अद्यदिना
दारभ्यसर्वापच्छांति पूर्वक दीर्घायुर्विपुलधन धा-
न्य पुत्रपौत्राद्य वच्छिन्न संतति वृद्धिस्थिर लक्ष्मी
कीर्तिशत्रुपरा जयसदभीष्ट सिद्ध्यर्थं स्वकीयोद्वाह
लग्नगतदुर्ग्रहनिखिलदुरितदुः शकुनदौर्भाग्य दुर्नि-
मित्तदुः स्वप्न परकृताभिचारकादिजनित
दुष्फलत्वशां त्युत्तर विवाहविध्ययथा वद्वस्तु प्रति
पादनजन्य सकलपापक्षयपूर्वकविश्वमंगलावाप्ति
कामः एतन्नगरस्थित स्वदेशीय विदेशीय ब्राह्म-
णाद्य धिकारि जनानां 'प्रत्येकं ॥ वा

एतन्नगरावस्थित ब्राह्मणानां 'प्रति गृहं ॥ वा
इदानीं कालत आरभ्य 'सायं यावत् ॥ वा

१ हर एक देशी विदेशी के लिये २ नगर के घाण्णों के घर ३ अथ मे संया तक

‘अधुना येके च स्थिता अधिकारिणस्तान्प्रत्येकं ॥

एतत्परि मितम् १) रजतं वा ॥) अष्टनेत्र परिमितं वा ॥) चतुर्नेत्र मितं वा -) द्विनेत्र परिमितं वा -) एकनेत्र परिमितं वा x) अर्द्धनेत्र परिमितं दक्षिणा द्रव्यं अमुक दैवतं दातु मह मुत्सृजे ॥ गोशालार्थं दानम्

ॐ मद्येत्यादि० श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतये तत्प्रीति द्वारा सभार्यस्य ममअमुकशर्मणः सर्वा पच्छांति पूर्वक धनसन्तान सुख समृद्ध्यार्थं एतद्देशस्थित गोशालार्थं एतत्परिमितं दक्षिणा द्रव्यं दातु महमुत्सृजे ॥

‘अमुक स्थान स्थित अनाथालयाय इदं दक्षिणा द्रव्यं ॥

‘अमुक स्थान स्थित पाठशालायां प्राप्त विद्यार्थि जनेभ्यः ॥

वरः आसनो परितिष्ठेत्

अथ भार्या कर्तृक दान संक०

ॐ मद्येत्यादि० पाणिग्रहण परतो भार्यया स्वर्णदानं कर्तव्य मिति प्रमाणमनुमृत्य देशाचार कुलरीतितश्च श्री लक्ष्मीनारायण प्रीतये तत्प्रीति

द्वाराः सभर्तृकाया अमुक देव्या मम निखिला
 रिष्टनिरास पूर्वक सुखसौभाग्यधनसन्तान
 समृद्ध्यर्थं स्वर्णरक्तिकासमसंख्याकवर्षशता
 वच्छिन्न स्वर्लोकवास कामनया एतत्परिमितं
 सुवर्णं सपादमापं सार्द्धमापद्वयं पणमापपरिमितं
 द्वादश मापपरिमितं वा सुवर्णमूल्योपकल्पितं
 दक्षिणा द्रव्यं वा अमुक गोत्राया मुकशर्मणे ब्रा०
 दातु महमुमृत्सृजे कृतेतदक्षिणामपिदद्यात् ॥

अत्र भूयसी दक्षिणादानम्
 तदाचारात् अस्मिन् समये वा हवनां ते
 करणीयम् ॥

नाम करणम्

वरस्तां पत्नीं पाणौगृहीत्वा पठेत्
 ॐ यदै पिमनसा दूरं दिशोऽनुपवमानो वा ॥
 हिरण्यपर्णो वैकर्णः सत्वामन्मनसां करोतु श्री
 अमुकी देवी इति पठेत् ॥ पुनर्न ॥

ततो वेदि दक्षिणस्यां दिशि उत्तरस्या वा
 वारि पूर्णकलशं पुष्पाक्षतचंदन कुशाम्र पत्रौ-
 पयि समन्वितं ऊर्ध्वं तिष्ठतो मोनिनः पुरुषस्य
 स्कंधे अभिषेकं पर्यंतं धारयेत् ॥

परस्परं समीक्षेथामिति दाताबदेत

वरः पठति—

ॐ अधोरचक्षुर पतिघ्न्येधिशिवः पशुभ्यः
सुमनाःसुवर्चाः॥१॥ वारिसूदेव कामास्योनाशन्नो
भवद्विपदेशं चतुष्पदे ॥

ॐ सोमः प्रथमोविविदे गंधर्वो विविद
उत्तरः ॥ तृतीयोग्निष्टेपतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजः
॥ २ ॥ ॐ सोमोददद्गंधर्वायगंधर्वोदददग्नये ।
रयिंच पुत्रांश्चा दाद ग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥ ३ ॥
ॐ सानः पूषाशिवतमामीरय सानःउरू उशती
विहर ।यस्यामुशन्तः प्रहराम शेफंयस्यामुकामा
बहवो निविष्ट्यै ॥४॥

ततो ग्निप्रदक्षिणी कृत्य पश्चादग्ने रहत वस्त्र
वेष्टितं तृणा पुलकं कटं वानिवेशय तदुपरिदक्षिण
चरणं दत्वावधूं दक्षिणतः उपवेशय स्वयमप्यु
पविश्य संकल्पयत्

ॐ मद्ये त्यादि० प्रतिगृहीताया अस्याभा-
र्यायाः पत्नी त्वसिद्धये वैवाहिकहोममहंकरिष्ये—
एतद्द्वारा वा कारयिष्ये—

१ वरअक्षिकी प्रदक्षिणा कर अधिके पश्चिमतर्फ वस्त्रवेष्टितं कुटीमुंज पर
दहिना पादधरकर बैठे पत्नी को दक्षिण में बैठाकर संकल्प करे

२ यदि हवन औरसे करना होतो यहपदे

ततः पुष्पचंदन वस्त्र दक्षिणा आदाय ब्रह्माणं
वृणुयात्

ॐ अद्यकर्तव्य विवाहहोमकर्मणि कृताकृता
वेक्षण रूप ब्रह्म कर्मकर्तृत्वेन एभिः पुष्पाक्षता
दिभिः अमुक गोत्रममुकशर्माणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं
वृणो ।

वरण सामिग्रीं दत्वातत्कर मूले कंकणं बध्वा
तदंगुष्ठं गृह्णीयात् ब्राह्मणः पठेत् वृतोस्मि ॥२॥

वृतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धयासत्य माप्यते ॥

यथा विहितं कर्म कुरु इति दाता वदेत्

ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्

ततो न्यद्वरण संभृतिमादाय संकल्पः

ॐ अद्य कर्तव्य विवाह होमकर्मणि कृताकृता वेक्षण
रूप हवनकर्मकर्तृत्वेन एभिः पुष्पाक्षतादिभिः
अमुक शर्माणं त्वामहं संवृणो ॥

वरण सामिग्रीं ब्राह्मण करे दत्वा कंकणं बध्वा
ब्राह्मणांगुष्ठं गृह्णीयात् ॥

ततो ब्राह्मणः पठेत्

वृतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्
दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते २

यथा विहितं कर्म कुरु—यजमान कहे

अहं करं वाणि—ब्राह्मण कहे

अग्ने : दक्षिणतः शुद्धमासनं धृत्वा तदुपरि

प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिण
क्रमेणानीयात्रत्वंमेब्रह्मा भवेत्यभिधाय उदङ्मुखं
कल्पितांसने समुपवेशयेत् ॥

ततः प्रणीता पात्रं पुरुतः कृत्वा वारिणा
परिपूर्य्य १६ कुशै राच्छाद्य ब्रह्मणो मुखं मवलो
क्य अग्नेरुत्तरतः प्रणीतापात्रंकुशोपरिनिदध्यात्

ततः परिस्तरणम्

‘बर्हिषश्चतुर्थं भागमादाय आग्नेय्या दीशानां
तं ४ ब्रह्मणो अग्निं पर्यंतं ४ नैर्ऋत्याद्यायव्यातम्
४ अग्निः प्रणीतापर्यंतम् ४ धारयेत्—

१. अग्नि से दक्षिण में शुद्धासन पर पूर्वोक्त कुशा रख कर ब्रह्मा को अग्नि
की परिक्रमा करा कर व. मेरा ब्रह्मा हो, ऐसे कह उत्तर मुख ब्रह्मा को बैठ
देवे ।

२ प्रणीता पात्र को आगे धर कर जल से भर कर १६ कुशा उनके
ऊपर रख फिर ब्रह्मा को देख उस के सन्मुख अग्निके उत्तर कुशा पर रखे ।

३ प्रणीता पात्र के ऊपर वाली १६ कुशा में ४ कुशाऽग्नि कोण से ईशान
पर्यंत ४ कुशा ब्रह्मा से अग्नि पर्यंत ४ कुशा नैर्ऋत्या से वायु कोण पर्यंत ४
कुशा अग्नि से प्रणीता पात्र पर्यंत धारण करे पूर्वोक्त—

पश्चिमतः पूर्वे पूर्वे 'वस्तुधारणम्

१ पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयं २ पवित्र करणार्थं
साग्रमनन्तरगर्भं कुशपत्र द्वयम् ३ प्रोक्षणी पात्रं
४ आज्य स्थाली ५ समार्जनार्थं कुशत्रयं ६ उप
यमनार्थं वेणी रूपकुशत्रयं ७ समिधास्तिस्रः ८
स्रुवः ९ आज्यं १० पट्पंचा शतद्वयमुष्टि
पूर्णतंडुलपूर्णपात्रंक्रमेणासादनीयम् तस्यामेवदिशि
अन्यवस्तू निधारयेत् शमीपत्रमिश्रालाजा-दश-
दुपलं कुमारी भ्राता दृढपुरुषः-अन्यान्युपयुक्ता
निवस्तूनिधारयेत्

ततः पवित्र छेदन कुशैः पवित्रे छित्वा ॥

१-पश्चिम से पूर्व पूर्व वस्तु रखे अग्र से अग्रि से उत्तर पश्चिम से पूर्व
२ वस्तु रखे १ पवित्रछेदनार्थं कुशा ३ पवित्र बनाने के लिये मध्य पत्र से
रहित २ कुशा । २-प्रोक्षणी पात्र ३-घृतपात्र ४-समार्जनके लिये ३ कुशा ।
५-उपयमन के लिये वेणी रूप ३ कुशा । ६-छिन्नेकी ३ लकड़ी । ७-स्रुव ।
८-घृत । ९-पूर्ण पात्र । १०-शमीपत्र से मिली हुई फुलियां । ११-पत्थर
१२ कुमारी का भ्राता । १३-दृढ पुरुष और भी वस्तु रखे ।

२-पवित्र छेदन ३ कुशा में पवित्र को छेदन कर मूल भाग छोड़ कर
ऊपर बाटे भाग में पवित्र बनाने पवित्र युक्त हाथ में प्रणीता के जल को
३ बार प्रोक्षणीपात्र में फेंके अनापिका अगुष्ठ से उत्तराग्र पवित्रे लेकर ३
बार प्रोक्षणी जल को ऊपर फेंकें प्रोक्षणी पात्र हाथ में ले ३ बार जल ऊपर
फेंके प्रणीता के जल में प्रोक्षणी प्रोक्षण करे-प्रोक्षणी जल से वस्तु सींचे
अग्रि प्रणीता के मध्य में प्रोक्षणी रखे आज्य पात्र में घृत डाले-घृत तपावे

ततः सपवित्रकरणे प्रणीतोदकाग्निः प्रोक्षणी पात्रे
निधाय ॥ अनामिकां गुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे
गृहीत्वा ॥ त्रिरूपवनम् ॥ ततः प्रोक्षणीपात्रस्य
सव्यहस्तेकरणम् ॥ त्रिरुद्दिगनम् ॥ प्रणीतोदकेन
प्रोक्षणी प्रोक्षणम् ॥ प्रोक्षणीजलेन यथाऽऽसादित
वस्तुसेचनम् ॥ ततोऽग्निं प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी
निधानम् ॥ आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः ततो-
धिश्रयणं । ततोऽज्वलन्तृणादिनाहविर्वेष्टं यित्वा
प्रदक्षिणक्रमेण बन्धौतत्प्रक्षेपः । ततः सुवप्रत-
पनम् ॥ सम्मार्जनं कुशानामग्रैरन्तरतोमूलैर्वाह्यतः
सुवंसंमृज्यप्रणीतो दकेनाभ्युक्ष्यपुनः प्रतप्य सुवं
दक्षिणतो निदध्यात् ॥

ततः आज्यस्याग्रेऽवतारणम् ॥ ततः आज्ये

फिर जलते ३ तृणों से घृत को वेष्टनकर प्रदक्षिण क्रम से अग्नि में डाले फिर
सुव को तपावे सम्मार्जन कुशों के अग्रभाग से अंदिर मूलों से बाहिर को
सुव को सम्मार्जन करे प्रणीता के जल से सुव को सींचे पुनः सुव को तपा
कर दक्षिण हाथ की तर्फ धारण करे—

१ फिर घृत को अग्नि से उतारे घृत को प्रोक्षणीवत् ऊंचा फेंके घृत में
निपिद्ध वस्तु होतो निकाले पुनः प्रोक्षणी वत् ऊंचा फेंके फिर उपपन्न कुशा-
ओं को लेकर सठखड़ा हुआ प्रजापति को मन से ध्यान करता हुआ विनामंत्र
३ छिछोड़े की लकड़ी घृताक्त करके अग्नि में डाले फिर बैठ कर
पवित्र सहित प्रोक्षणी के जल से प्रदक्षिण क्रम से अग्नि को निचे प्रणीता
पात्र में परित्रा रख कर दक्षिण जानु पृथिवी पर लगा कर अग्नि को नम्र
कर अमिका पूजन करे ।

प्रोक्षणी बहुत्पवनं ॥ अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निर
रसनम् ॥ पुनः प्रोक्षणीवत् उत्पवनम् ॥ तत्
उपयमन कुशानादाय । उत्तिष्ठन् ॥ प्रजापतिं
मनसाध्यायन् ॥ तूष्णीं मग्नौ धृताक्तास्तिष्ठः
समिधः क्षिपेत् ॥ तत् उपविश्य सपवित्रं प्रोक्ष-
ण्युदकेन प्रदक्षिण क्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य ॥ प्रणीता
पात्रे पवित्रं निधाय । पातित दक्षिणजानुः ॥
अग्निं प्रज्वाल्य पूजयेत् ॥

ॐ आवाहयेतं पुरुषं महान्तं सुरासुरैरर्चितं
पादपद्मम् ॥ इंद्रादयो यस्य मुखे विशन्ति कुण्डे
विशत्वं सुरलोकनाथ ॥ १ ॥ अग्निं दूतं पुरोदधे
हव्यवाह सुपत्रुवे ॥ देवाँ आसादयादिह ॥ २ ॥ तदे
वाग्निस्तदा दित्यस्त द्वायुस्तदु चन्द्रमाः । तदेव
शुक्रंतद्वहता आपः सप्रजापतिः ॥ ३ ॥ अग्नये नमः
पाद्यादीनि समर्पयामि आग्निं संपूज्य पुनः ॥

स्रुवं संपूजयेत्

आवाहयाम्यहं देवं स्रुवं संसिद्धं मुत्तमम् ॥
स्वाहाकार स्वधाकार वषट्कार समन्वितम् ॥ १ ॥
अष्टां गुलं त्यजेन्मूले अग्रेत्यक्त्वादशागुलम् ॥
कर्तव्यं गोपदाकारं दण्डस्याग्रे तु कंकणम् ॥ इति
स्रुव पूजनम् ॥

अथ कुशेन ' ब्रह्मान्वारब्धः समिद्धतमेग्नौ
सुवेणा ज्याहुतीर्जुहोतितत्राधारादारभ्य द्वादशा-
हुतिषु तत्तदाहुत्यनंतरं सुवावास्थित हुतशेषघृतस्य
प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः ॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापये
न मम ^१ (इति मनसा त्यागमपि)

ॐ इंद्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय न मम ^२
इत्याधारौ (यह आंधार संज्ञक है)

ॐ अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ३

ॐ सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय न० ४
इत्याज्यभागौ (यह आज्य भाग हैं)

* ॐ भूः स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ५ ॐ

१ कुशा से ब्रह्मा के साथ अन्वारम्भ कर के अग्नि में सुवा से घृताहुति
दे उन में आधार संज्ञक १,२ आहुति में हुतशेष घृत को प्रोक्षणी पात्र में फेंके
यहां पर कुशमय ब्रह्मा को बैठाते हैं वह यथा संभव साक्षात् ब्रह्मा हो वा
कुशमय हो उसके साथ कुश ग्रंथि देकर लंबी कुशा वा मंगल सूत्र अपने जानु
के साथ रखे ।

२ मनसा त्याग का मतलब न मम है इस लिए प्रत्येक आहुति के
साथ न मम कहना हम सिर्फ न० ऐसे संकेत लिखेंगे ।

३ ॐ प्रजापतये इत्यादि चतुर्भिः प्राणां ब्रह्मा ऋषिर्मायरी
छंदोऽग्निर्देवता होमे विनियो०

४ ॐ ज्याहुतीनां जपदग्नि भरद्वाजभृगु न ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुभ
च्छदांसि अग्निर्मायुः सूर्यो देवता होमे विनि०

भुवः स्वाहा ॥ इदं वायवे न० ६ उँ स्वः
स्वा० ॥ इदं सूर्याय न मम ॥ ७ ॥

ऐता महा व्याहृतयः

‘त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य
हेडो अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवन्हितमः शो-
शुचानो विश्वाद्देपा०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इद-
मग्नी वरुणाभ्यां न० ॥

उँ सत्वन्नो अग्नेऽवमो भवोतीने दिष्ठो अस्या
उपसो व्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनो वरुण० रराणो-
ब्रीहि मृडीक० सुहवोनएधि स्वाहा ॥ इदमग्नी
वरुणाभ्यां न मम ॥

‘उँ अयांश्चाग्नेस्त्रयनभिशस्तिपाश्च सत्य-
मित्वमयाअसि ॥ अयानोयज्ञंवहास्ययानोधेहि-
भेषज०स्वाहा इद मग्नेनमम ॥

‘उँ येतेशतंवरुणयेसहस्रंयज्ञियाः पाशा-
वितता महान्तः ॥तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु

१-उँ त्वन्नोदे-सत्त्वन्नो-इति द्वयोर्वापदेन ऋपि सिष्टुप्

छन्दः अग्नि वरुणौ देवते सर्व प्रायश्चित्त होमे विनियोगः

२-उँ अयांश्चाग्ने इत्यस्य वाम देव ऋपिसिष्टुच्छन्दः अग्निर्देवता सर्व प्राय-
श्चित्त होमे विनि०

३-उँ ये ते जतमिति यंत्रस्य वामदेव ऋपि सिष्टुच्छन्दः वरुण सवित्रादिलि-
गोक्ता देवताः सर्व प्रायश्चित्त होमे विनि०

विंशे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वा० ॥ इदं वरुणाय
सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्के
भ्यश्च नमः ॥ ११ ॥

१ उँ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्य
म७श्रथाय ॥ अथा वयमादित्य व्रतेतवानागसो
अदितये स्याम स्वा० इदं वरुणाय न० ॥ १२ ॥

ततोऽन्वारंभं विना

उँ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न० १३
उँ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ इदं अग्नये स्विष्ट
कृते नमः १४

१ उदकोप स्पर्शनम्.

॥ एताः सर्वाः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः ॥

॥ अथ राष्ट्रभृद्धोमः ॥

१ उँ ऋतापाद् ऋतधामाग्निर्गंधर्वः स न इदं
ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमृतं साहे

१-ओं उदुत्तममि त्वस्य शुनाशेफ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः वरुणो देवता वारुणी
य पाशोन्मोके होमे विनि०

२ यहां प्रणीता के जल को स्पर्श करे, जहां उदकोपस्पर्शन लिखा हो
यहां प्रणीता के जल को स्पर्श करना ।

३ राष्ट्रभृत्संज्ञकानां ऋतापा इत्यादि द्वादश मन्त्राणां विश्वेदेवा ऋषयः
पशुधान्नछंदो नियमः स्वस्वमंत्रोक्त गुण विशिष्ट गंधर्वाप्सरसो देवता आज्यहो
मे विनियोगः ।

ऋतधाम्ने ऽग्नये गंधर्वाय ॥ नमम ॥ १ ॥

ओं ऋतापाद् ऋतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौ
पथयो ऽप्सरसो मुदोनामताम्यः स्वाहा इदमोप
धिभ्यो ऽप्सरोभ्यो मुदूभ्यः न० २ ॐ स० हितो
विश्व सामा सूर्यो गंधर्वः सनइदं ब्रह्म क्षत्रं पातु
तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं स० हिताय विश्व
साम्ने सूर्याय गंधर्वाय न० ३

ओं स० हितो विश्वस्वामा सूर्यो गंधर्वस्तस्य
मरीचयो ऽप्सरस आयुवो नामताम्यः स्वाहा ॥
इदं मरीचिभ्यो ऽप्सरोभ्य आयुवोभ्यः ॥ न० ४ ॥
ओं सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चंद्रमा गंधर्वः सनइदं ब्रह्म
क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा । वाट् ॥ इदं सुषुम्णाय
सूर्यरश्मये चंद्रमसे गंधर्वाय न० ५ ॥ ॐ सुषु
म्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्राण्य
प्सरसो मेकुरयो नामताम्यः स्वाहा ॥ इदं नक्षत्रे
भ्योप्सरोभ्यो मेकुरिभ्यः न० ६ ॥ ॐ इपिरो
विश्वव्यचावातो गंधर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु
तस्मै स्वाहा ॥ वाट् ॥ इदमिपिराय विश्वव्यच
सेवाताय गंधर्वाय न० ७ ॥ ॐ इपिरो विश्वव्य
चावातो गंधर्वस्तस्यापो ऽप्सरस ऊर्जो नामता

भ्यः स्वाहा । इदं मद्भ्यो ऽप्सरोभ्य ऊर्गभ्यः न०
 ॥ ८ ॥ ओं भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्वः सन इदं
 ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा ॥ वाट् । इदं भुज्यवे
 सुपर्णाय यज्ञायगंधर्वाय न० ॥ ९ ॥ ॐ भुज्युः
 सुपर्णो यज्ञो गंधर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसः स्ता
 वानामताभ्यः स्वाहा ॥ इदं दक्षिणाभ्यो प्सरोभ्यः
 स्तावाभ्यः न० ॥ १० ॥ ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा
 मनो गंधर्वः सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा ॥
 वाट् ॥ इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गंधर्वा-
 य न० ॥ ११ ॥ ॐ प्रजापति विश्वकर्मा मनोगंध-
 र्वस्तस्य ऋक् सामान्यप्सरस एष्ट्यो नामताभ्यः
 स्वाहा ॥ इदं ऋक् सामभ्यो ऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यः न०
 ॥ १२ ॥ इति राष्ट्रभृत होमः ॥

अथ जया संज्ञक होमः

ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय न० ॥ १ ॥
 ॐ चित्तिश्च स्वाहा ॥ इदं चित्त्यै न० ॥ २ ॥ ओं
 आकूतं च स्वा० । इदमाकूताय न० ॥ ३ ॥ ओं
 आकूतिश्च स्वा० ॥ इदमा कूत्यै न० ॥ ४ ॥
 ओं विज्ञातं च स्वाहा ॥ इदं विज्ञाताय न० ॥ ५ ॥

१ जया संज्ञकानां चित्तं चेत्यादित्रयो दशानां विधेदेवा रूपयः पञ्च-
 प्रान्न छन्दो नियमः, ययम पदोक्ता देवता आज्य होमे विनि० ।

ओं विज्ञातिश्च स्वाहा ॥ इदं विज्ञात्यैनं ॥ ६ ॥
 ओं मनश्च स्वाहा ॥ इदं मनसेन ॥ ७ ॥
 ओं शक्यश्च स्वाहा ॥ इदं शकरीभ्यः नं
 ॥ ८ ॥ ओं दर्शश्च स्वाहा ॥ इदं दर्शाय नं
 ॥ ९ ॥ ओं पौर्णमासंच स्वाहा ॥ इदं पौर्ण-
 मासाय नं ॥ १० ॥ ओं बृहच्च स्वाहा । इदं बृहते
 नं ॥ ११ ॥ ओं रथंतरंच स्वाहा । इदं रथंतरा-
 यनं ॥ १२ ॥ ओं प्रजापतिर्जयानिद्राय वृष्णे
 प्रायच्छुद्रुग्रः पृतना जयेषु तस्मै विशः समनमंत
 सर्वाः सउग्रः सइहव्यो बभूव स्वाहा ॥ इदं प्रजा-
 पतये नमः ॥ १३ ॥ इति जया संज्ञक होमः ॥

अथाभ्यातान होमः

ओं अग्नि भूताना मधिपतिः समावत्व
 स्मिन् ब्राह्मण्यास्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरो
 धायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा ।
 इदं मग्नये भूताना मधिपतये नमः ॥

ओं इंद्रोज्येष्ठानामधिपतिः समावस्मिन्
 ब्राह्मण्यास्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायाम
 स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा ॥ इदं मिन्द्रा-

१ अभ्यातान भूताना अग्निभूताना यियादि अष्टादशानां विश्वदेवा
 ऋषयः पशुशस्त्रादि नियमः मध्य पदोक्ता देवता आज्य होमे विनियोगः ।

यज्येष्ठानामधिपतयेनमम् ॥२॥ उँयमः पृथिव्या
अधिपतिःसमावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्या
माशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यांदेवहूत्या
७स्वाहा ॥ इदंयमायपृथिव्या अधिपतयेनमम् ॥३॥

अत्र प्रणीतोदकस्पर्शनम्

उँ वायुरंतरिक्षस्याधिपतिः समावत्वस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायाम
स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७स्वाहा ॥ इदंवाय
वेंस्तरिक्षस्याधिपतयेनमम् ॥४॥

उँ सूर्यो दिवाअधिपतिः समावत्वस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम
स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७स्वाहा ॥ इदं सूर्या
यदिवाअधिपतये ॥५॥

उँ चंद्रमानक्षत्राणामधिपतिःसमावत्वस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायाम
स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या७स्वाहा ॥ इदंचंद्रमसे
नक्षत्राणा मधिपतयेन० ॥६॥

ओं बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिःसमावत्वस्मि
न् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधा-
याम स्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या७स्वाहा इदं बृह-

स्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न० ॥७॥

ओं मित्रः सत्यानामधिपतिः समावत्व
स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधा
यामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याँ स्वाहा ॥ इदं
मित्राय सत्यानामधिपतये न० ॥८॥

ओं वरुणोऽपामधिपतिः समावत्वस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधाया
मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याँ स्वाहा ॥ इदं वरु-
णाय अपामधिपतये न० ॥९॥

ओं समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः समावत्व
स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरो
धायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याँ स्वाहा ॥
इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये न० ॥१०॥

ओं अन्नं साम्राज्यानामधिपतिः समा-
वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याँ
स्वाहा ॥ इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये न मम
॥ ११ ॥ ॐ सोमोऽपधीनामधिपतिः समावत्व-
स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याँ
स्वाहा ॥ इदं सोमाय ओपधीनामधिपतये न०

॥१२॥ ओं सविता प्रसवाना मधिपतिः समावत्व-
स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरो
धायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ॥
इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतयेन० ॥ १३ ॥ ओं
रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-
स्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ॥ इदं रुद्राय
पशूनामधिपतयेन० ॥ १४ ॥

अत्र प्रणीतोदक स्पर्शनम्

प्रणीता के जल को स्पर्श करे।

ओं त्वष्टारूपाणामधिपतिः समावत्वस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम
स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ॥ इदं
त्वष्टे रूपाणामधिपतये न० ॥ १५ ॥ ओं विष्णुः
पर्वतानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-
स्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ॥ इदं विष्णवे
पर्वतानामधिपतयेन० ॥ १६ ॥ ओं मरुतो
गणाना मधिपतय स्तोमावत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-
स्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ॥ इदं मरुद्भ्यो

गणाना मधिपतिभ्यः न० ॥ १७ ॥ ओं पितरः पिता
महाः परेऽवरेततास्ततामहा इह मावंत्वस्मिन् ब्रह्मण्य
स्मिन् क्षत्रेऽस्थामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्यां ७ स्वाहा ॥ इदं पितृभ्यः
पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहे-
भ्यः न० ॥ १८ ॥

अत्र प्रणीतोदक स्पर्शनम्

येदि हवन कर्ता ऽन्यः पुरुषः स्यात्तर्हि स्व
यं पंचा हुतीर्वरो जुहुयात् ।

अथाज्यसंज्ञकहोमः

ॐ अग्नि रैतुप्रथमो देवतानां ७ सौस्यै प्रजां
मुंचतु मृत्यु पाशात् । तदयं ७ राजावरुणो नुम
न्यतां यथेयं ७ स्त्री पौत्रमधनरोदात् स्वाहा ॥
इदमग्नये न० ॥ १ ॥ ॐ इमामग्निं स्वायतां गार्हप-
त्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः अशून्योपस्था-
जीवितामस्तु माता पौत्रमानंदं मभिप्रबुध्यता मिथ
७ स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ॥ २ ॥

१ पद्धति यों में इसी मन्त्र से कही २ ऋषय के मध्य में वस्त्र
तानना लिखा है ॥ यदि हवन करने वाला दूसरा हो तो यह ५ आहुति
आप वर करे मंत्र पड़े ॥

२ ॐ अग्निरैतु इत्यादि चतुर्महाणां प्रजापतिः रूपिस्त्रिपुण्ड्रः
मन्त्रोक्ता देवता आज्यहोमे विनियोगः—

ओं स्वस्तिनो ऽग्नेदिवा पृथिव्या विश्वानि-
धेह्यथायजत्रा ॥ यदस्यां महिदिवि जातंप्रशस्तं
तदस्मा सुद्रविणं धेहिचित्रं स्वाहा ॥ इदमग्नये न० ३।

ओं सुगन्तुपंथाप्रदिशन्नएहिज्येतिष्मद्धेह्य
जरन्न आयुः ॥ अपैतुमृत्युरमृतं न आगाद्वैवस्वतो
नो अभयंकृणोतुस्वाहा ॥ इदमग्नये न० ॥ ४॥

पञ्चेतिष्वस्मिन्मंत्रेऽर्पण विधिः

ओं परंमृत्योऽनुपरेहिपंथायस्तेऽन्य इतरो
देवयानात् ॥ चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमिमानः
प्रजां शरीषो मोतवीरान्स्वाहा ॥ इदं वैव
स्वताय न० ॥ ५॥ प्रणीतोदकस्पर्शः । अत्र प्राङ्
मुखौ वधूवरौ-वरांजलि पुटोपरि संलग्नवध्वंजली
शूर्पास्थित घृताभिघारितशमीपत्र मिश्र लाजानू
वधूभ्राता प्रक्षिपति वधूवरंजली प्रक्षिपति वरः
जुहोति ।

ओं अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत ॥ सनो-

१ पद्धति यों में इसी मंत्र से वर वधूके मध्य में वस्त्र तानना लिखा है ।

२ ओं परं मृत्यो इति मंत्रस्य संकर्षण ऋषिः स्विष्टपुच्छदः मृत्युदेवता
आज्यहोमे विनि० ।

३ शूर्प (छंजली) में घृताभिघारित शमीपत्र और फुलियां हों ।

४-ओं अर्यमणं मित्यादि मंत्राणां दध्यङ्गार्थे ऋषिः अनुष्टुप्छंदः

अग्निदेवता आज्यहोमे विनि०

ऽर्यमादेवः प्रेतो मुंचतु मापतेः स्वाहा ॥ इदं
मर्यम्णे न० ॥१॥ ॐ इयंनार्युपब्रूते लाजानावपं-
तिका । आयुष्मानस्तु मेपतिरेधंतांज्ञातयोमम
स्वाहा ॥ इदमग्नयेन० ॥२॥

ॐ इमांल्लाजानावपाम्यग्नौसमृद्धिकरणंतव ॥
ममतुभ्यंचसंवन्नंतदीर्घरन्तुमन्यतामियंस्वाहा ॥
इदमग्नयेनमम ॥३॥

ततोवरः सांगुष्ठंवधूदक्षिणहस्तंगृहीत्वा मंत्रंपठेत्

ॐ गृभ्णामितेसौभगत्वाय हस्तंमया पत्या
जरदष्टिर्यथासःभगोर्यमासविता पुरंधिर्मह्यंत्वादुर्गा
ह्यत्याय देवाः ॥ १ ॥ अमोहमस्मिसात्वंसात्व
मस्यमोऽहं सामाहमस्मिऋत्त्वंद्यौरहंपृथिवीत्वम
॥ २ ॥ तावेवविवहावहैसहरेतोदधावहैप्रजांप्रजन-
यावहै पुत्रान्विधावहैवहून् ॥ ३ ॥ तेसंतुजरदष्टयः
संप्रियौरोचिष्णुसुमनस्यमानौ । पश्येम शरदः
शतं जीवेम शरदःशतं शृणुयामशरदःशतम् ॥

वर पूर्व मुख होय पूर्व रखे पत्थर पर वधू को दक्षिणपाद
से चढ़ावे ।

ॐ आरोहेममश्मान मश्मेवत्वंस्थिराभव ॥

१ फिर वर अंगुष्ठ सहित वधू का दक्षिण हाथ एकट्ट कर मंत्र पढ़े ।

२-ॐ आरोहे ममित्य स्याथर्वण ऋषि रघुप्रछंदः वधूदेवता अश्मा
रोहणे विनियोगः ।

अभितिष्ठतृतन्यतोऽववाधस्च तृतनायतः ॥१॥

वधू पत्थर पर पांव रखे तब वर मंत्र पढ़े ।

ओं सरस्वती प्रेदमवसुमगे वाजिनीवतीयां
त्वा विश्वस्य भूतस्यप्रजायामस्याग्रतः ॥ यस्यां
भूत^१समभवद्यस्यां विश्वमिदंजगत् । तामद्यगा
थांगास्यामि यास्त्रीणामुत्तमं यशः ॥१॥

फिर आगे वधू पीछे वर प्रणीता ब्रह्मासहित अग्नि को
परिक्रमा करे ।

ओं तुभ्यमग्नेपर्यवहन सूर्या वहतुनासह ॥
पुनः पतिभ्योजायांदाग्ने प्रजया सह ॥१॥

एवं सर्वकर्म-लाजाहोम सांगुष्ठ हस्त ग्रहणा
श्मारोहण गाथागानाग्नि प्रदक्षिणानि पुनरपि द्वि
स्तथैव कर्तव्यानि एतेन नवलाजाहुतयः सांगु-
ष्ठहस्त ग्रहणत्रयंच संपद्यते ॥

तैत तृतीय परिक्रमांते आसन विपर्य-
यःकार्यः ॥ ततोऽत्रातृदत्तलाजाभिर्वधूर्जुहोति ॥

१-ओं तुभ्यमग्ने इति मंत्र स्थावर्येण ऋषि रघुष्टुछंदोऽग्निर्देवता परि-
क्रमणे विनियोगः

२ ऐसे लाजाहोम सांगुष्ठ हस्त ग्रहण अश्मारोहण गाथागान अग्नि
प्रदक्षिणा दो बार ऐसे करे इस से ६ लाजा होम हस्तग्रहण ३ होते हैं ।

३ तीसरी परिक्रमा के अनन्तर वधू के स्थान वर और वर के स्थान
पर वधू बैठे ।

ॐ • भगाय स्वाहा ॥ इदं भगायनं •

ततश्चतुर्थं परिक्रमणं स्वस्थाने स्थित्वा वरो जुहोति

ओं प्रजापतये स्वा० । इदं प्रजापतये न० १

तत आ लेपनेनोत्तरकृत सप्तमण्डलेषु सप्त पदा
क्रमेण वरः कारयेत् ॥

१ ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु

धने धान्यं च मिष्टान्नं व्यंजनाद्यं च यद्गृहे ॥

मदधीनं च कर्तव्यं वधूराद्ये पदेऽब्रवीत् १ यद्वा—

सुखं दुःखानि सर्वाणित्वया सह विभुज्यते ॥ यत्र

त्वं तदहं त्वत्र कैन्यकैकपदेऽब्रवीत् ॥ २ ॥

२ ॐ द्वे ऋजौ विष्णुस्त्वा नयतु

कुटुम्बं पालयिष्यामि ते स दामं जुभापि-

णी ॥ दुःखं धीरां सुखे हृष्टा द्वितीये सा ब्रवी-

द्वरम् ॥ १

३ ॐ त्रीणिरायस्पापाय विष्णुस्त्वानयतु ॥

ऋतौ काले मुचिः स्नाता क्रीडयामित्वया सह ॥

१ माई से टीलाजा हुति शर्पे कोण से वधू आहुति दे ।

२ आगं वर पीछे वधू चुपचाप चतुर्थं प्रदक्षिणा कर अपने २ आसन पर बैठे वर ब्रह्मा से कुशारभ कर के घृत से हवन करे हुत शेषं प्रीक्षणी में चले ।

३—पट्टे पर ७ हल्दी मंडल करके सप्त पदी करे ।

नहिपरपतिंयाया तृतीयेसाञ्ज्वीद्वरम् ॥ १ ॥

भर्तुर्भक्ति परा नित्यं सदैव प्रियवादिनी ॥

भविष्यामि पदेचैव तृतीये साञ्ज्वीद्वरम् ॥ २ ॥

४ ॐ चत्वारिमांयोभवायविष्णुस्त्वानयंतु

लालयामि च केशांतं गंधमाल्यानुलेपनैः ॥

कांचनै भूषणै स्तुभ्यं तुरीयेसाञ्ज्वीद्वरम् ॥ १ ॥

आर्तार्ते मुदितेहृष्टाप्रोषितेमर्लिनाकृशा ॥

मृतेचैव मरिष्यामि साचतुर्थे पदेऽब्रवीत् ॥ २ ॥

५ पंचं पंशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ॥

सखी परि वृतानित्यं गौर्यारोधनतत्परा ॥

त्वयिभक्ता भविष्यामि पंचमेसाञ्ज्वीद्वरम् ॥ १ ॥

ॐ षट् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु

६ यज्ञे होमे च दानादौ भवेयंतव वामतः ॥

यत्रत्वं तत्रतिष्ठामि पदेषष्ठे ऽब्रवीद्वरम् ॥ १ ॥ यद्वा

त्वयाहं संयुतानित्यं नापिवंच यितुंक्षमा ॥ उभं-

योः प्रीतिसंभूतिः पदेषष्ठेऽब्रवीद्वरम् ॥ २ ॥

७ ओं सखेसप्तपदा भवसामानुव्रताभव

विष्णुस्त्वानयतु ॥

१ होमयज्ञादिदानेषु भवतश्चसहायिनी ॥

धर्मार्थ कामकार्येषु सप्तमे साञ्ज्वीद्वरम् ॥ यद्वा-

सहसखाचनौ विष्णुर्ममत्वंभर्तृतां व्रज ॥ व्रंक्षणा

कृतपूर्वेण विधानेन कुलोत्तम ॥—॥ वरवाक्यम्॥

ॐ मदीयचित्ता नुगतंचचित्तं सदामदाज्ञा
परिपालनंच ॥ पतिव्रताधर्म परायणात्वंकुर्याः
सदा सर्वमिदं प्रयत्नात् ॥ ७॥

इति सप्त पदी विधानम्

ततो वर उपविश्य पुरुष स्कंधे स्थितात्कुं
मादाम्रपल्लवेन जलमानीय तेनैववधूं मूर्द्धन्य
भिर्पिचेत्—

ओं आपः शिवाःशिवतमाः शान्ताः शान्त
तमास्ते कृण्वंतु भेषजम् १ ।

फिर और जल लेकर धपू औरअपने पर सिंचि

ओं आपो हिष्टामयो भुवः १ ओं तान ऊर्जे
दधातन २ ओं महेरणायचक्षसे ३ ओं योवः शिव
तमोरसः ४ ओं तस्यभाजयतेहनः ५ ओं उशर्ता
रिव मातरः ६ ओं तस्मा अरंग मामवः७ ओं य
स्य क्षयायजिन्वथ ८ ओं आपोजनयथाचनः १०

१ फिरवर घंठ कर पुरुषस्कंध पर स्थित कुंभ से आम्रपत्र से जललेकर
धपूके मस्तक पर सिंचि

२ ओं आपः शिवा इति मंत्रस्य मन्त्रापनिः ऋषिःयजुः छंदःआपोदेवता
मार्जने विनि योगः

३ ओं आपोरिष्टे त्याद्रि श्रुचस्य मिथुद्वीप ऋषि गीयत्रीछंदः आपो देव
ता मार्जने विनि० । ४ शिवित्री पर सिंचि । ५ अपने ऊपर सिंचि ।

यदि दिन में विवाह होतो सूर्य को देख ऐसे वर कहे
सूर्योऽदीक्षस्वेति संबोधयति वधूर्मंत्रं पठित्वा
सूर्यं पश्येत् ॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येमश
रदः शतं जीवेम शरदः शतं ७ शृणुयाम शरदः
शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः
शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥

रात्रौ विवाहश्चेत् । ध्रुवं उदीक्षस्व शति संबोध
यति वरः ॥ वधूर्मंत्रं पठित्वा ध्रुवं पश्येत् ।

ओं ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पो
ष्यामयिमह्यं त्वादाहृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती
संजीव शरदः शतम् २

अर्थ वरो वधू दक्षिणांसस्योपरि हस्तं नीत्वा
तस्या हृदयमालभेत् ॥

१ कन्या मंत्र पढ़े वा उस के स्थान वर वा आचार्य ।

२ ओ तच्चक्षुः इति मंत्रस्य दध्यद्वापर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक्
छन्दः सूर्यो देवता सूर्य दर्शने विनियोगः ।

३ यदि रात्रि में विवाह हो तो वर कहे ध्रुवको देखे—वधू ध्रुव को देखे ।

४ ओं ध्रुवमसीति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः पंक्तिः छन्दः मजापतिर्देवता
ध्रुवदर्शने विनियोगः ।

५—वर वधू के कंधे पर हाथ लेजाकर पुनः हृदय को स्पर्श करे ।

ही लिखा गया सिर्फ जहां से हवन करना होता है उस ही प्रकार को लिखा गया है यदि चतुर्थ रात्रि में विधान से चतुर्थी कर्म कराना हो तो विद्वान् भिन्न चतुर्थी कर्म पद्धति के अनुसार करायें ॥ यदि चतुर्थी कर्म न कराना ही तो आगे का कार्य पृष्ठ ८६ से पूर्णपात्र दानादि कर्म करना ॥

अथचतुर्थीकर्म ॥ युग्मकाष्ठोपरिवरउप-
विशेत् ॥ भर्जित तण्डुलान् प्रणीताजलेन प्र-
क्षाल्य पुनरन्यपात्रेदुग्धेपाचयेत् सिद्धेपाके उत्तार्य
पवित्रेण त्रिरुद्दिगन्मः पृथूकदकपात्रं (प्रणीता
पात्रं) अग्रेरुत्तरतः संस्थाप्य स्थालीपाकं स्वपुर-
तो निदध्यात् ॥

प्रतिज्ञा संकल्पः ॥

ॐ मद्येत्यादि० अमुक शर्मणो ममास्या
भार्यायाः सोम गंधर्वाग्न्युपभुक्तदोष परिहारार्थं
श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं विवाहांगभूत कर्तव्य चतुर्थी
कर्माहं करिष्ये ॥ ब्रह्म वरणं तथा होतृवरं ॥

ॐ मद्येति० अमुक शर्मणो मम विवाहां-

१ हलपताली पर वर बैठे फुलियां मणीता के जल से धोकर और पात्र में दूध में पकावे फिर उतार कर पवित्रे से ३ बार ऊपर फेंके फिर मणीता पात्र को अग्नि के उत्तर रखे फुलियां वाला पात्र अपने आगे रखे ।

२ पुनः प्रतिज्ञा संकल्प करे ॥

३ ब्रह्मा तथा दाता का वरण करे अथवा पूर्वकल्पित ब्रह्मा तथा दाता की पूजा करे ।

गभूत चतुर्थी होमकर्मणि कृताकृतावेक्षण रूप
ब्रह्मकर्मकर्तुं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे तथा चहोतृकर्म
कर्तृत्वेना मुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहंवृणे वृतो-
स्मीति प्रतिवचनं ॥

कुशा से ब्रह्मा से अन्वारंभ करे आहुति शेष प्रोक्षणी में डारे ।

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये
नमम ॥ १ ॥ ओं इंद्राय स्वाहा० । इदमिंद्राय
न० ॥ २ ॥ इत्याधारौ ॥ ओं अग्नये स्वाहा ॥
इदमग्नये न० ॥ ३ ॥ ओं सोमाय स्वा० ॥ इदं
सोमाय न० ॥ ४ ॥ इत्या ज्यभा० ॥

घृ१ की ५ आहुति करे और शेष प्रोक्षणी पात्र में डारे
ब्रह्मा से अन्वारंभ न करे ।

ओं अग्ने प्रायश्चित्ते त्वंदेवानां प्रायश्चित्ति-
रसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामियास्यै पति
घ्नीतनूस्ता मस्यै नाशय स्वाहा ॥ इदमग्नये
नमम ॥ १ ॥

ओं वायो प्रायश्चित्ते त्वंदेवानां प्रायश्चित्ति
रसि ब्राह्मण स्त्वानाथकाम उपधावामियास्यै
प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशयस्वाहा ॥ इदं वायवे
न० ॥ २ ॥ ओं सूर्यप्रायश्चित्ते त्वंदेवानांप्राय
श्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामिया

स्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यैनाशय स्वा० ॥ इदं
सूर्याय न० ॥ ३ ॥ ओं चंद्रप्रायश्चित्तेत्वं देवानां
प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मण स्त्वानाथकामउपधावा
मि यास्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यैनाशय स्वाहा ॥
इदं चंद्रमसेन० ॥ ४ ॥ ओं गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं
देवानांप्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकाम उप-
धावामियास्यैयशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वा०॥
इदंगंधर्वाय न० ५ ।

फुलियां को तसकरे फुलियां से १ आहुतिकरे

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतयेन० ६

फिरब्रह्मासे अन्वारम्भ हो सातवीं आहुति घृत फुलियां से करे
ओं अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा॥इदमग्नये स्विष्टकृतेन० ७

फिर ६ आहुति घृतसे करे हुतशेष प्रोचणीमें डारे ब्रह्मासे

अन्वारंभकरे

ओं भूःस्वाहा ॥ इदमग्नयेन० १ ओं भुवःस्वाहा

इदं वायवे न० २ ओं स्वःस्वाहा । इदं सूर्याय

न० ३ ओं त्वन्नो अग्ने वरुणास्य विद्वान्देवस्यहेडो

अवया सि सीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वन्हितमःशोशुचा

नो विश्वाद्देपाऽसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वा०॥ इदमग्नी

वरुणाभ्यां न० ॥ ४ ॥

ओं सत्त्वन्नोअग्नेऽवमोभवोतीने दिष्टोअस्या

उपसोऽयुष्टौ ॥ अवयक्ष्वनो वरुणः सराणो ब्रीहि
 मृदीक्रुः सुहवो नरा धिस्वा ॥ इदमग्नयेन ॥ ५ ॥ ओं
 अयाश्चाग्नेस्य नमिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि ॥
 अयातो यज्ञं बहास्ययानो धेहि मे प्रज ॥ स्वा ॥
 इदमग्नयेन ॥ ६ ॥ ओं ये ते शतं वरुणये सहस्रं-
 यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः ॥ तेभिर्नो अद्य स-
 वितो वविष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वा ॥ इदं
 वरुणाय सावित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
 स्वर्केभ्यः न ॥ ७ ॥ ओं उदुत्तमं वरुणपाशमुस्म-
 द्वाधमं विमद्व्यमं ॥ अथावयमादित्य
 व्रतेतवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरु-
 णाय नमम ॥ ८ ॥ ओं प्रजापतये स्वा ॥ इदं
 प्रजापतयेन ॥ ९ ॥

फिर सुवे से उस घृत को मूँघे आचमन करके ब्रह्मा होता
 ऋत्विक् जुनों को पूर्ण पात्रावा दक्षिणा दे ॥ १३ ॥

॥ ओं मद्यकृतैतद्विवाह कर्म गभूतचतुर्थी होम
 कर्मणि कृता कृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं
 पूर्णपात्रं प्रजापतिदेवतं अमुकगोत्रायामुक्कशर्म
 णे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं से प्रददे ॥ एवमन्ये
 भ्योपि दद्यात् ॥

तं तं स्वस्तीति प्रतिवचनं ब्राह्मणाः वदन्तु ॥

ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः

ब्रह्मा की गांठ छोड़ें

तत आम्नपल्लवेन प्रणीता जलेन वरः स्वशिर
सि मार्जयेत्

प्रणीता के जल से आम्नपत्र से अपने सिर पर सोंचे

ओं सुमित्रियान आपओषधयः सन्तु ॥

फिर प्रणीता पत्र को ईशान्य में उलटा कर मन्त्र ।

ओं दुर्मित्रिया स्तस्मै संतु योऽस्मान्द्वेष्टि
यंच वयं द्विष्मः इति ॥

फिर जो पूर्व १६ कुंशा आरंभ की थी उन्हें उठाकर
घृत से मिलाकर हाथ से हवन करे ॥

ओं देवागातु विदोरातु वित्वागातु मित ॥

मनसस्पत इमदेवयज्ञ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

इदं वाताय नमः ॥

वर जल लेकर आम्न के पत्र से वधू के सिर पर अभिषि-
चन करे ।

ओं याते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी
यशोघ्नी निदितातनूजार्घ्नी तत एनां करोमि

१-ओं सुमित्रियान इति यज्ञस्य विष्णुमित्रः ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः पित्रो
देवता मार्जने विनि०

२-ओं देवा इति मनसस्पतिः ऋषिः विराट् छन्दः वायुदेवता वरिहोमे
नियोगः ।

साजिर्यत्वं मयासह— श्रीअमुकी देवी इति ।

वर फुलियां में से थोड़ी २ चरु वधू को ख ले ।

ॐ प्राणैस्तेप्राणान्संदधामि ॥ १ ॥ ॐ अ-
स्थिभिस्ते अस्थीनिसंदधामि ॥ ३ ॥ ॐ त्वचाते
त्वचंसंदधामि ॥ ४ ॥

वर वधू के हृदय को स्पर्श कर के मन्त्र पढ़े ।

ओं यत्तेसुशीमे हृदयादिवि चन्द्रमसि श्रियम्
वेदाहं तन्मांतद्विद्यात् ॥ पश्येमशरदः
मशरदःशत ७ शृणुयाम शरदःशतम् ॥

यदि चतुर्थी कर्म किया हो तो आगे पृष्ठ ८७ से पूर्णाहुति

ततो ब्रह्मणे पूर्णापात्रं दद्यात्

ओं मद्येत्यादि० कृतैतद्विवाह हे
कृता कृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म
पात्रं सोपकरणं प्रजापतिदेवतं
शर्मणे ब्राह्मणाय

ऐसे होता आचार्य ऋत्विक् जनों को
दान करे

ओं स्वस्तिऐसे ब्राह्मण कहें
वर गवित्र सहित प्रणीता के जल से अपने
ओं सुमित्रियान आपओपधयः

फिर प्रणीता पात्र को इशान में उलटा करके रखे

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि
यंच वयं द्विष्मः ॥

फिर अग्नि के चौंके रखी कुशा ले घृत से भिगो कर
हाथ से हवन करे ।

१ ओं देवागातु विदोगातुं वित्त्वागातु मित
मनस्पत इमं देवयज्ञं स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥ इदं
वातायनं ॥

फिर बार उठ कर बघू से स्पर्श की हुई पूर्णाहुति करे
घृत पुष्पलाल दरियाई श्री फल वा पूगीफल से पूर्णाहुति करे

ओं मूर्ध्ना नदिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत
आजातमाग्निम् ॥ कविः संम्राजमतिथिं जनानां
मासन्नापात्रं जनयंत देवाः स्वाहा ॥ इदमग्नये नमः

श्री फल के ऊपर घृत धाग देवे

ओं वसोः पवित्रमसि शत धारं वसोः पवि
त्रमसि सहस्रधारं । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः
पवित्रेण शतधारेण सुष्वः काम धुक्ष्वः १

१ ओं देवा इति मनसस्पतिः ऋषिः विराट् छन्दः वायुदेवता वहिर्होमे
विनियोगः ।

२ ओं मूर्ध्ना नमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः वैश्वानरो देवता त्रिष्टुप्
छन्दः पूर्णाहुति होमे विनियोगः ।

साजयित्वं मयासह— श्रीअमुकी देवी इति ।

वर फुलियां में से थोड़ी २ चरु वधू को ख खे ।

ॐ प्राणैस्तेप्राणान्संदधामि ॥ १ ॥ ॐ अ-
स्थिभिस्ते अस्थीनिसंदधामि ॥ २ ॥ ॐ त्वचाते
त्वचंसंदधामि ॥ ४ ॥

वर वधू के हृदय को स्पर्श कर के मन्त्र पढ़े ।

ओं यत्तेमुशीमे हृदयंदिवि चन्द्रमसि श्रियम् ॥
वेदाहं तन्मांतद्विद्यात् ॥ पश्येमशरदः शतं जीवे-
मशरदः शत ७ शृणुयाम शरदः शतम् ॥

यदि चतुर्थी कर्म किया हो तो आगे पृष्ठ ८७ से पूर्णाहुति करनी ।

ततो ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दद्यात्

ओं मघेत्यादि० कृतैतद्विवाह होमकर्मणि
कृता कृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्ण
पात्रं सोपकरणं प्रजापतिदैवतं अमुकगोत्रायामुक
शर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मरूपिणे तुभ्यमहं संप्रददे ॥

ऐसे होता आचार्य ऋत्विक् जनों को पूर्णपात्र वा दाक्षिणा
दान करे

ओं स्वस्ति ऐसे ब्राह्मण कहें

वर गवित्र सहित प्रणीता के जल से अपने सिर पर सिंचे
ओं सुमित्रियान आपओपधयः संतु ॥

फिर प्रणीता पात्र को इशान में उलटा करके रखे

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि

यंचवयं द्विष्मः ॥

फिर अग्नि के चौके रखी कुशा ले घृत से भिगो कर हाथ से हवन करे ।

१ ओं देवागातु विदोगातुं वित्वागातु मित

मनस्पत इमं देवयज्ञं स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥ इदं वातायन० ॥

फिर बर उठ कर वधू से स्पर्श की हुई पूर्णाहुति करे

घृत पुष्पलाल दरियाई श्री फल वा पूगीफल से पूर्णाहुति करे

ओं मूर्ध्ना नंदिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत
आजातमग्निम् ॥ कविः संम्राजमतिथिं जनाना
मासन्नापात्रं जनयंत देवाः स्वाहा ॥ इदमग्नये नमः

श्री फल के ऊपर घृत धावा देवे

ओं वसोः पवित्रमसि शत धारं वसोः पवि
त्रमसि सहस्रधारं । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः
पवित्रेण शतधारेण सुष्वः काम धुक्ष्वः १

१ ओं देवा इति मनसस्पतिः ऋषिः निराह छन्दः वायुदेवता बर्हिर्दोमे विनियोगः ।

३ ओं मूर्ध्ना नमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः वैश्वानरो देवता त्रिष्टुप् छन्दः पूर्णाहुति होमे विनियोगः ।

बैठकर सुवकी आहुतिकी भस्म लगाकर अंगों पर लगावे दक्षिणहस्तकी अनामिका से लगावे ।

अथ त्र्यायुषम् ।

दक्षिणहस्ता नामिकया भस्म धारणम् ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे १ ॐ कश्यप

स्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायां २ ॐ यद्वेवेषु त्र्यायुषं इति दाक्षि

णांसे ३ ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति हृदि ४

ऐसवधूकाभी त्र्यायुष करना

अथ घृत संकल्पः

ॐ मघेत्यादि ० अमुक शर्मणः विवाह विधिसाफल्याय कृत (वाकारित) एतद्धवनकर्म प्रतिष्ठार्थं अग्निदेव प्रीतये घृतं एतत्परिमितं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातु महमुत्सृजे—

यहां मुठी भरवे और भी दान करे

पुनः आचार्याय दक्षिणां दद्यात् ।

ॐ मघेत्यादि अमुक शर्मणः विवाह विधि समग्र संपादनार्थं निमंत्रिताधिकारि वेदपाठकवि प्रकृताति प्रयत्न जन्य श्रम निवृत्त्यर्थं मिदं विवाहार्ग भूत विवाह पाठक कर्तव्यता दक्षिणाद्रव्यममुक देवतं श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतये यथानाम गोत्र ब्राह्मणाय दातु महमुत्सृजे ॥

१ मस्तक पर २ गार्दन पर ३ सजे कंधे पर ४ हृदय पर ५ काजे पड़ती

यहां पर कंकण मोचनादि कर्म देशाचार के अनुसार करना

वधूपरि पुष्पाद्राक्षता रोपणं ब्राह्मणाः शिष्टाश्च कुर्युः

ॐ गायत्रीचविधौयद् हृक्ष्मीर्देवपतौयथा
उमायथामहेशाने तथा त्वंभवभर्तारि१ सुदक्षिणा
दिलीपेचराघवेचाविदभर्जा ॥ वसिष्ठेऽरुंधती
यद्वत्तथा त्वंभवभर्तारि२ सुवर्चलायथा चार्केयथा
चंद्रेच रोहिणी ॥ मदनचरतिर्यद्वत्तथात्वंभव
भर्तारि३ राघवेन्द्रेयथासीता विनताकश्यपेयथा ॥
पावकेचयथा स्वाहा तथात्वंभव भर्तारि४ अनिरु
द्धेयथैवोषादमयंती नलेयथा ॥ श्यामलीऋतुपर्णे
चतथा त्वंभवभर्तारि५ पुलोमजाचदेवेन्द्रे वसुदेवेच
देवकी ॥ लोपामुद्रायथा गस्त्ये तथात्वंभवभर्तारि
शतनौचयथा गंगासुभद्राचयथार्जुने ॥ धृतराष्ट्रे
चगाधारीतथात्वंभव भर्तारि७ गौतमेचयथा
हिल्या द्रौपदीपांडवेषुच॥ यथावालिनिताराचतथा
त्वंभवभर्तारि८ मंदोदरी रावणेच रामेयद्वत्तु
जानकी ॥ पांडुराजेयथाकुंतीतथात्वंभवभर्तारि ९
भास्करस्य प्रभायद्वद्रोहिणी सिंधुजस्यच॥

१ सिर्फ वधू के ऊपर पुष्प और आटे अन्न काद्यण और शिष्ट पुरुष हों ।

कुजेतेजोमयी यद्वत्तथात्वंभवमर्तरि१० अत्रेर्य
 थानुसूयाच जमदग्नेश्चरेणुका ॥ श्री कृष्णेरुक्मि-
 णीयद्वत्तथात्वंभव मर्तरि११ यथाचवोधिनी
 सौम्येभारतीवाक्पतेस्तथा ॥ भार्गवेवलिनीयद्वत्त
 थात्वंभवमर्तरि१२सूर्यपुत्रेयथासौम्यातमसस्ताम
 सीयथा ॥ केतौभोगवती यद्वत्तथा त्वंभवमर्तरि
 १३ वासवस्ययथेंद्राणी कालीवैश्वानरस्यच ॥
 धर्मिणीधर्मराजस्यतथा त्वंभवमर्तरि१४नैऋतेश्च
 धृतिर्यद्वद्धारुणी वरुणस्यच ॥ वायोर्वा युवती यद्व
 त्तथात्वंभवमर्तरि१५ यक्षिणीधनदेयद्वत्पार्वती
 शंकरेतथा सावित्रां वेधसोयद्वत्तथा त्वंभवमर्तरि
 १६ शंकरेतपनी यद्वद्दुःष्यतेचशकुन्तला ॥
 मेरुदेवीयथानामौ तथात्वंभवमर्तरि १७ रेवती
 बलभद्रेचसांवेचलक्ष्मणायथा ॥ रुक्मिसुताकृष्ण
 पुत्रेतथात्वंभवमर्तरि १८ अनंतस्ययथा लक्ष्मी
 रूर्मिलालक्ष्मणे यथा ॥ कुशेकुमुद्वतीयद्वत्तथा
 त्वंभवमर्तरि १९ धनपुत्रवतीसाध्वी सततं-
 भर्तृवल्लभा ॥ मनोज्ञा ज्ञानसहितातिष्ठत्वं श-
 रदाशतम् २० जीवसूर्वीरसूर्भद्रे मवसौख्य
 समन्विता ॥ सुभगामौख्य संपन्ना यज्ञपत्नी
 पतिव्रता २१ अतिथी नागतान्साधून् बालान्

वृद्धान् गुरुंस्तथा ॥ पूजयन्त्या यथान्यायं शश्वद्
गच्छन्तुतेसमाः २२ पृथिव्यां यानिरत्नानि गुण-
वंति गुणान्विते ॥ तान्याप्नुहित्वं कल्याणि सुखि
नीशरदांशतम् । २३ ।

१ ततो वरवध्वोर्द्वयोरुपरि

अत्रिकश्यपवसिष्ठ गौतमा व्यासगालव
पुलस्त्यकौशिकाः ॥ गाधिशौनकमरीचि नारदा
मंगलंदधतु तेऽभिषेकजम् २४ सूर्यसोमकुज चंद्र
नन्दनाजीव शुक्रशनि राहुकेतवः ॥ विष्णुकंज-
सुतशंकरादयो मंगलंदधतु तेऽभिषेकजम् २५
ब्रह्मावेदपतिः शिवःपशुपतिः शक्रःसुराणांपतिः
प्राणोदेहपतिः सदागतिरयं ज्योतिष्पतिश्चंद्रमाः॥
विष्णुर्यज्ञपतिर्हविर्हुतपतिः स्कंदश्चसेनापतिः सर्वे
तेपतयः कुबेरसहिताः कुर्वन्तुवोमंगलम् २६
मत्स्यःकूर्मतनुर्वराहनृहरी श्रीवामनो भार्गवो
रामोदाशरथिश्च यादवपतिर्बुद्धोथकल्किर्हरिः ॥
अन्येचापिसनत्कुमार कपिलाद्याये कलाशाहरेः
सर्वेतेकलिकल्मषघ्नचरिताः कुर्वन्तुवोमंगलम् २७
आदित्योऽग्नियुतः शशीसवरुणोभौमः कुमारा-
न्वितः सौम्योविष्णुयुतोगुरुःसमधवा देव्यायुतो

भार्गवः ॥ सत्रह्यारविजोगगोश्वर युतोर्राहुस्तथा
 सेश्वरो मांगल्यं सुखदुःखदाननिरताः कुर्वन्तुसं-
 वेंग्रहाः २८ (अथवरो परिक्षिपेयुः ॥ आयुर्द्रोण-
 सुते श्रियोदशरथे शत्रुक्षयोराघवे ऐश्वर्यं नहुपे-
 गतिश्च पवने मानं च दुर्योधने ॥ शौर्यं शान्त-
 ने वलं हलधरे सत्यं च कुन्तीसुते विज्ञानं विदुरे
 भवन्तु भवतः कीर्तिश्च नारायणे २९

आयुष्मान् भवपुत्रवान् भवश्रीमान् यशस्वी भ
 वऐश्वर्यो भवभूरि भूति करुणो दानैकानिष्ठो भव ॥
 तेजस्वी भववैरि दर्पदलने व्यापारदक्षो भवश्री
 शंभो भव पादपूजनरतः सर्वोपकारी भव ३० आ
 युर्वलं विपुलमस्तु सुखित्वमस्तु भाग्यत्वमस्तु वि
 शदा तव कीर्तिरस्तु ॥ श्रेयोस्तु धर्म मतिरस्तुरिषु
 क्षयोस्तु संतान वृद्धिरभिवांछित सिद्धिरस्तु ३१
 यावदिन्द्रादयो देवा यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥ यावद्ध
 र्माक्रियालोके तावद्धूयाति स्थितिस्तव ३२ . . .

‘पुनर्वधू परिक्षिपेयुः—

पद्माभाध्वयोर्नगेंद्रतनया , नागेंद्रकेयूरयोः
 स्वाहा पावकयोरमर्त्यतटिनीकल्लोलिनीनाथयोः
 पौलोमीपुरुहूतयोरथरतीपंचास्रयोः प्रेमवहं पत्यो

युवयोश्चिरं भवतु तत्सौभाग्यं सौख्यं न्वितम् १
 लक्ष्मीः सकलदेवगणा रिशत्रौ गौरीयथा पशुपतौ
 च शचीसुरेन्द्रे ॥ गायत्र्यापि च परमेष्ठिनि संप्रसक्ता
 ते ह्यद्रवत्वमपि भर्तारि नित्यं रक्ता २ यद्वल्लक्ष्मीमधु
 मथ नयोः पत्रिणी चक्रनाम्नोर्यदन्नित्यं कुमुदश
 शिनोः पद्मिनीसूर्ययोश्च ॥ गाढप्रेम्णो गिरिश शि
 वयोः सुप्रसिद्धिश्च यद्वज्रायापत्यो भवतु भवतो स्त
 ददेव त्रिलोके ३ अविधवा भववर्षाणि शतं साग्रं तु
 सुव्रता ॥ तेजोयुक्ता यशोयुक्ता धर्मपत्नी पतिव्रता
 ४ जनयेद्बहुपुत्रांश्च माचक्षुः खलमेतं कंचित् ॥ भर्ता
 ते सोमपानित्यं भवेद्धर्मपरायणः ५ अष्टपुत्रा भव
 त्वंच सुभगा च पतिव्रता ॥ भर्तुश्चैवापितुर्भ्रातुं हं
 देयानंदिनीसदा ६ इन्द्रस्य तु यथेन्द्राणी लक्ष्मीः
 श्रीधरस्य च ॥ शंकरस्य यथा गौरी तद्वत्त्वं भव
 भर्तारि ॥ ७ ॥

अथ पुनर्वरो परि

यं पालयसि धर्मं त्वं प्रीत्या च नियमेन च ॥
 सर्वे पुरुषा शार्दूल धर्मस्त्वामभि रक्षतु ॥ १ ॥
 येभ्यः प्रणामं सेत्वीहि देवाद्यायतनेषु च ॥
 ते च त्वां अभिरक्षंतु सर्वे सह महर्षिभिः ॥ २ ॥

पितृ शुश्रूषयानित्यं मातृ शुश्रूषया तथा ॥ सत्ये
 नचमहाबाहोचिरंजीवामिरक्षितः ॥ ३ ॥
 समित्कुश पवित्राणि वेदाश्चायतनानिच ॥
 स्थंडिलानांच विप्राणां शैला वृक्षानदाह्रदाः ४
 पतंगाः पन्नगाः सिंहास्त्वां रक्षंतु नरोत्तम ॥
 स्वस्ति साध्याश्च विश्वेच मरुतश्च महर्षिभिः ५
 स्वस्ति धाता विधाता च स्वस्ति पूषाभगोर्यमाः ॥
 लोकपालश्च ते सर्वे वासवप्रमुखास्तथा ७
 ऋतवःपट्ट च ते सर्वे मासाः संवत्सराः क्षपाः ॥
 दिनानिच मुहूर्ताश्च स्वस्ति कुर्वंतु ते सदा ८
 श्रुतिःस्मृतिश्च धर्मश्च पातुत्वां ते च सर्वतः ॥
 स्कंदश्च भगवान्देवः सोमश्च स बृहस्पतिः ९
 सर्पपयो नारदश्च ते त्वां रक्षंतु सर्वतः ॥ ते चापि
 सर्वतः सिद्धादिशश्च सदिर्गाश्चराः ९ शैलाः सर्वे
 समुद्राश्च राजा वरुण एव च । द्यौरंतरिक्षं पृथिवी
 वायुश्च स चराचरः १० नक्षत्राणि च सर्वाणि
 ग्रहाश्च सहदेवतेः ॥ अहो रात्रे तथा संध्ये पांतु
 त्वां च सुदक्षिणाः ११ ऋतवश्चापि पट्टचान्ये
 मासाः संवत्सरास्तथा ॥ काष्ठास्तथा कलास्तद्व-
 त्तवशमंदिशन्तुते १२ पुवंगावृश्चिका दंशामश-
 काश्चैव सर्वतः ॥ सरीसृपाश्च कीटाश्च मा

भूवन्दुः स्वदास्तव १३ महाद्विपाश्च सिंहाश्च
व्याघ्रा ऋक्षाश्च दंष्ट्रिणः ॥ माहिषाः शृंगिणो
रौद्रानतेदृह्यन्तु सर्वतः १४ आगमास्ते शिवाः
सन्तु सिध्यन्तु च पराक्रमाः ॥ स्वस्ति ते स्वतन्-
रिक्षेभ्यः पार्थिवेभ्यः पुनः पुनः १५ सर्वेभ्यश्चैव
देवेभ्योयेच तेपरिपंथिनः ॥ शुक्रः सोमश्चसूर्यश्च
धनदोथयमस्तथा १६ अग्निर्वायुस्तथा धूमो-
मंत्राश्चर्षिमुखाच्च्युताः ॥ सर्वलोकप्रभुर्ब्रह्मा
भूतकर्तृतथर्पयः १७ यन्मंगलं सहस्राक्षे सर्व-
देवनमस्कृते ॥ वृत्रनाशे समभवत्तत्ते भवतु-
मंगलम् १८ यन्मंगलं सुपर्णस्य विनताकल्प
यत्पुरा ॥ अमृतंप्रार्थयानस्य तत्तेभवतुमंगलम्
१९ अमृतोत्पादने दैत्यान्घ्नतो वज्रधरस्ययत् ॥
अदितिःमंगलं प्रादात्तत्तेभवतु मंगलम् ॥ २० ॥
त्रिविक्रमान्प्रक्रमतो विष्णोरतुलतेजसः ॥ यदा-
सीन्मंगलंनित्यं तत्तेम०मंग०२१ सरितःसागरा-
द्वीपा वेदाःलोकादिशाश्चताः ॥ मंगलानि महा-
वाहो दिशंतुशुभमंगलम् २२ करोतुस्वस्तिते
ब्रह्माब्राह्मणाश्चद्विजातयः ॥ सरीसृपाश्चये श्रेष्ठा
स्तेभ्यस्ते स्वस्तिसर्वदा २३ ययातिर्नहुपश्चैव धुंधु-
मारोभगीरथः ॥ तुभ्यंराजर्पयः सर्वेस्वस्ति कुर्व-

तुतेसदा २ स्वस्तितेऽस्त्वेकपादेभ्योवहुपादेभ्य-
 एवचस्वस्त्यस्त्व पादकेभ्यश्च नित्यंतवमहारणे २५
 स्वाहास्वधा शर्चाचैव स्वस्ति कुर्वंतुतेसदा ॥
 लक्ष्मीरुंधतीचैव कुरुतांस्वस्तितेऽनघ २६
 असितोदेवलश्चैव विश्वामित्रस्तथांगिराः वसिष्ठः
 कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तुतेसदा २७ धातावि-
 धाता लोकेशोदिशश्च सदिगीश्वराः ॥ स्वस्तितु-
 भ्यंप्रयच्छंतु कार्तिकेयश्चपणमुखः २८ विवस्वा-
 न्मगवान्स्वस्तिकरोतु तवसर्वशः ॥ दिग्गजाश्चैव
 चत्वारःक्षितिश्च गगनग्रहाः २९ अधस्ताद्धरणीं
 योऽसौसदाधारयतेनृपः ॥ शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः
 स्वस्तितुभ्यं प्रयच्छंतु ३० इति श्रीविधूवरोपरि
 आर्द्रं पुष्पाक्षतारोपणम् ॥ समाप्तम् ॥

॥ अथाभिषेकः ॥

अथ कलशाज्जल मानीय पंचपल्लवैः कुशैर्वा
 वरं वधूं च ब्राह्मणा अभिषिंचेयुः

सुरास्त्वामभिषिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥
 वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणोविभुः १ प्रद्युम्नश्चा
 निरुद्धश्चभवन्तु विजयायते ॥ आखंडलोग्निर्भ
 गवान् यमोर्वेनिर्ऋतिस्तथा २ वरुणः पवनश्चैव
 धाताध्यक्षस्तथाशिवः ॥ ब्रह्मणा सहितः शेषो

१, कलश से जल लेकर ५ पत्रों वा कुशों से वर वधू को ब्राह्मण सींचे ।

दिक्पालाः पांतु ते सदा ३ कीर्तिर्लक्ष्मीर्द्युतिर्मैधापु
 ष्टिः श्रद्धा क्रियामतिः ॥ बुद्धिर्जातिर्वपुर्ऋद्धिस्तुष्टिः
 हृष्टिश्चमातरः ४ एतास्त्वामभिषिंचंतु देवपत्न्यः
 समागताः ॥ आदित्यश्चंद्रमा भौमो बुधज्जिवसि
 तार्कजाः ५ ग्रहास्त्वामभिषिंचंतुराहुः केतुश्चत
 पिताः ॥ देवदानव गंधर्वायत्त राक्षसपन्नगाः ६
 ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ॥ देवपत्न्यो
 द्रुमानागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः ७ अस्त्राणि
 चैव शस्त्राणि शतशो वाहनानि च ॥ औषधानि-
 चरत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ८ सरितः सागराः
 शैला स्तीर्थाणि जलदानदाः ॥ एते त्वा मभिषिंच-
 चंतु धर्मकामार्थं सिद्धये ॥ ९ सुरास्त्वामभिषिंचंतु
 पंचसिद्धाः पुरातनाः ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च शंभुश्च-
 साध्याश्च समरुद्गणाः १० आदित्यावसवोरुद्रा
 अश्विनौ च भिषग्वरौ ॥ अदितिर्देवमाता च स्वाहा
 सिद्धिः सरस्वती ११ कीर्तिर्लक्ष्मीर्द्युतिः श्रीश्च सिनी
 वाली कुहूस्तथा ॥ दितिश्च सुरसा चैव विनता कदुरेव
 च १२ देवपत्न्यश्च याः प्रोक्ता देवमातर एव च ॥
 सर्वा स्त्वामभिषिंचन्तु शुभाश्चाप्सरसांगणाः १३
 नक्षत्राणि मुहूर्ताश्च पक्षाहोरात्र संवयः ॥
 संवत्सरो दिनेशश्च कलाः काष्ठाः क्षणालवाः १४

सर्वेत्वामभिर्पिचंतु कालस्यावयवाः शुभः ॥ एते
 चान्येचमुनयोवेदव्रतपरायणाः १५ सशिष्यास्ते
 भिर्पिचन्तु सदाराश्चतपोधनाः ॥ वैमानिकाः
 सुरगणाः सरित सागरैः सह १६ मुनयश्चमहा
 भागानागाः किंपुरुषाः खगाः ॥ वैखानसामहा
 भागा द्विजावैहायनाश्चये १७ सप्तर्षयः सदारा
 श्चध्रुव स्थानानियानिच ॥ मरीचिरत्रिः पुलहः
 पुलस्त्यः क्रतुरंगिराः १८ भृगुः सनत्कुमारश्चसन
 कौथसनंदनः । सनातनश्चदक्षश्च जैगीपव्योभगं
 दनः १९ एकतश्चद्वितश्चैव त्रितोजावालिकश्चपौ
 दुर्वासा दुर्विनीतश्चकण्वः कात्यायनस्तथा २०
 मार्कण्डेयोदीर्घतपाः शुनाशेफोविद्वरथः ॥ उर्वः
 सांवर्तकश्चैव च्यवनश्चपराशरः २१ द्वैपायनोय
 वक्रीतोदेवराजः सहानुजः ॥ पर्वतास्तरवोवलयः
 पुण्यान्यायतानानिच २२ प्रजापतिर्दितिश्चैव
 गावो विश्वस्यमातरः ॥ बाहनानिचदिष्टानि सर्वे
 लोकाश्चराचराः २३ अग्नयः पितरस्ताराजीमूताः
 खदिशोजलम् ॥ एते चान्येचवहवोवेदव्रतपरायणाः
 २४ सेंद्रादेवगणाः सर्वे पुण्यश्रवणकीर्तनाः ॥ तौ यै
 स्त्वामभिर्पिचंतु दुःखात्यन्तनिवर्हणे ॥ यथाभिपि
 क्तो मधवास्त्वेतमुदित मानसैः २५

इति वारुण कलशा भिषेकः

अथ पुण्य पाठरूपाश्रीसीतारामील्लि०

ॐ पुरुषाणांतु पुरुषो यथापुरुष पुरुषोत्तमः ॥

यथा सत्यवादीहरिश्चंद्र ॥ धनुर्धारीतो अर्जुन ।

यथावाचा पतियुधिष्ठिर सीता पति श्रीराम ॥

विद्या पति विनायक ॥ मतिमान् वासुदेव ॥ भूत

पति महादेव ॥ महावंली भीमसेन ॥ अहंकारी

अहिरावण ॥ यथास्वरपति नारद । अचलपति

ध्रुव अटल ॥ यथातपतां पतिसूर्य ॥ यथा कपि

ल आदिकृष्णेश्वर ॥ एवंगुरोर्ममानुजा ॥ देवतो

विश्वनाथ । श्रीपार्वतीपतिव्रजनाथ ॥ क्षेत्रतो

कुरुक्षेत्र ॥ महाक्षेत्र वनारसी ॥ वेदमन्त्रीतो ब्रह्मा

ब्रह्मचारीतो शुक्र ॥ गीतां पति नारद ॥ यक्षपति

कुबेर ॥ देखवों श्रीकृष्णपेर ॥ स्वर्गपति इंद्र ॥ सं

तां पति गोविन्द ॥ नगरीतो अमरावती ॥ हस्तीतो

ऐरावती ॥ उत्पत्तितो प्रजापतिकी ॥ पुरुषतो

स्वस्वरित ॥ वृद्धतोकल्पवृक्ष ॥ गोकुलतो गौअन

में ॥ विधनालिख भौअनमें ॥ वृंदावनकृष्णारूप

महाअद्भुतस्वरूप ॥ श्रीमथुरामें भक्तिधर्म ॥ का

शीमें क्रियाकर्म ॥ नाथतो श्रीगोवर्धन धर ॥ राखे

जन अपनोंकर ॥ श्रीवल्लभकुल पुष्टिमार्ग । पावे

जनवडोभाग ॥ भक्तिश्रीभगवंतकी ॥ सुन्दरगति

मुक्ताकी ॥ सारहेश्रीगातामें ॥ मंगलरसरीतामें ॥ मंत्र
 श्रीगायत्रीका ॥ व्रततो एकादशीका ॥ शीत-
 लतातो चन्द्रमाकी ॥ वक्रतो मंगलका ॥ बुद्धितो
 श्रीशारदाकी ॥ जपतप शुचिपारदाकी ॥ लेखनी
 तो गणेशकी ॥ पुरोहितीतो शुक्रकी ॥ प्रतिपदा
 अन्नकूटकी ॥ द्वितीया यमकी ॥ तृतीया अक्षय-
 की ॥ चतुर्थी गणेशकी ॥ पंचमती वसंतकी ॥
 षष्ठीतो चंदनकी ॥ सप्तमी अंचलाकी । अष्टमी
 जन्माष्टमी ॥ नवमी श्रीरामनवमी ॥ दशमी विज-
 यदशमा ॥ एकादशी हरिप्रबोधिनी ॥ द्वादशीतो
 वामनकी ॥ त्रयोदशी माघेपुण्ये ॥ चतुर्दशीतो श्री
 नृसिंहकी ॥ पूर्णिमा कार्तिककी ॥ अमावस्या दीप-
 मालाकी ॥ राशितां द्वादश । नक्षत्रतो अठावीस ॥
 कर्णतो एकादश ॥ वेदचार । युगचार ॥ पुराण
 अष्टादश भारतोगी का । श्री कपिलाक्षी ॥ स्नान
 कर्म सूर्यसाक्षी ॥ सत्यतो सत्ययुग ॥ कथाकी-
 र्तनतो कलियुग ॥ स्नान श्रीगंगाजीका ॥ शीतल
 जल श्रीयमुनाजीका ॥ जोलीलारस कृष्णकी ॥
 विश्वपाल श्रीविष्णुकी ॥ आर्यातो मार्कण्डेयकी ॥
 रचनातो ब्रह्माकी ॥ क्रोधियोंपति परशुराम ॥
 मर्यादियोंपति श्रीराम ॥ लालीतो पानकी ॥

सुघडतो सुजानकी ॥ गावन मधुरतानकी ॥ सप्त
 स्वरसंधानकी ॥ देशतो काश्मीर ॥ पहिनतो नस
 वीर ॥ पीवनको मधुरक्षीर ॥ बोलन हरिकीर्तिका ॥
 दानतो करनका ॥ ज्ञानतो धरनका ॥ 'कर्मतो तर
 नका ॥ राखवों सरनका ॥ पातिव्रततो घरनका ॥
 भूषणतो सुवर्णका ॥ सत्यतो श्रीसीताका ॥ पाठ
 तो श्रीगीताका ॥ नारायण जैसे चरित्र ॥ सुदामा
 जैसे मित्र ॥ भगीरथ जैसे पुत्र ॥ यज्ञोपवीत जैसे
 सुत्र ॥ गुणवंती गुणवंतम् ॥ हनुमंती हनुमन्तम् ॥
 स्थानतो शारदाका ॥ ज्ञानतो पारदाका ॥ निर्म
 जलगंगाका ॥ आनंदतो तरंगका ॥ यज्ञतो श्रीलाल
 जीका ॥ देखवों श्रीगोपालजीका ॥ नियमराजे बलि
 का ॥ द्यूतराजे नलका ॥ पुष्पतो केतकीका ॥ फल
 तो अमृतफल ॥ नर्मदाका सुंदर जल ॥ सत्ययुगम
 ध्ये गौरी सत्यवती ॥ त्रेतायुगम ध्ये सीता सत्यवती ॥
 द्वापरयुगम ध्ये द्रौपदी सत्यवती ॥ कलियुगम ध्ये क
 न्या सत्यवती ॥ पुरुषों पतिवाचा ॥ अर्जुन पति
 वाण ॥ देवतों पति इंद्र ॥ तारा पति चंद्रमाः ॥ वन
 स्पति पति पिप्पल ॥ पत्रों पति तुलसी ॥ देवों पति
 ध्रुव अटल ॥ नदियां पति समुद्र भलो ॥ सत्ययुग
 मध्ये धर्म अचल ॥ कन्या पति वर अटल इच्छावन्ती,

दयावन्ती ॥ पुत्रवन्ती ॥ इष्टवन्ती ॥ दुग्धवन्ती
 ॥ धर्मवन्ती ॥ शर्मवन्ती ॥ ज्ञानवन्ती ॥ ध्यान-
 वन्ती । दानवन्ती । सुखवन्ती । आनन्दवन्ती ।
 सुहागवन्ती । भागवन्ती ॥ पतिसहितहरिभक्ति
 वन्ती । परमधर्मकृष्णचंद्र । सदारहोक्षीरखंड ॥
 ब्रह्मपाठवेदशुद्ध ॥ राजपाठप्रजाशुद्ध । पतिव्रता
 सुकन्याशुद्ध ॥ वरुणवैसंतरसाक्षी ॥ श्रीश्रीश्री
 सिद्धगंगापतिप्रसादा चतुरशीतिदोषाहन्यन्ते । प
 ठन्ते । सुणन्ते । श्रीगंगाजी । गोदावरी । सिंधु ।
 सरस्वती । यमुनाजीका । स्नानकरन्ते । सर्वतीर्थ
 फलंलभन्ते ॥ इति श्रीमद्गोस्वामिवंशावतंसश्री
 लालजीकृतासीतारामी शुभा

अथास्या अनुवाद रूपासंस्कृते श्रीसीता
 रामी लिखते ॥

द्रव्यहस्तौ वधूवरौ शृणुयाताम्

पुरुषाणां तुपुरुषो यथाहि पुरुषोत्तमः ॥

सत्यवादी हरिश्चन्द्रो धनुर्धारी तथार्जुनः १ सीता
 पतिर्हि श्रीरामः पतिर्वाचां युधिष्ठिरः ॥ विनाय-
 कोहि विद्यानां पतिरेव स्मृतोबुधैः २ मतिमान्वां
 सुदेवश्च भूतपतिर्महेश्वरः ॥ महावलीभीमसेनोऽहं
 कारीत्वहिरावणः ३ अचलानां ध्रुवोनाथऋषी-

णानारदःपतिः॥तपतांतुपतिःसूर्यःकपिलाहिपति-
 र्गवाम् ४ ऋषीन्गुरुब्रह्ममस्कृत्याविश्वनाथं प्रणम्यच
 ॥ तेषामाज्ञांसमादायमहादेवोमहेश्वरः५ देवनाथो
 विश्वनाथः पार्वती पतिरुच्यते ॥ क्षेत्राणांतुकुरु-
 क्षेत्रंमहोक्षेत्रं वाराणसी ६ तीर्थराज।प्रयागस्तु
 ब्रह्माहिवेदमंत्रवित् ॥ब्रह्मचारीभृगोःपुत्रःस्वभार्या
 रतंपुरुषः७पतिर्मैरुर्गिरीणांहिगायकेशोहिनारदः॥
 यक्षपतिः कुबेरोहे वाद्यानां भेरिकःपतिः ८ इंद्रः
 स्वर्ग पतिः प्रोक्तो गोविन्दश्च सता पतिः ॥
 दर्शनीयेषुसर्वेषु कृष्णपादः प्रकीर्तितः ९ ऐरावतो
 गजेन्द्राणां पुरीणाममरावती ॥ प्रजापतिः सृष्टि
 कर्ता श्रीकृष्णो विश्वपालकः १० वृक्षाणां
 कल्पवृक्षस्तुदेवलोकोत्तरिक्षगः ॥ गोकुले तुशु-
 भागावः विधि लेखो ललाटके ११ वृन्दावनं
 कृष्ण रूपं महाद्भुत स्वरूपकम् ॥ मथुरायां
 भक्तिधर्मः काश्यांकर्मक्रियामता १२ श्री गोव-
 र्धनधरोनाथः स्वकीय जनपालकः ॥ श्री-
 वल्लभकुल जातानां दासत्वे नैवसर्वदा १४
 पुष्टिमार्गविधानेनसेव्यते स्नेहतोहरिः ॥ मर्या
 दयाप्रवाहेण तद्भाग्यंवर्ण्यतेकिमु १५ भक्ति
 भागवतीश्रेष्ठागीतायाःपाठमुत्तमम् ॥ वृन्दावने

गोकुलेचमथुरायां तथैव च १६ कृष्णलीलागायका-
नां सुखं मुक्त्याधिकं स्मृतम् ॥ काश्यां हि प्राप्य ते मु-
क्तिस्तारकस्योपदेशतः सुंदरता हि मुक्तानामिदृशी
नेव दृश्यते ॥ गायत्री सर्वमंत्राणां वेदानां पठनं
तथा १७ द्विजानां मुक्तिप्राप्त्यर्थं सर्वशास्त्रेषु
भूयते ॥ पूर्वाचरितरीतिषु दृश्यते मंगलोरसः १८
एकादशी व्रतं पुण्यं महाभाग्यैः प्रधार्यते ॥ इंदोः
शीतलताप्रोक्ता वक्रोभौमस्य कथ्यते १९ शारदा
सर्वजीवानां श्रेष्ठा बुद्धिं प्रदामता ॥ जपनस्य
फलं श्रेष्ठं तपसां शुचिकर्मणाम् २० परलोके इहै-
वापि मुक्तिभुक्तिं प्रदं स्मृतम् ॥ शुक्रः पुरोहित
श्रेष्ठो लेखकानां गणाधिपः २१ प्रतिपदन्न कूट-
स्य द्वितीयातुयमस्य वै ॥ तृतीयाचाक्षया श्रेष्ठा-
चतुर्थी गणपस्य च २२ वसंतपंचमी श्रेष्ठा पृष्ठीतु-
चंदनस्य च ॥ अचला सप्तमी श्रेष्ठा श्रीकृष्णस्य
जन्माष्टमी २३ नवमी रामचंद्रस्य दशमी विजया-
स्मृता ॥ एकादशी तिथिः श्रेष्ठा कार्तिके हरि-
वोधिनी २४ द्वादशी वामनस्यैव माघे पुण्ये
त्रयोदशी ॥ चतुर्दशी नृसिंहस्य पूर्णिमा कार्तिकी
वरा २५ दीपावली द्वाविमावस्या संप्रोक्ता तिथि-
रुत्तमा ॥ द्वादश संख्या राशीनां ते तु मे पट्टपा-

दयः २६ अश्विन्यादि नक्षत्राणामष्टाविंशतिसं
 ख्यकम् ॥ कर्णेकादश संख्याका वववालवकादयः
 २७ सत्यंत्रेता द्वापरंच कलिश्चोति चतुर्युगम् ॥
 ऋग्यजुः सामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वारउद्धृताः
 २८ अष्टादश पुराणानि ब्राह्मादीनिस्मृतानि वै ।
 भारतादीतिहासानि तथैवोपनिषच्छतम् २९
 व्याकरणा दीनिशास्त्राणि वेदागानि तथैवच ॥
 साक्षी स्मृतोबुधैः सूर्यःस्नानादि पुण्यकर्मणाम्
 ३० सत्यं सत्ययुगे प्रोक्तं त्रेतायां तप उच्यते
 ॥ द्वापरे यज्ञसेवादि कलौ मुक्ति प्रसाधनम् ३१
 कथाकीर्तनदानादि भगवन्नामकीर्तनम् ॥ पंथा
 गंगादितीर्थानां शीतलंयमुनाजलम् ३२ श्रीकृष्ण
 स्यरसालीला कलौमुक्तिप्रदायिनी ॥ विष्णुदेवो
 विश्वपालःकर्तानारायणः स्मृतः ३३ मार्कण्डेयो
 महाभागो महदायुर्युतोमुनिः ॥ रचनाकारको
 ब्रह्मासंहताश्रीशिवः स्मृतः ३४ मर्यादाधिपती
 रामोजामदग्न्योहिकोपनः ॥ पानेचारक्तताप्रोक्ता
 सुज्ञस्यसुज्ञतास्मृता ३५ सप्तस्वरेणसंवद्धमधुरताल
 गायनम् ॥ देशःकाश्मीरकःश्रेष्ठः शारदास्थान सु
 त्तमम् ३६ धारणेवस्त्रभूपादि वचनेहरिकीर्तनम् ॥
 क्षीरंमधुरसंयुक्तंपाने स्वादप्रद्रंपरम् ३७ दानिनां

वतार श्रीगोस्वामि श्रीलालजीककृता सीतारामों
विवाह समये श्रावणीयाशुमा

इस देश (जिला मुजफ्फरगढ़ । डेरागाजीखाना डेरास्माई-
लखाना मियां वाली) में सर्व ग्रह और अमिकी ४ परिक्रमा
वर वधू करते हैं सो ३ परिक्रमा के अन्त में आसन बदल कर
वर वधू बैठते हैं और चतुर्थ परिक्रमा के अन्त में आपने २ आसन
पर बैठते हैं दोनों समय में ब्राह्मण वर वधू के सिर को आपस
में मिलावे मन्त्र पढ़े—ओं मंगलं भगवान् विष्णु मंगलं गरुड-
ध्वजः॥ मंगलं पुण्डरी काक्षो मंगलाय तनोहरिः—इसके अनं-
तर वर वधू अन्दिर जावें अपनी कुल के अनुसार रीति
करावें—इस परिक्रमा के स य में इस देश में स्त्रियें वा ब्राह्मण
लांवां मंगल गाते हैं सो मंगल गाना लांवां लिखा गया है
विद्वान् लोग इस पर उपहास न करेंगे ।

अथ लांवां मंगल

रंगरस तां लांवां पहिली के मंगल गाईया । गोपीतें
गोकुल कान्हवाला कृष्ण व्याहवण आईया ॥ सिरसेहरा सिर
मुकट सोहवे छन्दकांचन चोलणा ॥ रावीतां पूजोलांवां पहिली
मुख से अमृत बोलणा ॥ १ ॥ रंगरसतां लांवां दूभडी कि
श्याम पियारिआ ॥ भैयाते रुक्मिण राम धनुष सिहारिआ ।
संहार धनुष श्रीराम चडिया नाल साठसहेलियां ॥ श्रीकृष्णनू
तुंसी अन्दिर ल्यावो ल्यावो राजगहेलियां ॥ श्रीकृष्ण देहथ
गोनां सोहवे वृंदभिनां चोलणा ॥ रावीतां पूजोलांवां दूभी
मुख से अमृत बोलणा ॥ २ ॥ रंगरस तांलांवां त्रीभडी के

लमगाईया ॥ ब्रह्मातेँ इन्द्रलिंगगणियाँ वेदपढ़ने आईया ॥
 जत्र आईकरो बिछाई अंगणे रसलीजिये ॥ रावीतां
 पूजो लांवांत्रीभी मुख से अमृत बोलिये ॥ ३ ॥
 रंग रस तांलावां चौथड़ी के सारा अडिया ॥ अंचले सै
 पकिड़ बहावो बहावे वीरावडिडया ॥ अंचले तें पकिड़ बहावो
 तेरा धर्म बेला आईया ॥ गंगा देँ कोल्हे बनारसी कुरुक्षेत्र
 धावण आईया ॥ कुरुक्षेत्र नाहत्यां बड़ा पुण्य है कुछ दान
 बेटी मंगियां ॥ छत्री तां घड़ियां काज होया पर नावे बाबल
 चंगियां ॥ दे वे बाबल हर वरदान तेरा धर्म बेला आईया ॥
 रावी तां पूजो लांवां चौथी रुक्मिणी वर पाईया ॥ ४ ॥
 रंग रस तांलांवां पंजवी के राधा रुक्मिणी ॥ ठुमिक ठुमिक
 पेरे धरती हे के चाल चलंती हे ॥ गलहार कृष्ण अवतार
 सौंदे मुख से नाम जपंती हे ॥ रावी तां पूजो लांवां पंजवी
 कुछ हाथ से दान करंती हे ॥ ५ ॥ रंग रस तांलांवां छीहवीं
 के हरिवर पाईया ॥ सहस्र वेदी रूप वाला सेज पर सण
 आईया ॥ तखत बैठी मान रलिया अंग अंग रलाईया ॥
 रावीतां पूजो लांवां छीहवीं रुक्मिणी वर पाईया ॥ ६ ॥
 रंग रस तांलांवां सतवीं के लांवां पूरियां ॥ छनकने वर लट्क
 बोल्या विधना नें बधियां चूड़ियां ॥ विधना नें बधियां
 चूड़ियां कुछ सचियां कुछ कूड़ियां ॥ रावी तां पूजो लांवां
 सतवीं लांवां श्रीकृष्ण दी पूरियां ॥ ७ ॥

इति लांवां

अथ ग्रहाणा विसर्जनम्

ग्रहागावो नरेन्द्राश्च ब्राह्मणाश्च विशेषतः ।

पूजिताः प्रतिपूज्यन्ते सावधानाभवन्तुते १
 देवता देवलोकेच ब्रह्माद्या ऋषयस्तथा ॥ गणेशो
 गणपुर्ण्या वै कलशो गच्छतु सागरे २ सर्पो गच्छ
 तु पाताले योगिन्यः सर्प पठिके । मातरोमातृपुर्ण्या-
 वै स्वस्थाने सकला ग्रहाः ३ गच्छत्वं भगवन्नग्रे स्व-
 स्थानं कुंडमध्यतः ॥ हव्यमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि
 प्रसीदमे ४ गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठस्वस्थाने परमेश्वर ।
 यत्र ब्रह्मादयो देवा स्तत्र गच्छ हुताशन ५ आगता-
 स्तु यथा न्यायं पूजितास्तु यथाविधि ॥ कृत्वामयि
 कृपां देवा यत्रासं स्तत्र गच्छत ६ यजमान हितार्थाय
 पुनरागमनाय च ॥ शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणां
 मुदयाय च ७ यथाशस्त्र प्रहाराणां कवचं वारणं
 भवेत् ॥ तद्वदेवाभि घातानां सिद्धिर्भवति वारणं
 ८ अग्निमीले गणेशाद्या न्देवानुत्थापयेत्ततः ॥
 विवाहे च तथा नाम्निक्षौरे च व्रतबंधने ९ गृहादीनां
 प्रतिष्ठासु नवशांतिरुदाहृता ॥ वापीकूपतडा-
 गादौ सर्व स्थानेषु कारयेत् १० ॐ प्रमादात्कु-
 र्वता कर्मप्रच्यवेता ध्वरेषु यत ॥ स्मरणादेव तद्वि-
 ष्णोः संपूर्णस्या दिति श्रुतेः ११ इति ग्रहविस०

अथ पारिवर्ह (दाज) संकल्पः

ॐ तत्सद्ब्रह्मोति० अस्याः कन्यायाः उद्वा-
हकर्मणि श्रुतिस्मृति पुराणेतिहासे त्यादिप्रतिपा-
दित फलावाप्तिकामो ज्वगता नवगत सकलदुरि-
तोपदुरितक्षय कामश्च नाना पटतंतु संख्याका-
नेककल्पा वच्छिन्न वैकुण्ठलोक प्राप्तिकामः श्री
लक्ष्मी नारायण प्रीति जनक बह्वश्वमेध यज्ञ
फलसूचक स्वपुत्रीविवाहांगभूतां सतूलोपधा-
नादि संस्कृतां सपीठखट्वां उत्तानां गिरोदैवतांच
वृहस्पति दैवताकसितरक्त पीताद्यनेकविध सुव-
र्णरजत तंतुभिः संसूत्रितां विश्वकर्म दैवताकैः
यथापरिमितैः रीतिलाहेकांस्यमयपात्रैः सपा-
त्रितंच चन्द्राग्नि समुद्र दैवताकानेक विधि
विरचित रत्नरजतसुवर्णभूषण भूषितं प्रजा-
पतिदैवताक विविधपक्वान्नाद्याधि करणकं सूर्य
चंद्रदैवताकयथापरिमितताम्ररजतमये द्रव्यैःसद-
क्षिकममुकगोत्रायै अमुकनाम्न्यै कन्याये इमं
परिवर्हंतुभ्यमहं संप्रददे ॥ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥
॥ दक्षिणासंकल्पः ॥ अद्यकृतेतत्पारिवर्हदान
प्रतिष्ठार्थमिदं दक्षिणाद्रव्यममुकदेवतं अमुकगोत्रा
ये अमुकनाम्न्यैकन्याये दातुमहमुत्सृजे ॥

अथ कन्यागमन विधिः

कन्या क्षिप्तधान्यानिगृह्णीयात्सवाधवः॥
गमनसमयेकन्याद्वारेस्थित्वाधान्यानिक्षिपेत्॥

अथ धान्यक्षेपे मंत्राः ॥

विश्वामित्रोजमदाग्नि वसिष्ठोगौतमस्तथा ॥ कश्यप
पोत्रिर्मरद्वाजो विष्णुब्रह्मादयश्चये ॥ तेसर्वेत्वांप्रय
च्छंतु धनधान्यादिसंपदम् ॥ १ ॥ सनकःसनंदन
श्चैवधेनवोमातरस्तथा ॥ देवाःसर्वेप्रयच्छंतु धनंधा
न्यंसदागृहे ॥ २ ॥ चिरंजीवतुमेमाता चिरंजीवतु
मेपिता ॥ चिरंजीवतुमेभ्राता चिरंजीवतुबांधवाः
॥ ३ ॥ दिवारक्षतुसूर्योयं रात्रौरक्षतुचंद्रमाः ॥
वंशरक्षतुमौमश्च धनधान्या दि संपदम् ४ पितृ-
वंशंबुधोरक्षेन्मातृवंशं गुरुस्तथा ॥ बंधु वर्ग-
चरक्षेत्तुभृगुदैत्य पुरोहितः २ अश्विन्यादीनि-
ऋक्षाणि योगाविष्कुंभकादयः॥ तिथयःप्रतिपदा-
द्याःशुभंयच्छंतुतेसदा ६ उंतेजोवृद्धिर्यशोवृद्धि
र्वैशवृद्धिस्तथेवच ॥ लोकेकीर्तिर्भवेत्तातधनंधान्यं
सदागृहे ७ गंगाद्याः सरितः सर्वाः शोणाद्याश्च
नदास्तथा ॥ कृतंपापंप्रशाम्यतु प्रयच्छंतु सुखं
चते ८ ततो यजमानः श्रीसूर्यायार्घ्यं दद्यात् ॥
इति कन्या गमन विधिः ॥

द्वितीय विवाहे पूर्व कर्तव्य गायत्री तथा
चामतंडुल वस्त्र सुवर्ण दान संकल्पः

ॐ अद्येत्यादि० श्री लक्ष्मी नारायण प्रीतये
तत्प्रीतिद्वाराऽमुक शर्मणो मम जन्म कालीन
ग्रहसंस्मृत मृतभार्यात्व दोषनिवृत्तये प्राजापत्य-
व्रतैर्दिव्यव्रतस्थानीयविद्वज्जन संस्थापितप्रतिनिधि
स्थानापन्नगायत्री जपनममुक संख्या परिमितं
अमुक गोत्रब्राह्मणद्वाराऽहंकारयिष्ये ॥ तथा च ॥

वस्त्र सुवर्णान्विताम तंडुलानि यथा नाम
गोत्र ब्रह्माणायाहं संप्रददे ॥ कृतैतत् कर्मणा श्री
लक्ष्मी नारायण प्रीतिरस्तु ॥

द्वितीय विवाह में उत्तर कर्म

विवाह से पीछे वर नेत्रों पर वस्त्र बांध कही से खारों
के स्थान में वा किसी अन्य स्थान में वा नदी तीर में जानु
प्रमाण गर्त करके उनमें चढ़े चावलों सहित कुन्नी रखे ऊपर
१०८ तिल तेलसे जागते दीपक संयुक्त कुनाली उलटी करके
गर्त को मिट्टी से भरे फिर मिट्टी को पैर से दबाता हुआ
पहिली स्त्री को याद करे मंत्र पढ़े फिर नेत्रों पर बंधे हुए
वस्त्र को छोड़ दे ।

अष्टोत्तर शतैर्जाग्र दीपकैरन्विता मिमाम् ॥

१ द्वितीय विवाह से पूर्व गायत्री और वस्त्र सुवर्ण कछे चावलों के दान का
संकल्प करे ।

कुनालिकांगृहीत्वा तु देहिमे त्रिरजीविनीम् । १ ।
 सुभाग्यां पुत्रजननीं कुलदेवी प्रसादतः ॥ १ ॥

सुवर्ण वा चांदी की पहाजड़ी की मूर्ति को दूध से स्नान कराकर गंधादि से पूज कर चौर नावल १ विष्णु के निमित्त ४ पहाजड़ी निमित्त दान करे ।

वधूः सपत्नीमूर्तिं उँ सपत्न्यै अमुकायै नमः इति दुग्धे नमनापयित्वा गंधादिभिः संपूज्य तंडुलान्नेन पंचकन्यकाभोजनं संकल्पयेत्— तत्रैकं विष्णुनिमित्तं संकल्प्य सपत्नी निमित्तं भोजनचतुष्टयं सदक्षिणं संकल्पयेत् ॥ उँ मद्येत्यादि० पूर्वसपत्नीनिमित्तं इदं तंडुलान्नं कन्याकाभोजनं चतुष्टयं दातुमहमुत्सृजेतस्यैस्वधा

फिर पच्ची और ३ वस्त्रपहाज के निमित्त संकल्प करे

उमद्येत्यादि० पूर्वसपत्नीप्रित्यर्थं इमांशुंगारपिटिकां यथासंभववस्तु संयुक्तां वस्त्रसमन्विता ममुकत्राहारायै दातुमहमुत्सृजे

फिर पहाजड़ी की मूर्तिको वधू गलमें धारण करे

वसृत्युंजय जपसंकल्पकरे

उमद्येत्यादि० श्रीमृत्युंजये देवप्रीतये तत्प्रीतिद्वाराऽमुकशर्मणो मम जन्मलगाद्दुःस्थानगत

दुर्ग्रहयोगं संसूचितमृतभार्यात्वदोषनिवृत्त्युत्तर
अधुनापरिणति भार्यायाश्चिरकालं यावत्स्थित्यर्थं
च सुपुत्रमंतोनधेनधान्यस्थित्यर्थंचामुकसंख्यापं
रिमितमृत्युं जयजपन ममुकब्राह्मणद्वारा अहंकार
यिष्ये ॥ 'उो मद्येत्यादि० श्रीमृत्युंजयदेवप्रीतये
तत्प्रीतिद्वाराऽमुकदेव्याः सभर्तृकायामम पतिस
हितसुखसंतान सौभाग्यवृद्ध्यर्थं मृत्युंजयजपन
ममुकगोत्रब्राह्मणद्वारा ऽहंकारयिष्ये

फिर अपने देशकुलके अनुसार कर्म करे

इति श्रीविवाह पद्धतिः समाप्ता ॥

अथ मंगलश्लोका लिख्यते

गंगागोमति गोपती गणपतिर्गोविंद गोवर्द्ध-
नो गीतागोमय गोरजोगिरिसुता गंगाधरोगौतमाः
॥ गायत्री गरुडोगदागिरिगया गंभीरगोदावरी
गंधर्वाग्रहगोपगोकुल गणाः कुर्वन्तुवोमंगलम् ।
यन्मंगलं प्रवरशंखगंदाधरस्यरामस्यरावणजयाय
समुद्यतस्य ॥ जित्वानिशाचरपुरीं पुनरागतस्यं
तन्मंगलं भवतुवो विजयाय नित्यम् । यन्मंगलं त्रिद-
शमौलिकिरीटरत्नचंद्रप्रभापटलधोतपदांबुजस्य ॥
गौरी विवाहसमये शशिशेखरस्य तन्मंगलं भवतु

वोविजयायनित्यम् ३ लक्ष्मीर्यस्यपरिग्रहः कमलभूः
 सूनुर्गरुत्मांस्तथापत्रंचंद्ररवीक्षणेसुरगुरुः शेषस्तु
 शय्यासनः ॥ ब्रह्मांडंवरमंदिरं सुरगणायस्यप्रभोः
 सेवकाः सत्रैलोक्यकुटुंबपालनपरः कुर्यात्सदामंग-
 लम् ४ ब्रह्मावायुगिरीशशेषगरुडादेवेंद्रकालोगुरु-
 श्चंद्रार्कैविरुणा निलौमनुयमौवित्तेशाविद्येश्वरौ ॥
 नासत्यौनिर्ऋतिर्मरुद्गणयुताः पर्जन्यामित्रादयः
 सत्रैकासुर पुंगवाः प्रतिदिनंकुर्वंतुवोमंगलम् ५
 मांधातानहुषांस्वरीपसगरौराजाष्टयुर्ह्यहयः श्रीमा-
 न्धर्मसुतो नलोदशरथोरामोययातिर्यदुः ॥ इक्ष्वा-
 कुश्चिविभीषणश्चभरतश्चोत्तानपादोध्रुव इत्याद्या
 भुवि पार्थिवाः प्रतिदिनंकुर्वन्तुवोमंगलम् ६
 श्रीमेरुर्हिम वांश्चमंदर गिरिः कैलासशैलस्तथा
 माहेंद्रोमलया द्विविध्यनिषधाः सिंहस्तथारैवतः ॥
 सद्याद्रिवरगंध मादनगिरिर्मैनाकगोमन्तका
 इत्याद्याभुविभूभृतः प्रतिदिनंकुर्युः सदामंगलम् ७
 विश्वामित्रपरशरौचभृगवोऽगस्त्यः पुलस्त्यः
 ऋतुः श्रीमान्नत्रिमरीचिकौत्सपुलहाः शक्तिर्वसिष्ठो-
 गिराः ॥ मांडव्योजमदाग्निगौतमभरद्वाजादय-
 स्तापसाः श्रीविष्णोर्गुणराशिकीर्तनपराः कुर्युः
 सदामंगलम् ८ वेदाश्चोपनिषद्गणाश्चविविधाः

सांगाः पुराणान्विता वेदांता अपिमंत्रतंत्रसहिता
 स्तर्काः स्मृतीनांगणाः ॥ काव्यालंकृति नीतिनाट-
 कगणाः शब्दाश्च नानाविधाः श्रीविष्णोर्गुणाराशि
 कर्तनपराः कुर्युः सदामंगलम् ॥ ९ ॥ आदित्या-
 दिनवग्रहाः शुभकरा मेषादयो राशयो नक्षत्राणि
 सयोगकाः मतिथयस्तद्देव तास्तद्गणाः ॥ मासाब्दा
 ऋतवस्तथैव दिवसाः संध्यास्तथारात्रयः सर्वेस्था
 वरजंगमाः प्रतिदिनं कुर्युः सदामंगलम् ॥ १० ॥
 शक्तिः शंखमथां कुशध्वजसितच्छत्रप्रदीपप्रभा-
 श्वाष्टौ चामरतोय कुंभसहिताः सन्मंगलाः सर्व-
 दा ॥ सत्पीताक्षत जीरसैधवनिशाः पूगीफलैला-
 गुडश्चैते पांतु सदा सुलग्न सुमुखाः कुर्वंतु वो मंग-
 लम् ॥ ११ ॥ घण्टा नादमृदंग दुंदुभिरवैटकाण-
 शब्दादयो नानामंगलगीत नृत्यनिनदैर्नि काणवे-
 णुध्वनिः ॥ विप्राशीर्वचनानि वेदनिनदः संपूर्ण
 शास्त्रावधयश्चैते पांतु सदा सुलग्न सुमुखाः कुर्व-
 न्तु वो मंगलम् ॥ १२ ॥ दूर्वाग्रं मधुपञ्च-
 गव्य सहितं गोरोचनं श्रीफलं कर्पूरादि सुगंधवस्त्र
 निचयाः श्रीचंदनानीतिच ॥ तांबूलं फल पुष्प
 पूर्णकलशाः पुण्यांगनाभि र्वताश्चैते पांतु सदा सुल-
 ग्न सुमुखाः कुर्युः सदामंगलम् ॥ १३ ॥ मन्वादि-

स्मृतयः पुराणतन्त्रयः काव्यप्रबंधादयः षट्कक्षाः
 श्रुतयश्च तत्रविधयः सूत्राणि भाष्याणि च ॥
 सिद्धांतायमनेम जातकदृशो गर्गादिकाः संहिता
 श्रैतेपांतुसदा सुलग्नसुमुखाः कुर्वन्तुवोमंगलम् १४
 दिङ्नागा गिरयस्त्वनर्घ्यमण यस्त्रेधाविभक्ताग्रयः
 क्षमापालामुनयः प्रसन्नकवयः संपूर्णशास्त्राब्धयः ॥
 संकल्पद्रुम कामधेनुसहित श्रितामणिः कौस्तुभ-
 श्रैतेपांतु सदासुलग्नसुमुखाः कुर्वन्तुवोमंगलम्
 ॥ १५ ॥ श्रीमत्पंकजविष्टरौ हरिहरौ वायु मेहेंद्रो-
 नलश्चन्द्रो भास्करवित्तपाल वरुणाः प्रेताधिपा-
 द्याग्रहाः ॥ प्रद्युम्नोनल कूबरः सुरगज श्रितामणिः
 कौस्तुभः स्कंदः शक्तिधरश्च लंगलधराः कुर्वन्तुवो
 मंगलम् ॥ १६ ॥ अंगुल्याकः कपाटं प्रहरतिकु-
 टिलो माधवः किंवसन्तो नोचक्री किंकुलालो नाहि
 धरणीधरः किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः ॥ नाहंघोराहि
 मर्दो किमुतखगपाति नोहरिः किंकपी शङ्कराधा
 विवादेप्रतिवचनजितः पातुवश्चक्रपाणिः ॥ १७ ॥
 कस्त्वंशुली मृगयामिपजं नीलकण्ठः प्रियेहं केका-
 मेकाकुरुपशुपाति नैवदृष्टो विषाणो ॥ मुग्धेस्थाणुः
 सचलति कथंजीवितेशः शिवायागच्छाटव्यामि
 तिहतवचाः पातुवश्चन्द्रचूडः ॥ १८ ॥ मिश्रुः कस्ति-

बलेर्मखेपशुपतिः कुत्रास्त्यसौ गोकुलेकासौपन्नग
भूषणः शृणुसखेशेतेचतस्योपरि ॥ मुग्धेमुंचवि-
षादमत्रवहुलं नाहंप्रकृत्याचलाइत्थं जलधिसुता
धरेन्द्रतनयाव्यग्रागिरःपातुवः॥१९॥ कोयंदारिहरिः
प्रयाह्युपवनं शाखामृगस्यात्र किंकृष्णाहंद्रायितेवि
भेमिसुतरां कृष्णादहंवानरात् ॥ मुग्धेहंमधुसूदनो
ब्रजलतांतामेवतन्वीमले इत्थानिर्वचनीकृतोदायित
याहीणोहरिःपातुवः२० दोषोमेत्वदुपेक्षयावहुभुजः
किनैवभूमीतलेविद्यान्मामघनाशनं प्रियतमेना
शित्वयाघोननु ॥ कुत्रासंचपलायितो हमघनेसा-
यत्रतेवल्लभाश्रेयां सिद्धलशृंखलावितनुतांगोविंद
गोप्योरियम् २१ मंगलालेखनेनालमलंकृत्यदया
लुना ॥ समाप्तिनीयतेचैपाद्विजोद्वहनपद्धतिः॥२२॥
इति श्रीमारहाजकाष्टपालजातिजदयालुशर्म
ज्योतिर्वित्संगृहीता विवाहपद्धतिः समाप्ता ॥



अथ विवाह कालीन कन्यानामकरण सारिणी

मे० अश्वि० मे पूर्व ३ पाद	अश्विनो के पहिले ३ पाद वाले का अश्विनी के ३ पादों में पाद भिन्न मृग० के पिछले २ पाद पू० फा० उषा० के पिछले ३ पा० अ० घ० में नामधरे
मे० अश्वि० ४ पाद	अश्वि० चतुर्थ पादवाले का मृ० के पिछ० २ पाद पू० फा० उ० पा० के पिछ० ३ पाद अ० घ० में धरे
मे० भर० ४	भरणी वाला भरणी में पाद भिन्न उ० फा० का पहिला ० १ पाद उ० पा० के पहिले २ पादों में
मे० कृ० का १ पाद	कृ० के पहिले पादवाला ध० श० चित्रा के पिछले २ पादों में
ह० कृ० ३ पा द पिछले	कृ० के पिछले ३ पाद वाला ३ पादों में भिन्न बि० पहिले २ पाद शत० में
ह० रोहि० पूर्व १ पाद	रोहि० के प्रथम पादवाले को पू० भा० के पहिले ३ पादों में
ह० रोहि० के पिछ० ३ पाद	रोहि० के पिछले ३ पादवाला पादभिन्न उ० फा० के पिछ० ३ पाद पू० भा० के पहिले ३ पादों में
ह० मृग० के पहि २ पाद	मृग० के पहि० २ पादवाला पादभिन्न उ० फा० के पिछ० ३ पाद पू० भा० के पहिले ३ पादों में
मि० मृग० २ पाद पिछ०	मृग० पिछ० २ पाद वाला पादभिन्न रोहि० उ० फा० पिछले ३ पाद ह० पू० भा० में
मि० आर्द्र ४	आर्द्र वाला आर्द्र में पाद भिन्न धारण करे ॥ अग्न्य मत से म० पू० फा० उ० भा० रेव०
मि पुनः ३ पाद	पुन० पहले ३ पादवाला पादभिन्न मृग० पिछले २ पादों में विशा० स्वाती में

क० पुन१पाद	पुन० के चतुर्थ पाद वाला पुष्य० म० रो० स्वा० जु० उ० पा० पिङ्ग० ३ पादों में
क० पुष्य३पाद	पुष्य पहिले ३ पाद वाला पाद भिन्न पुन० मृग० पिङ्ग० २ पाद स्वा० में
क० पुष्य१पाद	पुष्य चतुर्थ पाद वाला ह० थ० उ० फा० उ० पा० के पिङ्ग० ३ पाद अश्वि० म० रो० में
क० अश्ले०	अश्लेया वाला पाद भिन्न चि० ज्ये० धनि० पहिले २ पादों में
सि० म०	मघा वाला पाद भिन्न चि० पहिले २ पाद शत० पि० ३ पादों में
सि० पू० फा०	पू० फा० वाला पाद भिन्न उ० फा० के पहिले १ पाद में अन्य मत से रो० मृ० स्वा० जु० में
सि० उ० फा० १पाद	उ० फा० पहिले १ पाद वाला रो० उ० पा० पहिले १ पाद पू० फा० में
क० उ० फा० ३पाद	उ० फा० के पिङ्गले ३ पाद वाला ३ पाद भिन्न २ उ० पा० पिङ्ग ३ पादों में
क० ह०	हस्त वाला पाद भिन्न उ० पा० के पिङ्ग० ३ पाद थ० में
क० चि० २ पाद	चित्रा के पहिले २ पाद वाला पाद भिन्न रखे अन्य मत से अश्ले० विशा० पिङ्ग० १ पाद ज्ये० मृ० थ० रे०
तु० चि० २ पाद	चित्रा के पिङ्ग० २ पाद वाला पाद भिन्न विशाखा पहिले ३ पादों में
तु० स्वा०	स्वाती वाला पाद भिन्न पू० मा० में अन्य मत म० पुष्य० पू० फा० धनि० पूषाद्ध ।
तु० वि० ३पाद	विशाखा पहिले ३ पाद वाला पाद भिन्न रखे । अन्य अश्वि० पुष्य चित्रा० २ पिङ्गले पाद मृ० धनि० पूर्वार्ध ।
तु० विशा १	विशाखा पिङ्गले १ पाद वाला उ० शत० ज्ये० में ।
तु० मजु० ४	मजुषा वाला पाद भिन्न थ० पू० मा० में ।

घृ ज्ये० ४	ज्येष्ठा वाला पाद भिन्न म० विशा० के चतुर्थ पाद में चित्रा० पहि० २ पाद घ० में
घ० मू० २	मूला पहि २ पाद वाला पाद भिन्न कु० १ पहिले पाद विशाखा पहिले ३ पाद चि० घ० पिङ्गले २ पादों में
घ० मू०	मूला पिङ्गले २ पाद वाला पाद भिन्न कु० १ पहिला पाद विशाखा ३ पहिले पाद चित्रा घ० पिङ्गले २ पादों में
घ० पू० पा० ४	पू० पा० पाद भिन्न पू० भा० उ० फा० पिङ्ग २ पाद पू० पा० के द्वितीय चतुर्थ पाद घ० ङ० वाला आर्द्रा में रखे
घ० उ० पा० १	उ० घा० पहिले पाद वाला पू० पा० पू० भा० भर० में
म० उ० पा० ३	उ० पा० के पिङ्ग ३ पाद वाला पाद भिन्न अन्य० पुष्य अश्लेष० पू० भा० पिङ्ग १ उ० भा० में
म० श्र० ४	श्रवण वाला पाद भिन्न मृग० में अन्य०
म० घ० २	घनिष्ठा के पहिले पाद वाला पाद भिन्न अन्य० अश्वि० ज्ये० स्वा० वि० ज्ये०
कुं० घ० २	घनि० के पिङ्गले २ पाद वाला पाद भिन्न अन्य० अश्वि० म० ज्ये० मू० शत०
कु० शत ४	शतभिषा वाला पाद भिन्न अ० य० कु० मृग० का पूर्वार्ध शुभ०
कुं० पू० मा० ३	पू० भा० पहिले ३ पाद वाला पाद भिन्न अन्य० रो० मृ० पूर्वार्ध पू० पा० उ० घा० पहि० १ पाद में
मी० पू० भा० १	पू० भा० चतुर्थ पाद वाला पू० पा० उ० भा० उ० पा० रो० ३ पादों में ।
मी० उ० मा०	उ० भा० के प्रथम चतुर्थ पाद वाला उ० फा० उ० भा० पिङ्ग ३ पादों में उ० पा० पिङ्ग ३ पादों में

मी० उ० भा०	उ० भा० के द्वितीय तृतीय पाद वाला रो० प्रथम पाद आर्द्र उ० फा० पिङ्गले ३ पादों में ।
मी० रेव० २	रेवती पहिले २ पाद वाला पाद भिन्न मृग० पहिले २ पाद पुष्य में ।
मी० रेव० २	रेव० पिङ्ग० २ पाद वाला मृग० पिङ्ग० २ पाद- ह० पुन० पुष्य० पू० पा० आर्द्रा में ।

नाम करणविधान और सूचना

असल में वर्ग वर्णादि विचार में नामकरण होता है उस को आल-स्यनश विद्वान् न देख कर केवल उसी नक्षत्र के पाद भेद पर बनता नाम रख देते हैं यदि नहीं बनता तो अशुभ नाम लिख देते हैं । अतः हमने पूर्व विद्वानों से संमत यह सारिणी प्रकाशित कर दी है इस में रीति यह है, जिस नक्षत्र का जन्म घर का हो उस की पंक्ति में लिखे नक्षत्रों में कन्या का नाम धारण करना उस समय उस नाम पर शुद्धि का विचार करना यह सारणी बहुत करके शुद्ध की गई है तो भी किसी स्थान में अशुद्धि रह गई होतो शुद्ध करलेना इसमें शेष देखना यह होगा—वर्गवैर और षट्टक का ध्यान करना—किसी २ स्थान पर संदेह है आक्षण के लिये नाक्षत्रिक वर्ण विचार की आवश्यकता नहीं—

कन्या केलिये शुक्ल १।३।६।१० शुभ्रूजा

४।८।१२ शुभः नेष्टः

शेष २।५।७।९।११ शुभः श्रेष्ठः



अथ शुद्धि पत्रम्

पं०	शुद्धम्	शुद्धम्	पं०	पं०	अशुद्धम्	शुद्धम्
५	वरपिता	वर	६०	७	मार्ज	मार्ज
५	सवितु	सवित	६१	२३	जग	जगा
११	सङ्गु	सङ्ग	६३	१३	साध	साध
२०	फल	फल	६३	१९	इस	इस
२०	मिरास	निरास	६३	२३	खर्च	खर्च
११	यमि	यमि	६४	२१	चित्रिष्ट	चित्रिष्ट
१२	सम्प्री	सम्प्री	६६	३	इव	इव
१३	रुपा	रुपा	६८	१४	मार्ज	मार्ज
१४	देव	देव	७२	६	इव	अर्थात्
१४	विश	विश	७३	७	इव	इव